

ज्यो.पं.प्राणनाथ त्रिपाठिशर्मणा संस्थापितम्

नगनगाश्रनेत्र २०७७ मितविक्रमाब्दस्य नेपालदेशीयम्

नेपालसर्वकारः विभागाधिकारमिति निर्धारितः फलितः नपवर्गः विस्तारितः

हिमाल पञ्चाङ्गम्

राजा-बुधः

मन्त्री-चन्द्रः



पञ्चाङ्गकर्ता-

पं.प्राणनाथतनुज पद्मनाभत्रिपाठि
सि.ज्यो.आचार्य पोखरा अर्घौ
पोखरा म.न.पा.-२६ बुढीबजार,
कास्की, गण्डकी प्रदेश, नेपाल
का.म.न.पा.-३२, कोटेश्वर
काठमाण्डौ, नेपाल
फो.नं. ०१-४१०००४२

श्रद्धापुष्पम्

येनाऽहं बहुपाठितोऽनवरतं त्रिस्कन्धकं ज्योतिष-
पञ्चाङ्गं प्रचलत्यदो बहुदिनाद्येनैव संस्थापितम् ।
स्वयति पितरि प्रसिद्धगणके श्री प्राणनाथाभिधे
श्रद्धापुष्पसमर्पणं प्रकृते श्री पद्मनाभः सुतः ॥

श्रीपद्मनाभ तनुजः

डा. विश्वनाथत्रिपाठिफलितसिद्धान्त
ज्योतिषाचार्येण-सम्पादितम् ।
डा. सन्तोषत्रिपाठिशर्मणा-प्रकाशितम् ।

श्रीशालिवाहनीयशकः १९४२

ईसवीय सन् २०२०-२१

प्रमादीनाम संवत्सरः ४७

श्रीनेपालसंवत् १९४०-४१

सृष्टितोगताब्दाः १९५५८८५१२१

कलेर्गताब्दाः ५१२१

पञ्चाङ्ग स्थापिताब्दाः ६७



पोखरा म.न.पा.-२६, अर्घौकालिकास्थान निवासी स्व.पं.प्राणनाथ-तनुज-पं.पद्मनाभत्रिपाठिशर्मणा विरचितम्

सूचनाः पञ्चाङ्ग खरिदगर्दा यसमा टाँसिएको सरस्वतीको चित्र भएको बहुरङ्गी होलोग्राम स्टिकर अवश्य हेर्नुहोला । →

मूल्य रु.८५१-

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. ११४० वैशाखकृष्णपक्षः (चौलागा) पा. मू. पूषा. उषा. श्र. अश्वि. (अप्रैल ४ सन् २०२०) उत्तरायणं, वसन्तर्तुः, प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | हजेसम | न. | घ.प. | हजेसम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगाः | च.रा. | घ.प. | हजेसम | दिनमान | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादौ) | गतोत्क्रम ग्रह-संज्ञा (बजेमा) |
|----|-----|-----|-------|-------|-----|-------|-------|------|-------|----|-------|--------|-------------|-------|-------|--------|----------|--|-----|--|-------------------------------|
| १ | सो. | ६ | ४०।२२ | २१.५२ | मू. | ४६।३० | ०.१९ | प | ४६।१५ | ग | ११।३२ | लम्ब | धनु | ३१।४९ | ५.४३ | १८.२७ | १३ | म. ४०।२२ उ. मेघेऽर्कः ४२।४२, नववर्षारम्भः, वैशाखसंक्रान्तिः, १ अश्विन्या १ सूर्यः २२.४८ | | | |
| २ | मं. | ७ | ३८।५६ | २१.१७ | पू. | ४६।५५ | ०.२८ | शि | ४२।२८ | भ | ११।३१ | मित्र | धनु | ३१।५३ | ५.४२ | १८.२८ | १४ | म. १।३१ या., भ. पु. महाकालीमहालक्ष्मीया., भ. पु. टिमीबालकुमारीयात्रा, २ श्रवणे २ भौमः २५.१ | | | |
| ३ | बु. | ८ | ३८।४४ | २१.११ | उ | ४८।३४ | १.०७ | सि | ३९।४१ | बा | ८।४१ | वज्र | २१।५६=६.३५ | ३१।५७ | ५.४१ | १८.२८ | १५ | बुधाष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, भ. पु. ब्रम्हाणीयात्रा, ३ रेवत्या वृधः २१.४८ | | | |
| ४ | व. | ९ | ३९।४९ | २१.३६ | श्र | ५१।२७ | २.१५ | सा | ३७।५४ | तै | ९।०८ | ध्वज | मकर | ३२।०१ | ५.४० | १८.२९ | १६ | म. पु. छुमागणेशयात्रा, १ ध. प. प्रवृत्तिः २३।२२, दक्षिणएशियाली ४ पूर्वास्तो वृधः १०.४० | | | |
| ५ | श. | १० | ४२।०९ | २२.३१ | घ | ५४।३२ | ३.२२ | श | ३७।०५ | व | १०।५१ | धाता | २३।२२=१५.४० | ३२।०५ | ५.३९ | १८.२९ | १७ | म. पु. १०।५१ उ. ४२।०९ या., भ. क. पुर. भैरवभद्रकाली रुथयात्रा, ५ अश्विन्या २ सूर्यः ८.३७ | | | |
| ६ | श. | ११ | ४५।३७ | २३.५३ | श | ६०।०० | समस्त | श | ३७।१० | ब | १३।४६ | आनन्द | कम्म | ३२।०९ | ५.३८ | १८.३० | १८ | वसुधैव कुटुम्बकम्, ६ अश्विन्या ३ सूर्यः ०.४७ | | | |
| ७ | आ. | १२ | ५०।०० | १.३७ | श | ०।४४ | ५.५५ | ब | ३८।०० | को | १७।४४ | रश्मि | ५०।०७=१.४० | ३२।१३ | ५.३७ | १८.३० | १९ | वि. पु. ०।४४ उ. ५०।०० या., वृषेऽर्कः २१।५५ (१४.७ बजे), ७ अश्विन्या ४ सूर्यः १८.३६ | | | |
| ८ | सो. | १३ | ५५।०० | ३.३६ | पू. | ६।४२ | ८.१७ | ए | ३९।२० | ग | २३।२८ | मुसल | मीन | ३२।१६ | ५.३६ | १८.३१ | २० | म. ५५।०० उ. सोमप्रदोषव्रतं, छन्ददिवसः, ११ अश्विन्या ५ सूर्यः ४.४६ | | | |
| ९ | मं. | १४ | ६०।०० | समस्त | उ | १३।११ | १०.५२ | वै | ४०।५६ | भ | २७।३८ | सिद्धि | मीन | ३२।२० | ५.३५ | १८.३१ | २१ | म. २७।३८ या., मातातिथ्यष्टपूजा, १२ अश्विन्या ६ सूर्यः ४.४६ | | | |
| १० | ब. | १५ | ०।५६ | ५.४१ | रे | १९।४६ | १३.२९ | वि | ४२।२७ | च | ३२।४८ | उत्पात | १९।४६=१३.२९ | ३२।२४ | ५.३४ | १८.३२ | २२ | दर्शश्चादौ, निशीगाने, घ. प. निवृत्तिः १९।४६, १३ अश्विन्या ७ सूर्यः ४.४६ | | | |
| ११ | व. | ३० | ५।५६ | ७.४० | अ | २६।०० | १५.५७ | प्री | ४३।३६ | कि | ३७।३२ | मानस | मेघ | ३२।२८ | ५.३३ | १८.३३ | २३ | स्नानदानादी अमावास्या, मातातीर्थस्नानं, आमाको मुखहेतुः, राशिप्रवेशः १ सू. १ | | | |

वैशाखमासे नियमाः वैशाखमा एक भक्त वा नक्त अयाचित कृते नियमले भोजन, प्रातः स्नानदान, पिपल दर्शन-पूजन, प्रदक्षिणा, जलापण, गौसेवा गर्नाले पापनाश भै कुलको उद्धार हुन्छ । **स्नानमन्त्रः** वैशाख सकलमास मेघसकमणेरवे । प्रातः सन्तियम स्नास्ये प्रीयता मधुसूदन ॥ मधुसूतु प्रसादेन ब्रह्मणानामनुप्राप्त । निविज्जमस्तु मे पुण्य वैशाखस्नानमन्त्रहम् ॥ वैशाखे मेषगे भानौ सूर्य मधुसूदन । प्रातः स्नानेन मे नाथ फलदो भव पापहन् ॥ अर्घ्य दिने मन्त्रः-वैशाखे मेषगे भानौ प्रातस्नान परायणः अर्घ्यान्तेऽहं प्रदास्यामि गुहाण मधुसूदन ॥ कृष्णपञ्चमी औसीलाई मातातीर्थ औसीमातु सम्मान दिवस । अनिच्छा यस दिनमा आमा हुनेहरूले खानपान बस्न-आभूषण आदिद्वारा आमालाई प्रसन्न पार्नु, आमा नहुनेहरूले सम्भव भए मातातीर्थ कुण्ड नभए कुनै पवित्र तीर्थ वा नदीमा स्नान गरी माताको नाममा तर्पण, श्राद्धादि गरेर यथासम्भव ब्राम्हण भोजन दान आदिद्वारा ब्राम्हणलाई बुसी तुल्याउनाले मातृरूप भोजन हुन्छ भन्ने मान्यता छ । कुनै पनि अमावास्याको रात्रिमा भोजन नगर्नु, उत्तमः- दश जन्मानि गृहध्वज द्वादशी जन्म शुकर । सप्तजन्मानि श्वानच च त्यमायां निशिमाजनात् । ततः बाबुआना हुपहुकले औसी बाबुपर्व ।

अथ भूकम्पलक्षणफलम्- भूकम्प समये कर्क, मकर, मीन नरनेष कुर्मचलति फल-भरणम् । मिथुन, सिंह, तुला लगनेष सपञ्चलति फल- अर्थनिकालः । कुम्भ, धनु, कन्या लगनेष पृथ्वी चलति फल- समर्थाय । मेष, वृश्चिक, वृष लगनेष हरिस्तचलति फल- कल्याणदायकम् । पृथ्वीको आन्तरिक संरचना अत्यन्तै जटिल प्रकारको छ, यसै संरचनाको व्यवस्थामा केही परि वर्तन हुँदा भूमिको बाहिरी संरचनामा समेत प्रतिक्रिया भई भूमि कम्पमान हुन्छ, जसलाई सामान्य भाषामा भूकम्प भन्दछन् । यसको अन्तस्तलमा अनेक क्रियाकलापहरू भइर हुन्छन् तथा यसको गर्भमा अनेक खनिज र विस्फोटक चीजहरू पनि छन् तिनबाट ग्यास पैदा भएर त्यो ग्यास बाहिर निस्कन लाग्दा पृथ्वी फाटेर अत्यन्त तातो लावा निस्कन्छ, जसलाई ज्वालामुखी भनिन्छ जसको जोडले पनि पृथ्वी कम्प हुन्छ । यो कुनै गणितबाट आउने र गृहबलले हुने होइन । यो एक उत्पात हो । त्यस्तो उत्पात भए पछि ३ दिनसम्मको समय अशुद्ध हुन्छ, शुभकार्य गर्नुहुँदैन । यो वचन देवद विजोद भन्ने ग्रन्थमा उल्लेख गरिएको छ ।

सिंहार्कगोप्रसव नारदः-भानौ सिंहगते जैव यस्य गौ संप्रसूयते । भरणतस्य निर्दिष्ट षड्भिर्मासैः वसःशयः । सिंह राशिमा सूर्य भएका समयमा व्यापकी गईलाई विधिपूर्वक पूजा गरी दान गर्नुपर्दछ । वैदिक सनातन धर्म- संस्कृति र परम्परासम्बद्ध कुनै पनि समस्या भएमा विविध विधा र विषयका विद्वानहरू सलग्न सनातन विद्वत् परिषद् नेपाललाई सम्मन्त्रहोस् । सम्पर्कः- ९८५११७१३० ९८५१००५९६३ ९८४१४३९६०९

| | | |
|-----|--------------|--------|
| १ | वैशाख १ सोम | ४२।४२ |
| सू. | ०।०।०।० | ५८।४३ |
| मं. | १।१२।३२।२३ | ४०।६ |
| बु. | १।११।४।५।३९ | १०८।१ |
| वृ. | १।३।४।३।३७ | ६।१० |
| श. | १।१३।१५।४० | ४२।१७ |
| रा. | १।४।३।१।३ | २।३२ |
| रा. | २।७।५।४।४२ | ३।११ |
| २ | वैशाख ८ सोम | ४३।० |
| सू. | ०।६।४०।१।४ | ५८।२८ |
| मं. | १।१७।१७।७।८ | ३९।५४ |
| बु. | १।१२।७।४।०।८ | ११।१२७ |
| वृ. | १।४।२।२।२६ | ४।४९ |
| श. | १।१७।४।८।१ | ३३।३६ |
| रा. | १।४।३।३।३ | १।४८ |
| रा. | २।७।३।३।३ | ३।११ |

पापाशाः शनि-११, राहु-९-कंतु-३, १ सू. २ मं. २, ५ सू. २, ७ मं. ३, ८ सू. ३, ११ सू. ४, वक्रमार्गविवास्तः सं. मा. उ., बु. मा. ४ अ. पू., वृ. मा. उ., श. मा. उ. प., श. मा. उ.

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. ११४० वैशाखशुक्लपक्षः (बछलाश्व) पा.क.मु.आ.पुन.९म.वि.(अप्रैल ४/मई ५ सन् २०२०) उत्तरायणं, वसन्तर्तुः, प्रमादीनामकः संवत्सरः

| क्र. वा. ति. | घ.प. | वर्जसम् | न. | घ.प. | वर्जसम् | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगः | च.रा.प्र.प.वर्जसम् | विनाम | सूत्रव्य | सूत्रव्य | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (धृत्यादी) | गतेष्व ग्रह-सञ्चार (वर्जसः) |
|--------------|------|---------|------|------|---------|------|------|------|------|------|--------------------|-----------|----------|----------|---|---|------------------------------|
| १३ शु. | १ | १३८ | १२४ | भ | ३१३९ | १८९ | आ | ४४८ | वा | ४१८ | मुद्गर | ४७४६=०३९ | ३२३९ | ५३३ | १८३३ | १ चन्द्रोदयः, ल.पु. श्रीमत्येन्द्रनाथरथारोहण (वृण्द्य.रथयुतद्वगु), ११ श्रवणः १ मीमः २३२ | १४ भरण्याः १ मीमः १५६ |
| १३ शु. | २ | १३४ | १०४५ | क | ३६०६ | १५८ | सौ | ४३५२ | तै | ४४१९ | ध्वज | वृष | ३२३५ | ५३२ | १८३४ | २ त्रिपु. १३ शेषा. श्रीपरशुरामजयन्ती, १ युगादिआह, ६ | १५ भरण्याः १ मीमः ३३३ |
| १४ आ. | ३ | १५२२ | ११४० | रो | ३९१९ | २९९९ | शो | ४२४० | व | ४६२ | घाता | वृष | ३२३९ | ५३९ | १८३४ | ३ म ४६२ उ, अस्यतृतीया, धर्मघटादिदान, त्रेतायुगादि, १ | १६ धनिः १ मीमः २४० |
| १५ सौ. | ४ | १६२५ | १२०४ | मु | ४१४२ | २२९० | अ | ४०२८ | ब | ४६२६ | आनन्द | १०४४७=९४९ | ३२४२ | ५३० | १८३५ | ४ म १६२५ या, ल.पु. श्रीमत्येन्द्रनाथरथयात्रारम्भ, २ (मई ५ ता. ३९) | १८ भरण्याः २ मीमः १३६ |
| १६ म. | ५ | १६९९ | ११५७ | आ | ४२३७ | २२३२ | सु | ३७१६ | कौ | ४५४४ | चर | मिथुन | ३२४६ | ५२९ | १८३५ | ५ आद्यश्रीशंकराचार्य एवं श्रीरामानुजाचार्यजयन्ती, | २२ भरण्याः ३ मीमः १२९ |
| १७ बु. | ६ | १७४२ | ११२९ | पुन. | ४२२२ | २२२५ | धु | ३३०६ | ग | ४३४० | गद | २७३३=१६२९ | ३२४९ | ५२८ | १८३६ | ६ श्रीगङ्गोत्पत्ति-श्रीगङ्गासप्तमी, १ शिवपार्वतीविवाहोत्सवः, | २४ धनिः २ मीमः २०४ |
| १८ व. | ७ | १८१४ | १०९७ | ति | ४१०३ | २९५३ | शु | २६०४ | न | ४०२९ | शुभ | कर्कट | ३२५३ | ५२७ | १८३६ | ७ म. १२४ उ ४०२९ या, ५ लूभसहालक्ष्मीसैरव्या कोटेश्वरमहादेव ९ | २४ कृतिः १ मीमः ५४७ |
| १९ शु. | ८ | १८२५ | १०९७ | श्ले | ३६४८ | २०५८ | न | २२१४ | बा | ३६१५ | मृत्यु | ३६४८=२०५८ | ३२५६ | ५२६ | १८३७ | ८ अष्टमीव्रतं गो का पू, श्रीपशुपतेर्देवनापणं, श्रीमद्विदवसः, २ | २४ मृगशुक्रः १०४९ |
| २० शु. | ९ | १८३६ | १०९७ | म | ३५४८ | १९४५ | व | १५१४ | तै | ३१२४ | सिंह | ३३०० | ५२६ | १८३८ | ९ श्रीसीतल व्रतं, श्रीवत्सेप्रसवतन्त्रतादिवसः, त्रिपु. ५३२ उ, | २४ भरण्याः ४ मीमः २३६ | |
| २१ आ. | १० | १८४७ | १०९७ | पू | ३४४८ | १८४८ | धु | ८४५५ | व | २५४७ | छत्र | ४६१६=२३५५ | ३३०३ | ५२५ | १८३८ | १० म. २५४७ उ ५३२ या, विश्वामोहिनी एकादशीव्रतं, ४ | २४ वृषः १११ |
| २२ सौ. | ११ | १८५८ | १०९७ | उ | २२६६ | १६४३ | व्या | ११३३ | ब | २००५ | श्रीवत्स | कन्या | ३३०६ | ५२४ | १८३८ | ११ वैष्णवाणां एकादशीव्रतं, कोकाकौशिकीसंगमे मत्स्यदर्शनम्, | २४ मृगः ४४७ मूलेः ८८ |
| २३ म. | १२ | १८६९ | १०९७ | ह | २४०८ | १५०२ | व | ४६०३ | कौ | १४०० | सौम्य | ५२२=२९२ | ३३१० | ५२३ | १८३९ | १२ श्रीमप्रबोधव्रतम्, १ स्याङ्गुलसर्घांआलमदेवीपूजा, | १५३९ |
| २४ बु. | १३ | १८८० | १०९७ | चि | २००९ | १९२३ | सि | ३६२८ | ग | ७५५ | काल | तुला | ३३१३ | ५२३ | १८४० | १३ म. ३४१६ उ, श्रीनृसंहजयन्ती, किरांतसमाजसुधारदिवसः, १ | वक्रमार्गाद्यालसः मं. मा. उ. |
| २५ व. | १४ | १८९१ | १०९७ | स्वा | १६१० | १९५० | व्य | ३१०९ | म | ३१३२ | स्थिर | ५८३२=४४७ | ३३१६ | ५२२ | १८४० | १४ म. २०५ या, पूर्णिमाव्रतं, चण्डीपूर्णिमा, गौतमबुद्धजयन्ती, वैशाखान्त ९ | वु. मा. उ. पू. वु. मा. उ. |

यस हिमाल पञ्चांगको सक्षिप्त र सजिलो संस्करण पनि प्रकाशित भएको छ।

वैशाखशुक्लतीर्थीयामा कर्तव्य विचारः यसमा स्नानं, दानं
जप-तप जो गरिन्छ त्यसको अक्षयफल हुन्छ। यसैले अक्षय
तृतीया नाम रहेको हो। पितृतृपण, युगादि श्राद्ध, यवनर्चन, यवदान
यव(जौ) को सातु व्यञ्जनादि तथा गर्मीयामा हितकारी वस्तुहरू
जस्तै छात्रा, जप्ता, पड्डा इत्यादि दान गर्नाले स्वर्ग मिलन्छ।
यस दिनमा जौको सातु, चीनी, शक्कर, सर्वत आदि जलपूजन
माटाको घडा, गाग्री, अखरा आदि दान गर्ने विधान छ। **धर्मपटो**
दानमन्त्रः-युष धर्मपटो दत्तो ब्रम्हा विष्णु शिवात्मकः।
अस्यप्रदानात्कल्प्यन्तु पितरौ प्रप्रितामहाः।
गन्धोदकं तिलैर्मिश्रं सान्णकुम्भं फलाञ्जितम्।
पितृभ्यः सम्प्रदास्यामि अक्षयं भवतु सदा

सूचना:- ज्यातिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरखा, संस्कृतभाषा एवं जन्मपत्री (चिना) वनाउने सफ्टवेयर **स्काइ मिजनका** दुई संस्करण (लाइट र प्रोफेशनल) देशभरी डेलिभरी सुविधासहित उपलब्ध छुन। सम्पर्क:-

पूर्वीय दर्शन विद्यापीठ, दिल्लीबजार,
काठमाण्डौ, फोन-०१-४४३४९०९,
९८४१२८७७५७

e-mail:

info@orientalphilosophy.edu.np

राशिप्रवेशः २५ वृ. २

९ समाप्तिः (स्वायंपूर्णि), कूर्मजयन्ती, गोरखनाथजयन्ती, बन्दिक्पुरे चण्डेश्वरी रथयात्रा, घाटुत्पत्यविसर्जनं, उभौलीपर्व, लपु, गोटीखेल वैतरणीधामस्नानम्, श्रीतीर्थजयन्ती

| | | | | | | |
|-----|--------------|--------|--|-----|--------------|--------|
| १ | वैशाख १५ सोम | ४३१६ | | ४ | वैशाख २२ सोम | ४३१७ |
| सु. | ०१०३०६४२ | ५५८१२ | | सु. | ०१०१२१२७ | ५५७५८ |
| मं. | १२२२१५५ | ३१४१० | | मं. | १२१६४३१२० | ३११२२ |
| बु. | ०९१५३४३४ | ११२१२० | | बु. | ०२४३४३४६६ | ११०४३४ |
| व. | ११४५२२१५ | ३०४४ | | व. | १५५१३०४ | २१२४ |
| श | १२१११२१२२ | २२१८ | | श | १२१३०६४२ | ५१२० |
| रा | १५३३१० | ११६ | | रा | १५५१३६० | ०१६ |
| श | २०७१०१९ | ३११ | | श | २०६४८८६६ | ३०११ |

हिमालय २७ पञ्चाङ्ग

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. ११४० ज्येष्ठकृष्णपक्षः (बछलागा) पा. वि. १७ म. उषा अ. ध. क. (मई ५ सन् २०२० उत्तरायणं, वसन्तर्तुः, ग्रीष्मर्तुः, प्रमादीनामकः संवत्सरः)

| ग. बा. वि. घ.प. वक्रोसम न. घ.प. वक्रोसम यो. घ.प. क. घ.प. योगा: च.प. व.प. वक्रोसम विनयन सुर्वय्य सुर्वय्य ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादी) | गतेक्रम ग्रह-संख्या (वक्रोसम) | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--|---|-------------------------------|-------|---------|------|-------|---------|------|-------|----|-------|--------|-----------|------|---------|-------|----------|--|--------------------------|--|--|
| ग. | बा. | वि. | घ.प. | वक्रोसम | न. | घ.प. | वक्रोसम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.प. | व.प. | वक्रोसम | विनयन | सुर्वय्य | सुर्वय्य | ता. | | |
| १६ | श. | २ | २४१०९ | १४५४ | वि | १२४६ | १०२७ | व | २४१५४ | तै | ५१३८ | मातङ्ग | वृश्चिक | ३३१९ | ५२ | १०२ | ८ | कानूनदिवसः, विश्वरेडकसदिवसः श्री शठकोपस्यीजमयी | २६ वक्रोसकः २५३४ | | |
| १७ | श. | २ | १९१२९ | १३०८ | मनु | ९०९२ | ९२० | प | १७१४४ | व | ४७३० | अमृत | वृश्चिक | ३३१२ | ५२ | १०२ | ९ | २७ घ ३ कुम्भे बीमः २०३३ | २९ कृत्तिकायासूर्यः १०६२ | | |
| १८ | आ. | २ | १५४७७ | ११३९ | ज्ये | १०२२ | ८३३ | शि | १२१४४ | व | ४४१८ | काण | दरिद्र | ३३२६ | ५२ | १०२ | १० | २९ पुन. रोहिण्या शुक्रः ६९० | | | |
| १९ | सो. | ४ | १३०६७ | १०३३ | मू | ७०३ | ८०८ | सि | ७२३ | कौ | ४२०९ | लुम्ब | धनु | ३३२९ | ५२ | १०२ | ११ | ३१ रोहिण्या वृधः १४५८ | | | |
| २० | मं. | ५ | ११३२२ | ९५५ | पू | ७११ | ८११ | सा | ३२५ | ग | ४११२ | मित्र | २२२४=१४५६ | ३३३२ | ५२ | १०२ | १२ | १ कु २ वृषके: २१५४ | | | |
| २१ | बु. | ६ | १११३३ | ९४७ | उ | ८३१ | ८४२ | शु | २३६ | भ | ४१११ | मृदगर | मकर | ३३३४ | ५२ | १०२ | १३ | १ शनि ४ बीमः २१७ | | | |
| २२ | वृ. | ७ | १२०९९ | १००९ | अ | ११०६ | ९४४ | ब्र | ४७२८ | जा | ४३०५ | ध्वज | ४२४१=२२२६ | ३३३७ | ५२ | १०२ | १४ | ३ वक्रो: गुरु: ६५३ | | | |
| २३ | श. | ८ | १४२११ | १०११ | घ | १४५४ | १११५ | ऐ | ४७२५ | तै | ४५५२ | धाता | कुम्भ | ३३४० | ५२ | १०२ | १५ | ५ कृत्तिकायासूर्यः ८३२ | | | |
| २४ | श. | ९ | १७४११ | १२२१ | श | १९४९ | १३१२ | वै | ५८०८ | व | ४९४२ | आनन्द | कुम्भ | ३३४३ | ५२ | १०२ | १६ | ६ शत १ बीमः २२३४ | | | |
| २५ | आ. | १० | २२५६६ | १४०२ | पू | २५३६ | १५३० | वि | ५९२६ | व | ५४१९ | चर | ९६८=५४ | ३३४६ | ५२ | १०२ | १७ | ८ कृत्तिकायासूर्यः १९५८ | | | |
| २६ | सं. | ११ | २६१९९ | १५५९ | उ | ३१५९ | १८०३ | प्री | ६०१०० | कौ | ५९१२ | गद | मीन | ३३४८ | ५२ | १०२ | १८ | ८ मृगशीर्षवृधः १०५२ | | | |
| २७ | श. | १२ | ३१५६७ | १८०९ | रे | ३८५३ | २०४० | प्री | १०४४ | ग | ६०१०० | शुभ | ३८५३=२०४० | ३३५१ | ५२ | १०२ | १९ | १० घ प निवृत्तिः ३८३३ | | | |
| २८ | बु. | १३ | ३६५०० | १९५८ | अ | ४४५३ | २३१२ | आ | १०४१ | ग | ६०१०० | मेष | मेष | ३३५३ | ५२ | १०२ | २० | २० म १५०२, प्रदोषव्रतं, मिथुनेदृश्याकः २४१६१४५५७७जे, | | | |
| २९ | वृ. | १४ | ४१०८० | २९४१ | भ | ५०१३६ | १२८ | सौ | ३१५९ | भ | ९०५८ | पय | मेष | ३३५६ | ५२ | १०२ | २१ | २१ म १५०२, प्रदोषव्रतं, मिथुनेदृश्याकः २४१६१४५५७७जे, | | | |
| ३० | शु. | ३० | ४४१११ | २३०२ | क | ५५१३३ | ३२३ | शो | ४४४४ | च | १२५८ | छत्र | ६५४=७५९ | ३३५८ | ५२ | १०२ | २२ | २२ म १५०२, प्रदोषव्रतं, मिथुनेदृश्याकः २४१६१४५५७७जे, | | | |
| वटसावित्रीव्रतः - वैद्यधरोप निवारण तथा सोभाग्य प्राप्ति निमित्त गतेन यो व्रत ज्येष्ठकृष्ण त्रयोदशीवाट धारम्भ भद्र अमावास्यामा पुरा हुन्छ । यस तीन दिनको व्रतको पहिलो दिनमा - बतालो महिलाले पूजास्थल (वटवृक्ष तल)-मा पूर्ण आसन आचमन गरी प्राथमिकतः गोदान गर्ने, विधिवत् प्रतिज्ञा संकल्प गरी दीप,कलश,गणेश,शङ्ख,घण्ट पुजनपूर्वक अर्घ्य थाने, सावित्री सत्यवानको मूर्ति बनाई पूजा गरी वरको वृक्षलाई काँचो धागाले एकसय आठ वा सात वा पाँचपटक बेरी प्रदक्षिणा गरी यो स्तोत्र पाठ गर्नु वटमूले स्थितो ब्रम्हा वटमध्ये जनार्दन । वटाय तु शिवो देवो सावित्री वटसंश्रिता ॥ सम्भव भए रात्रि जागरण गर्ने दोस्रो दिनमा - बतालोले पहिलो दिनमा जस्तै पूजा गरी अर्घ्याचित (धनु वा मानु नहुने) हविष्यानो भोजन गर्ने । तेस्रो दिनमा - ब्रती नारीले मध्याह्नकालमा पूजा धलोलाई गाईका गोमराले लिजे र बालवामाथि तामाको कलश त्यसमाथि नाडलो थाने, तालामा शङ्ख पहेंलो कपडा ओछ्याएर अष्टदल बनाई सन्धान्त्य राखी सावित्री प्रतिमा राखी विधिपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा षोडशोपचार पूजा गरी प्रायनाथी मन्दिरुले गये- आदित्यवर्णा धर्मना सलामाला करायाम् । ब्रम्हणा सहितदेवी सावित्रीलोकमतरम् ॥ सत्यवर्त धर्मरानं वट बाहवाम्यम्ह ॥ ओंकार पूर्विकेदेवी वीणापुस्तकधारिणी । वेदमार्तनमस्तुर्वर्ष्य अवैद्यध्वं प्रयच्छ मे ॥ यसपछि सावित्रीको अष्टरा पूजा, नाम पूजा, धूप दीप, नैवेद्य तामा सौम्य द्रव्यादि चढाएर कथा सुन्ने वा भन्ने । ब्रम्हणलाई दक्षिणा आदि द्वारा प्रसन्न तुल्याई सायंकालमा अरुन्धतीलाई अर्घ्य दिने । सन्नेले रात्रिमा गीत वाञ्छादिसहित भजन गरी जागरण गर्ने । | ३९. श.२७. १९. १ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं १९४० ज्येष्ठशुक्लपक्षः (तछलाश्व) पा. पु. न. स्वा. (मई ५/जून ६ सन् २०२०) उत्तरायण, ग्रीष्मर्तुः, प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | भा. | ति. | घ.प. | वजेसम | न. | घ.प. | वजेसम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | घ.प. | घ.प. | वजेसम | दिनमान | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादां) | गतेक्रम ग्रह-संज्ञार (बजेमा) |
|----|-----|-----|--------|-------|------|--------|-------|------|--------|-----|--------|----------|---------------|-------|-------|--------|----------|-----------|-----|---|------------------------------|
| १० | श. | १ | ४६।४६ | २३.५५ | रो | ५९।०३ | ४.५० | अ | ४।४२ | किं | १५।४८ | श्रीवत्स | वृष | ३४।०९ | ५.१३ | १८.४९ | २३ | २३ | २३ | २३ | ११ शतमे २ मीमः १८ |
| ११ | आ. | २ | ४७।४६ | ०.१९ | म | ६०।०० | समस्त | सु | ३।४५ | वा | १७।२६ | सौम्य | ३०।२६=१७.२३ | ३४।०३ | ५.१३ | १८.५० | २४ | २४ | २४ | २४ | १२ रोहिण्यासूर्यः ७.३२ |
| १२ | सो. | ३ | ४७।३० | ०.१२ | म | १।११ | ५.४९ | धु | १।४५ | तै | १७।४८ | आनन्द | मिथुन | ३४।०५ | ५.१२ | १८.५० | २५ | २५ | २५ | २५ | १२ म ३ मिथुनेवृधः १९.५७ |
| १३ | मं. | ४ | ४५।४९ | २३.३६ | आ | २।४२ | ६.१७ | ग | ५.४५ | व | १६।४४ | चर | ४।७४७=०.१९ | ३४।०७ | ५.१२ | १८.५१ | २६ | २६ | २६ | २६ | १६ शतमे ३ मीमः ५.२ |
| १४ | बु. | ५ | ४३।९९ | २२.३१ | पु | २।४१ | ६.१६ | व | ५.०।०६ | व | १४।४८ | गद | ककट | ३४।०९ | ५.१२ | १८.५१ | २७ | २७ | २७ | २७ | १७ शतमे ३ मीमः २०.२६ |
| १५ | व. | ६ | ३९।३९ | २१.०३ | ति | ५.१३ | ५.५९ | धु | ४.४।२७ | कौ | ११।३६ | शभ | ५.१३०=४.५९ | ३४।११ | ५.११ | १८.५२ | २८ | २८ | २८ | २८ | १७ अ. शुकः ०.१८ |
| १६ | शु. | ७ | ३५।०६ | १९.१४ | म | ५.६।३८ | ३.५० | व्या | ३.८।०८ | ग | ७।२९ | काण | सिंह | ३४।१३ | ५.११ | १८.५२ | २९ | २९ | २९ | २९ | १९ रोहिण्यासूर्यः ७.२ |
| १७ | श. | ८ | २९।४३ | १७.०८ | प | ५.३।०९ | २.२६ | ह | ३.१।१५ | म | ५.१३ | लम्ब | सिंह | ३४।१५ | ५.११ | १८.५३ | ३० | ३० | ३० | ३० | २२ शतमे ४ मीमः १०.३२ |
| १८ | आ. | ९ | २४।०९ | १४.५० | उ | ४.९।१५ | ०.५२ | व | २.३।५८ | तै | ५.१।०८ | मित्र | ७.१३=८.४ | ३४।१७ | ५.११ | १८.५३ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | २२ रोहिण्यासूर्यः १८.५८ |
| १९ | सो. | १० | १८।०५ | १२.२४ | ह | ४.५।०६ | २३.१३ | सि | १.६।२५ | व | ४.५।०० | वज्र | कन्या | ३४।१९ | ५.१० | १८.५४ | १ | १ | १ | १ | २२ शतमे ४ मीमः १०.३२ |
| २० | मं. | ११ | ११।५४ | ९.५६ | चि | ४.०।४६ | २१.३३ | व्या | ८।४५ | व | ३.८।५० | ध्वाक्ष | १.१३=१.०.२२ | ३४।२० | ५.१० | १८.५४ | २ | २ | २ | २ | २२ रोहिण्यासूर्यः १८.५८ |
| २१ | बु. | १२ | ५।४९ | ७.३० | स्वा | ३.६।४९ | १९.५८ | व | ५.१।३७ | कौ | ३.२।४२ | ध्रुव | तुला | ३४।२२ | ५.१० | १८.५५ | ३ | ३ | ३ | ३ | २२ शतमे ४ मीमः १०.३२ |
| २२ | व. | १३ | ४.४४ | ५.३३ | वि | ३.३।२६ | १८.३२ | शि | ४.६।४८ | ग | २.७।१७ | प्रवृद्ध | १.९।१७=१.२.५३ | ३४।२३ | ५.१० | १८.५५ | ४ | ४ | ४ | ४ | २२ रोहिण्यासूर्यः १८.५८ |
| २३ | शु. | १४ | ५.०।०२ | १.११ | अनु | ३.०।२९ | १७.२१ | मि | ४.०।२९ | भ | २.२।१७ | रक्ष | वृश्चिक | ३४।२५ | ५.१० | १८.५६ | ५ | ५ | ५ | ५ | २२ शतमे ४ मीमः १०.३२ |

सर्वे स्तरका पाठ्यपुस्तक, विभिन्न स्टेसनरी सामग्री, पात्रो, धार्मिक पुस्तकहरूका लागि सम्भन्तहोस बुक मार्ट, गैहापाटन, पोखरा, सम्पर्क:- ९८४६३६२५००

अथ दशहरास्नानम्- ज्येष्ठशुक्ल (शुद्ध वा अधिका) प्रतिपदादौ दशमीसम्म दशहरा हन्छ, यसमा प्रातिपद अस्मय भएमा दशमीमा मात्र भए पनि गंगा नदी वा जलाशयमा स्नान गरी गंगापूजन गर्नु । तन्मन्त्रः- नमो भगवत्यै दशपापहरायै गंगायै नारायण्यै रेवत्यै शिवायै दक्षायै अमृतायै विश्वरूपिण्यै ते नमोनमः॥ नमामि गंगे तव पादपंकज सुरासुरै वदितदिव्यरूपम् । मुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं भावानुसारेण सदानराणाम् ॥ ज्येष्ठ पूर्णिमाका दिन दक्षिणासहित तिलदान गरे अश्वमेध यज्ञका समान फल मिल्ने शास्त्रमा बताइएको छ । यस पर्वमा विधिपूर्वक दशहरा स्नान गरेमा दश प्रकारका पापबाट मुक्ति पाइने मान्यता छ ती दश पाप यस प्रकार छन्-अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः । परदारोपसेवा च शारीरं विविधं स्मृतम् ॥ पाठ्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः । असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् ॥ परद्रव्येष्वभिधानं मनसातिष्ठचित्तनम् । वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्मनानसम् ॥ अर्थात् अर्काको वस्तु हरण, शास्त्रवर्जित हिंसा तथा परस्त्रीगमन यी तीन कायिक (शारीरिक) पाप हुन् । रूखो बोली, झुठो बोली, परीक्षमा (पीठपछि) कसैको कुरा काट्नु तथा निष्पयोजन कुरा गर्नु, यी चार वाचिक पाप हुन् । अर्काको धनलाई अन्यायपूर्वक लिने विचार गर्नु, अर्काको कुमलो चिताउनु र नास्तिक विचार राख्नु यी तीन मानसिक पाप हुन् ।

श्रीतुलसीपञ्चवनेनिषिद्धः- वैद्यतो च व्यतिपाते भौम भागवत भानुषु ।

पर्वद्वयो(१५/३०)च सकान्तौ द्वादश्यां सुतकद्वये ॥

| | | | | | |
|-----|---------------------|--|--------|---------------------|------------|
| ७ | ज्येष्ठ १२ सोम ४४।० | | ८ | ज्येष्ठ १९ सोम ४४।५ | |
| सु. | १।१०।३६।११ | | ५।७।२९ | सु. | १।१०।३६।११ |
| मं. | १०।१०।३५।९ | | ३८।२ | मं. | १०।१०।३५।९ |
| बु. | २०।१०।१७ | | ८५।२९ | बु. | २०।१०।१७ |
| व. | ९।१।१५।५ | | १।४७ | व. | ९।१।१५।५ |
| शु. | १।१।१५।१२ | | ४२।२५ | शु. | १।१।१५।१२ |
| श. | १।१।१५।५० | | २।३ | श. | १।१।१५।५० |
| रा. | २।१।१५।४ | | ३।११ | रा. | २।१।१५।४ |

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने सं. ११४० आषाढकृष्णपक्षः (तछलागापा. मू. उषा पूमा मू. (जून ६ सन् २०२०) उत्तरायण, ग्रीष्मर्तुः, प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | बा. | ति. | घ.प. | हजेसम् | न. | घ.प. | हजेसम् | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगः | च.प. | घ.प.=हजेसम् | दिनाम | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादौ) | गतेक्रम ग्रह-सञ्चार (बजेभा) |
|---------|-----|-----|-------|--------|------|-------|--------|------|-------|-----|-------|----------|-------------|-------------|-------|----------|-----------|---|--|-----------------------------|
| २४ | श. | १ | ४६१३ | २३:३९ | ज्ये | २८१८ | १६:२९ | सा | ३४१३३ | बा | १८०१ | मुसल | २८१८=१६:२९ | ३४१२६ | ५:१० | १८:५६ | ६ | | २४ पुनः कृति.शुक्रः १६:३३ | |
| २५ | आ. | २ | ४३१३ | २२:३१ | म | २७०३ | १५:५९ | शु | २९१३२ | तै | १४१४० | सिद्धि | घनु | ३४१२७ | ५:१० | १८:५७ | ७ | | २६ मृगे १ सूर्यः ७:०० | |
| २६ | सो. | ३ | ४११४ | २१:५० | पू | २६१४४ | १५:५५ | शु | २५१२४ | व | १२१२३ | उत्पात | ४२१२=२१:५८ | ३४१२९ | ५:०९ | १८:५७ | ८ | भ १२१२३उ ४११४१या, पूर्वोदितः शुक्रः १०:२५, | २६ पूर्वोदितःशुक्रः ९:२३ | |
| प्र. २७ | मं. | ४ | ४११२ | २१:३८ | उ | २७१४६ | १६:२० | ब्र | २२११४ | ब्र | ११११७ | मानस | मकर | ३४१३० | ५:०९ | १८:५७ | ९ | मंगल चतुर्थीव्रतम्, | २७ पूभाया १ मीम १८:०० | |
| २८ | बु. | ५ | ४१११ | २१:३७ | अ | ३०१२९ | १७:१४ | ऐ | २०१०५ | कौ | १११२६ | छत्र | मकर | ३४१३१ | ५:०९ | १८:५८ | १० | | २९ मंगशीर्षेःसूर्यः १९:७७ | |
| प्र. २९ | बु. | ६ | ४११० | २२:४६ | घ | ३३१२९ | १८:३८ | वै | १८१५६ | ग | १२१२२ | श्रीवत्स | ११४८=५:५३ | ३४१३१ | ५:०९ | १८:५८ | ११ | भ. ४४१२उ, धपंप्रवृत्तिः ११:४८, | ३१ वकी बुधः १६:३३ | |
| ३० | शु. | ७ | ४७११३ | ०:०३ | श | ३६१२१ | २०:३० | वि | १८१४३ | भ | १५१२९ | सौम्य | कुम्भ | ३४१३२ | ५:०९ | १८:५८ | १२ | भ. १५१२९या, ③ त्रिशूलयात्रा, | १ मृ ३ मिथुनेःकः ७:१९ | |
| ३१ | श. | ८ | ४११२० | १:४२ | प | ४३१४६ | २२:४४ | श्री | १९११९ | बा | १९११० | काल | २७१२=१६:२९ | ३४१३३ | ५:०९ | १८:५९ | १३ | शान्यष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, भलभल अष्टमी, देवपत्तने ④ | ३ प.अ. बुधः २२:२५ | |
| ३२ | आ. | ९ | ५६१०६ | ३:३६ | उ | ५०१३१ | ११:४४ | आ | २०१३२ | तै | २३१४० | स्थिर | मीन | ३४१३४ | ५:१० | १८:५९ | १४ | ⑤ १३१२९(२३४३३३), सूर्यग्रहणं खण्डगोलाः, चन्द्रामणियांताः, | ४ मृगे ४ सूर्यः १९:३५ | |
| ज. ३३ | सो. | १० | ६०१० | समस्त | रे | ५६१४४ | ३:५१ | सौ | २२१८ | व | २८१३७ | मातङ्ग | ५६१४४=३:५१ | ३४१३४ | ५:१० | १८:५९ | १५ | भ. २८१३उ, मिथुनेःकः १२:३३(आषाढ संक्रान्तिः), घ.प.नि. ५६१४४, ① | ६पूभाया ३ मीम १६:३३ | |
| ३४ | मं. | १० | ५८ | ५:३७ | अ | ६०१०० | समस्त | शो | २३१४८ | ब | ३३१३७ | अमृत | मेघ | ३४१३५ | ५:१० | १९:०० | १६ | भ. ११८५या, ① नक्कादिशि, | ६मागी शुक्रः २:७ | |
| ३५ | बु. | ११ | ५५१९ | ७:३३ | अ | ३०८८ | ६:२५ | अ | २५१२२ | कौ | ३६१३३ | मृत्यु | मेघ | ३४१३५ | ५:१० | १९:०० | १७ | योगिनी एकादशी व्रतम्, | पापशःशनिः११, राहु-केतुः२ | |
| प्र. ३६ | बु. | १२ | १०११४ | ९:१६ | भ | ८५९ | ८:४६ | सु | २६१०६ | ग | ४२१०४ | परा | २५१२०=१५:१८ | ३४१३५ | ५:१० | १९:०० | १८ | प्रवोषव्रतम्, | २६सू.५, २७मं.१, २९सू.६ | |
| ३७ | शु. | १३ | १३१३८ | १०:३७ | कृ | १३१५९ | १०:४६ | ध | २६११५ | भ | ४४१५५ | छत्र | वृष | ३४१३६ | ५:१० | १९:०० | १९ | भ. १३१३उ ४४१५५या, दिलाचःहेपूजा, | ३२मं.२, १सू.७, ४सू.८, ६मं.३ | |
| ३८ | श. | १४ | १५१४४ | ११:३२ | रो | १७१५४ | १२:२० | शु | २५१३० | च | ४६१३४ | श्रीवत्स | ४९१२५=०:५६ | ३४१३६ | ५:१० | १९:०१ | २० | दर्शभाद्र, निशीबाने, | वक्रमागोदयास्तः मं. मा. उ. | |
| ३९ | आ. | १० | १६१५५ | ११:५७ | मृ | २०१३६ | १३:२५ | ग | २३१४६ | कि | ४६१५८ | सौम्य | मिथुन | ३४१३६ | ५:१० | १९:०१ | २१ | स्नानदानादौ अमावास्या, हलोबाने, कर्कटदृष्ट्याः ⑥ | बु. ३१व. ३६प.प., वृ. व. उ. | |

यदि आषाढकृष्ण अष्टमी र आ शुक्ल पूर्णिमाको रातमा बादल नलागी आकाश सफा रहेमा त्यसवर्ष पानी कम पर्नेछ । आषाढ मासको स्वाती नक्षत्रमा बिजुली चम्क्यो वा वर्षा भयो भने धेरै अन्न फल्नेछ । श्रावणशुक्ल पंचमीमा बादलमात्र लागी वर्षा नभए अन्न महगो होला।श्रावणशुक्ल पूर्णिमा वा श्रावण नक्षत्रको सन्ध्याकालमा बादलमा चन्द्रोदय भएमा वा वर्षा भएमा सुभिक्ष होला । अश्विनकृष्ण अष्टमीमा बादल लागेमा वा हावा चलेमा कुनै अतिष्ठको भय रहला । बालबालिकालाई कुनै संक्रामक रोगको भय होला । अश्विनशुक्ल सप्तमी वा अष्टमीमा वर्षा भएमा समय राम्रो हुने मत पनि प्रचलित छ । वैशाखाको अन्तिम अश्विनी नक्षत्रको विनमा पानी परेमा चौमासाको अन्त्यमा सुखा पर्छ । वैशाखान्तिमा पानी परेमा वैशाख र ज्येष्ठमा पशुआहार सुलभ हुन्छ । बैशाख अष्टमी र चतुर्दशीमा पानी नपरी उत्तरी वायु चलेमा अन्न सस्तो होला ।

परदेशी प्रश्नः प्रश्न समयको तिथि, प्रहर, नक्षत्र, वारको संख्या जोडी ७ ले भाग्यदा शेष १ मा बसेको ठाउँमा, २ शेष बाटोमा, ३ शेष अर्ध बाटोमा, ४ शेष ग्राममा, ५ शेष फर्केको, ६ शेष रोगलागेको, ७ वा ० शेषमा फल शुन्य जान्छ । तिथि संख्या भन्नाले शुक्ल प्रतिपदाबाट पूर्णिमासम्म क्रमशः १, २, ... १५ तथा कृष्णप्रतिपदाबाट औसीसम्म क्रमशः १६, १७, ... ३० नक्षत्र संख्या भन्नाले अश्विनीबाट रेवतीसम्म क्रमशः १, २, ... २७ प्रहर संख्या भन्नाले दितमानको ४ भाग गरी क्रमशः १, २, ३, ४ तथा रात्रिमानका ४ भाग गरी क्रमशः ५, ६, ७, ८ प्रहर हुन्छन्।नामाधार भन्नाले नाममा रहेको अक्षरको संख्या बुझ्नुपर्दछ।

हिमाल पञ्चांग पाइले टेगला : अन्तर्राष्ट्रिय ज्योतिष धार्मिक पुस्तक तथा पत्रपत्रिका प्रकाशन केन्द्र, नेपाल, (पोखरा-२, विन्ध्यवासिनीमन्दिर उत्तरगल्ली, मो. नं. ९८५६०२०९१४, ९८५६०३०९१४)

| | | | | |
|-----|---------------------|-------|---|-----|
| ९ | ज्येष्ठ २६ सोम ४४१७ | बु.रा | १ | १० |
| सु. | १२३१५७३६ | ५७४४ | १ | सु. |
| मं. | १०१११३०६ | ३६१४१ | २ | मं. |
| बु. | २११४४१६ | ३१८ | ३ | बु. |
| व. | १४१४७५६ | ४२५ | ४ | व. |
| शु. | १८१४७५८ | ३३२३ | ५ | शु. |
| रा. | १४१४३२८ | ३२४ | ६ | रा. |
| रा. | २४१४६४३ | ३११ | ७ | रा. |

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. ११४० आषाढशुक्लपक्षः (दिल्लाश्व) पा. आ. पुन. चि. मू. पूषा उषा. (जून ६/जुलाई ७ सन् २०२०) उत्तरायण, ग्रीष्मर्तुः, प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | बा. | ति. | घ.प. | वजेसम | न. | घ.प. | वजेसम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | घ.रा. | घ.प.वजेसम | दिनमान | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादी) | गतेक्रम ग्रह-सञ्चार (वजेभा) |
|---|-----|-----|-------|-------|------|-------|-------|------|-------|----|-------|---------|-------------|-----------|--------|----------|-----------|---|--|-----------------------------|
| ८ | सो | १ | १६।४० | ११।५१ | आ | २२।०३ | १४।०० | वृ | २१।०२ | वा | ४६।०५ | काल | मिथुन | ३४।३६ | ५.११ | १९.०१ | २२ | चन्द्रोदयः, भूमिरज, | ८ आर्द्रायापूर्य्य ७.५५ | |
| ९ | मं | २ | १५।११ | ११।१५ | पु | २२।१८ | १४।०६ | धु | १७।१८ | तै | ४४।०० | स्थिर | ७।२०=८.७ | ३४।३६ | ५.११ | १९.०१ | २३ | श्रीजगन्नाथरथयात्रा, त्रिपु. १५।११ या., | ९ पुनः उषाया २ शनि ६.३० | |
| १० | बु | ३ | १२।३३ | १०।१२ | ति | २१।२४ | १३.४५ | व्या | १२।३९ | व | ४०।५० | मातङ्ग | कर्कट | ३४।३५ | ५.११ | १९.०१ | २४ | म. ४०।५० उ., १ त्रिपु. १३।२५ उ. ५.३० २२या., | ११ आर्द्रायापूर्य्य २०.१८ | |
| ११ | वृ | ४ | ८।५३ | ८.४४ | शु | १९।३१ | १३.०० | ह | ७।१० | ब | ३६।४३ | अमृत | १९।३१=१३.० | ३४।३५ | ५.११ | १९.०१ | २५ | म. ८।५३ या., भूमिपूजा, | १२ पुषा ४ मीने भौमः ८.५५ | |
| १२ | शु | ५ | ५।२३ | ५.१५ | म | १६।४८ | ११.५५ | व | ५.१५ | को | ३१।४८ | काण | सिंह | ३४।३५ | ५.१२ | १९.०१ | २६ | | १५ आर्द्रायापूर्य्य ८.४३ | |
| १३ | श | ६ | ५.३२ | २.३३ | पू | १३।२५ | १०.३४ | व्य | ४६।५९ | ग | २६।१७ | लुम्ब | २७।३०=१६.१२ | ३४।३४ | ५.१२ | १९.०२ | २७ | म. ५.३२ उ., सूर्यपूजा, देवपत्तने श्रीगंगा माईरथयात्रा, १ | १५ पुनः मृगे वृधः ८.२९ | |
| १४ | आ | ७ | ४.७१ | ०.०७ | उ | ९.३४ | ९.०२ | व | ३९।२८ | भ | २०।२१ | मित्र | कन्या | ३४।३४ | ५.१२ | १९.०२ | २८ | म. २०।२१ या., अष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, | १८ आर्द्रायापूर्य्य २१.१० | |
| १५ | सो | ८ | ४.१० | २.३८ | ह | ५।२६ | ७.२३ | प | ३१।४९ | बा | १४।१० | वज्र | ३३।२०=१८.३३ | ३४।३३ | ५.१३ | १९.०२ | २९ | धानदिवसः, दहीच्युरा खानेदिन, | १८ उमा. १ भौमः ६.१ | |
| १६ | मं | ९ | ३.४५ | १.९१ | चि | ५।३५ | ५.४३ | शि | २४।१२ | तै | ७।५७ | ध्रौक्ष | तुला | ३४।३२ | ५.१३ | १९.०२ | ३० | मन्वादिः, १ चातुर्मास्यव्रतारम्भः, (जुलाई ७ ता ३१), | १८ पु. उ. वृधः १५.३५ | |
| १७ | बु | १० | २.९० | १.५० | वि | ५।३३ | २.३८ | सि | १६।४७ | व | ११।५५ | धाता | ३९।२५=२०.५९ | ३४।३१ | ५.१३ | १९.०२ | १ | म. १।५५ उ. २९।२५ या., हरिशयनी एकादशीव्रतं, तुलसीरोपणं, २ | २० मार्गि वृधः २३.४० | |
| १८ | वृ | ११ | २.३३ | १.४१ | अतु | ५।०२ | १.२३ | सा | ९।४३ | को | ५.११ | आनन्द | वृश्चिक | ३४।३० | ५.१४ | १९.०२ | २ | तुलसीपुष्ये, प्रदोषव्रतं, खेलकुद पत्रकार दिवसः, | वृ. २० मा. १ उ. पू., | |
| १९ | शु | १२ | १.८५ | १.२४ | ज्ये | ४।८० | ०.२६ | शु | ५.१३ | ग | ४६।४९ | चर | ४.८१=०.२६ | ३४।२९ | ५.१४ | १९.०२ | ३ | मानसव्रतारम्भः, | वृ. उ. उ. शु. मा. उ. पू., | |
| २० | श | १३ | १.४५ | १.१३ | मू | ४.६९ | २.३१ | ब्रा | ५.२० | भ | ४३।२१ | गद | धनु | ३४।२८ | ५.१४ | १९.०२ | ४ | म. १.४५ उ. ४.३२ या., पूर्णिमाव्रतम्, | श. व. उ. | |
| २१ | आ | १४ | १.२० | १.०३ | पू | ४.६० | २.३१ | तै | ४.७४ | बा | ४०।५७ | शम | धनु | ३४।२७ | ५.१५ | १९.०२ | ५ | गुरुपूर्णिमा, गुरु(व्यासः) पूजा, वक्षिणामूर्तिपूजा, (दिलापुन्हि), ३ | दष्टयः-सूर्य आदा | |
| शेष पर्वहरूलाई ५ ७ आदि चिन्हहरूले जोडी पठ्ठमा अन्यत्र राखिएको हुन्छ. सोहीअनुसार पढ्नुहुन अनुरोध गरिन्छ। | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

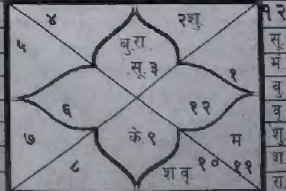
शेष पर्वहरूलाई ६, ७ आदि चिन्हहरूले जोडी पृष्ठमा अन्यत्र राखिएको हुन्छ, सोहीअनुसार पढनुहुन अनुरोध गरिन्छ।

६ श्रीपशुपतेर्गुरुदक्षिणा, मन्वादिः, भक्तपूर वीरनदीस्तानं, ७

चातुर्मास्य व्रतविधिः-आषाढशुक्ल दशमीदेखि एकचित्त एकभक्त रहेर विधिवत् संकल्पपूर्वक चतुर्मास व्रत गर्ने विधान छ, सम्भव भए पुरै चार महिना एकादशीमा निराहार अन्य दिनमा एक समय हविष्यान्न खाई ब्रह्मचर्य पालन गरी भूमिशाया भई व्रत गर्नुपर्दछ। प्रार्थनामन्त्रः इमं करिष्ये नियमं निर्विघ्नं कुरुमेऽच्युतः। इदं व्रतं मयादेव गृहितपुरतस्तव । निर्विघ्नसिद्धिमायातु प्रसादात्तवकेशव । गृहितेऽस्मिन्व्रते देव पंचत्व यदि मे भवेत् तदा भवतु तत्सर्वं त्वत्प्रसादाज्जनार्दन । चतुर्मासमा त्याज्यपदार्थहरूः श्रावण-साग, भाद्रपद-दही, आश्विन-दुग्ध, कार्तिक-द्विदल (मास आदि) । चतुर्मासमा ब्रतीहरूले मह-गुड, मास, तेल, कुलत्थ (गहत), मूला, कुष्माण्डाकुभिण्डो, नखुन (नखान्), क्षौरकर्म, खाटमा शयन, बदरीफल(बयर) यी पनि वर्जित छन् । चतुर्मासमा तुलसीको पूजाको विशेष महत्त्व छ । तुलसी भगवती लक्ष्मी कै अंश हुन्, इनको दर्शनमात्रले पनि मनुष्य विष्णुप्रिय हुन्छ । तुलसी प्रार्थनामन्त्रः-वृन्दा वृन्दावनी विश्व पूजिता विरवपावनी । पुष्पसारा नन्दिनी च तुलसी कृष्णजीवनी । प्रसीद मम देवेशी कृपया परया सदा । अभिष्टफल सिद्ध्यर्थं कुरु मे माधवप्रिये ॥ यसपक्षको पूर्णिमामा आफ्ना गुरुको विशेष पूजन गरी गुरुपर्व मनाइन्छ।

चैत्रशुक्ल प्रतिपदाबाट सांवत्सरिक नयाँवर्ष शुरु हुन्छ साथै वार्षिक नवरात्र पनि प्रारम्भ हुन्छ । वर्षमा जम्मा चार नवरात्र हुन्छन् वासन्तिक र शारदीय दुई प्रत्यक्ष र आषाढशुक्ल प्रतिपदाबाट नवमीसम्म र माघशुक्ल प्रतिपदाबाट नवमीसम्म दुई गण्ट नवरात्र हुन्छन् ।

| | | | | | |
|-----|-----------------|--------|-----|-------------------|--------|
| ११ | आषाढ ८ सोम ४४।४ | | १२ | आषाढ १५ सोम ४३।५९ | |
| सु. | २।७।१५।१७ | ५.६।५३ | सु. | २।९।३५।३९ | ५.६।५१ |
| मं. | १।०।२८।०।१७ | ३४।५० | मं. | १।१।२।४।१ | ३३।५९ |
| वृ. | २।१।१३।०।५८ | ४२।१७ | वृ. | २।६।१९।५७ | २७।३८ |
| बु. | १।३।६।२३ | ६।३२ | बु. | १।१९।६।१ | ७।१७ |
| श. | १।४।५।१५।० | २।३० | श. | १।७।१८।४४ | १।८१ |
| श. | १।३।२।१२।० | ४।२७ | श. | १।१५।०।५८ | ४।४८ |
| रा. | २।४।१२।१२ | ३।११ | रा. | २।३।३९।५६ | ३।११ |



श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. स. ११४० **श्रावणकृष्णपक्षः** (विल्लागा) पा उषा उभा मृ पुन. ति. (जुलाई ७ सन् २०२०) उत्तरायण गीष्मर्तुः दक्षिणवर्षर्तुः प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | बा. | ति. | घ.प. | बजेसम | न. | घ.प. | बजेसम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगः | च.रा. घ.प. बजेसम | तिनाम | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादी) | गतिक्रम ग्रह-सञ्चार (बजेमा) |
|---------|-----|-----|-------|-------|----|-------|-------|------|-------|----|-------|---------|------------------|-------|----------|-----------|-----|--|--|
| २३ | सो | १ | १०/१० | ९:१९ | उ | ४६/४९ | २३:४९ | वै | ४४/४३ | तै | ३९/४३ | मृत्यु | १/८=५:४२ | ३४/२६ | ५:१५ | १९:०१ | 6 | १ यनारम्भ, कण्डारकपूजा, रात्रौ लुतभिक्षेपणं (लुतोफाले), २ | २२ पुनर्वसुसूर्य ९:३७ २२ रोहिण्या शुक्रः ८:१९ २४ उमाया २ मीमः ९:३० २५ पुनर्वसुसूर्यः २२:२२ २५ मृगश राहु मूले १ केतु ८:४८ |
| २३ | मं | २ | ९/३३ | ९:०५ | ध | ४८/४७ | ०:४६ | वि | ४२/४० | व | ३९/४४ | लुम्ब | | ३४/२४ | ५:१५ | १९:०१ | 7 | म. ३९/४४ उ., २ गुरियापर्व (थारुजातिको), | २६ आर्द्राया वृधः १६:२२ २९ पुनर्वसुसूर्यः १०:२६ ३० उमाया ३ मीमः २१:३३ १ पुन. शक्रकटे सूर्यः २२:४७ १ पुन. धनुषि गुरु ०:३३ ४ तिथि १ सूर्य ११:५५ |
| प्र. २४ | बु. | ३ | १०/१२ | ९:२१ | ध | ५१/५९ | २:०४ | प्री | ४०/४१ | व | ४१/०१ | मित्र | २०/१३=१३:२१ | ३४/२३ | ५:१६ | १९:०१ | 8 | म. १०/१२ या, घ. पं. प्रवृत्तिः २०/१३, | |
| २४ | वृ. | ४ | १२/०७ | १०:१७ | श | ५६/२२ | ३:४९ | आ | ४०/१७ | को | ४३/३९ | वज्र | कुम्भ | ३४/२२ | ५:१६ | १९:०१ | 9 | | |
| २६ | शु. | ५ | १५/११ | ११:२१ | पू | ६०/०० | समस्त | सौ | ४०/४५ | ग | ४७/०६ | ध्वाक्ष | ४५/१९=२३:२४ | ३४/२० | ५:१७ | १९:०१ | 10 | | |
| प्र. २६ | शु. | ६ | १९/१३ | १२:५८ | पू | १/४३ | ५:५९ | शो | ४१/५१ | म | ५१/३० | काल | मीन | ३४/१८ | ५:१७ | १९:०१ | 11 | म. १९/१३ उ. ५१/३० या.. विश्वजनसंख्यादिवसः, | |
| २७ | आ. | ७ | २३/१५ | १४:५२ | उ | ७/५० | ८:२६ | अ | ४३/२४ | वा | ५६/२५ | स्थिर | मीन | ३४/१७ | ५:१८ | १९:०० | 12 | रविसप्तमी अष्टमी व्रतञ्च, | |
| २७ | सो. | ८ | २८/१५ | १६:५२ | रे | १४/२० | ११:०२ | सू | ४५/०४ | तै | ६०/०० | मातङ्ग | १४/२०=११:२ | ३४/१५ | ५:१८ | १९:०० | 13 | गोरखकालीपूजा, घ. पं. निवृत्तिः १४/२०, भानुजयन्ती, | |
| ३० | मं. | ९ | ३३/४७ | १८:४९ | अ | २०/४८ | १३:३८ | घे | ४६/३२ | तै | १/२३ | अमृत | मेघ | ३४/१३ | ५:१९ | १९:०० | 14 | | |
| ३१ | बु. | १० | ३८/०५ | २०:३३ | भ | २६/४७ | १६:०२ | शु | ४७/३२ | व | ६/०१ | काण | ४३/११=२२:३५ | ३४/११ | ५:१९ | १८:५९ | 15 | म. ६/१७ उ. ३८/५५ या, | वक्रमागोविद्यास्तः मं. मा. उ. बु. मा. उ. पू., वृ. व. उ., शु. मा. उ. पू., श. व. उ. |
| प्र. १ | वृ. | ११ | ४१/३२ | २१:५६ | कू | ३२/०० | १८:०७ | ग | ४७/५० | व | ९/५५ | लुम्ब | वृष | ३४/०९ | ५:१९ | १८:५९ | 16 | कामिकाएकादशीव्रतं, कर्कटः ४३/४०, श्रावणसंक्रान्ति, दक्षिणा १ | |
| २ | शु. | १२ | ४३/५३ | २२:५३ | रो | ३६/१० | १९:४८ | वृ | ४७/५५ | को | १२/५० | मित्र | वृष | ३४/०७ | ५:२० | १८:५९ | 17 | | |
| ३ | शु. | १३ | ४५/१० | २३:२० | म | ३९/०८ | २१:०० | घ | ४५/४२ | ग | १४/३५ | वज्र | ७/४८=८:२७ | ३४/०५ | ५:२० | १८:५८ | 18 | म. ४५/१० उ., शनिप्रदोषव्रतम्, | |
| ४ | आ. | १४ | ४७/५० | २३:१७ | आ | ४०/५२ | २१:४२ | व्या | ४३/०८ | भ | १५/०४ | ध्वाक्ष | मिथुन | ३४/०३ | ५:२१ | १८:५८ | 19 | म. १५/४ या., घण्टाकर्ण १४ (गर्वामुग च. द्वेपूजा), | राशिप्रवेश १ सू. ४, १ वृ. ९, |
| ५ | सो. | १० | ४३/२६ | २२:४४ | पू | ४१/२२ | २१:५४ | ह | ३९/३४ | च | १४/१७ | धूम | २६/२१=१५:५४ | ३४/०० | ५:२१ | १८:५८ | 20 | दर्शभाद्र, सोमवती अमावास्या, निशी तथा हलोवार्त, | |

नागपूजने विशेषः श्रावण शुक्लपञ्चमीमा नागपञ्चमी हन्ध्र यस दिन गोमया गाईको गोबरको) नागबनाई नागको मानपात्रनागको चित्र)मा दीप कलश गणेश पूजनपूर्वक दही, दुधो, कुश, सिन्दूर, गन्धादिले नागको पूजा गरी घरको द्वार(ढोका)मा टाँसाले सर्प, चट्याङ्ग, बाढी-पटिरोसमेतको भय हुँदैन विशेष अवश्य अवस्थामा प्रत्येक महिनाको शुक्लपञ्चमीमा पनि नाग पूजा गर्न सकिन्छ। **सर्पविषनाशन मन्त्रः** ॐ कुरुकुलये हं फट्स्वाहा। यो मन्त्र जपी फकिदिनाले सर्पको विषनाश हुन्छ। **नागपूजने गृहारम्भे नागशिरो ज्ञानम्-** भाद्र, आश्विन, कार्तिकमा पूर्वशीर, मार्ग, पौष, माघ दक्षिण, फाल्गुन, चैत्र, वैशाखमा पश्चिम, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावणमा उत्तर दिशामा नागको शीर हुन्छ। विशेषतः घरको जग खन्दा नाग शीर विचार गर्नुपर्दछ। नागपञ्चमी श्रावणमा हुनेहुनाले यस दिन उत्तरतर्फ फर्केर नाग पूजा गर्नुपर्दछ। घरको जग खन्दा नागको शीरमा खने स्वयं वा गृहकर्तालाई पीडा, पछाडि वा पुच्छरतर्फ खने छोरा र पत्नीलाई पीडा हुन्छ भनिन्छ अतः जग खन्दाको महिना अनुसार विचार गरी खन्न शुरु गर्नुपर्छ।

साउने संक्रान्तिको बेलुका उल्काप्रक्षेपण (अगुल्टो फाल्ने) मन्त्रः कण्डारक सुरा -क्षीश गृहाण दीपदत्तमम्। सरलेन्धनसम्भूतं ममारिष्ट विनाशया॥ कण्डारक रात्रिचर लतादि भयनाशन। उल्कामिमां प्रक्षिपामि मास्तु लताभयं मम॥

पापांशः शनि-१०, राहु-८-केतु-२, २२सू. २४मं. २५सू. २, २५राहु-७-केतु-१, २९सू. ३०मं. ७, १सू. ४, ५सू. ५,

| | | | | | | | | | | |
|-----|------------|-------------------|-----|------------|-------------------|----|-------------|-----|--------------------|-------|
| १३ | | आषाढ २२ सोम ४३/५३ | | १४ | आषाढ २९ सोम ४३/४५ | | १५ | | श्रावण ५ सोम ४३/३७ | |
| सू. | २/२०/३१/१५ | ५६/५१ | सू. | २/२७/९/१९ | ५६/५३ | ५ | रशु | सू. | ३/३/४/३७ | ५६/३७ |
| मं. | ११/५/१३/११ | ३२/१५ | मं. | ११/९/११/४० | ३०/१६ | ६ | ब. रा सु रे | मं. | ११/१/२५/३६ | २८/२२ |
| बु. | २५/१९/२० | १४/२२ | बु. | २९/३/३९ | ५१/४७ | ७ | के १ | बु. | २/१६/४२/४६ | ७६/५६ |
| वृ. | ९/१/२९/३४ | ७/४६ | वृ. | ९/०/२४/५९ | ७/५८ | ८ | १२म | वृ. | ८/२९/१८/३५ | ७/५७ |
| शु. | ११/०/१८/४१ | ३०/११ | शु. | ११/४/३०/२९ | ३९/२४ | ९ | ११ | शु. | १/११/१६/४२ | ४६/२२ |
| श. | ९/२/१८/४५ | ५/१३ | श. | ९/१/४/३९ | ५/१० | १० | ११ | श. | ९/११/२४ | ५१/० |
| रा. | २/३/२७/४१ | ३/११ | रा. | २/३/१/२६ | ३/११ | ११ | १० | रा. | २/२/४/३० | ३/११ |

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. ११४० **श्रावणशुक्लपक्षः** (गुलाश्व) पा. ति. ह. ज्ये. म. उषा. (जु. ७ अग. ८ सन् २०२०) दक्षिणायन वर्षर्तुः प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | बा. | ति. | घ.प. | बजेसम | न. | घ.प. | बजेसम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगः | स.श. घ.प. बजेसम | दिनमान | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादौ) | गतेक्रम ग्रह-सञ्चार (बजेमा) |
|----|-----|-----|-------|-------|------|-------|-------|------|-------|-----|-------|-----------|-----------------|--------|----------|-----------|-----|--|-----------------------------------|
| ६ | मं | १ | ४०।४३ | २१:४३ | ति | ४०।४३ | २१:३९ | व | ३५।०४ | किं | १२।१७ | प्रवर्द्ध | कर्कट | ३३।५८ | ५:२२ | १८:५७ | २१ | गुलाधर्मास्मः, | ६ उभायां ४ भौमः २१:५४ |
| ७ | बु | २ | ३७।१७ | २०:१७ | इले | ३९।०२ | २०:५९ | सि | २९।४३ | वा | ९।११ | रक्ष | ३९।२०=२०:५९ | ३३।५६ | ५:२२ | १८:५७ | २२ | चन्द्रोदय, सिंहेदृश्याकः ३१।३०।१७:५९ बजे), | ८ पुनर्वसौ बुधः ९:२९ |
| ८ | बु | ३ | ३२।४९ | १८:३० | म | ३६।२९ | १९:५९ | व्य | २३।३८ | तै | ५।०८ | मुसल | सिंह | ३३।५३ | ५:२३ | १८:५६ | २३ | वराहजयन्ती, | ९ तिथ्ये २सूर्यः २३:१९ |
| ९ | शु | ४ | २७।३८ | १६:२६ | प | ३३।१४ | १८:४१ | व | १६।५६ | व | ४।१७ | सिद्धि | ४७।२०=०:१९ | ३३।५१ | ५:२३ | १८:५६ | २४ | भ. ०।१७ उ. २७:३८ या, | १० मृगशृङ्गः १२:४३ |
| १० | शु | ५ | २१।५५ | १४:१० | उ | २९।२८ | १७:११ | प | ९।४६ | कौ | ४८।५५ | उत्पल | कन्या | ३३।४८ | ५:२४ | १८:५५ | २५ | नागपञ्चमी, नागपूजनं (तागटांस्ने), ल. पु. दानघाट ७ | १२ तिथ्ये ३सूर्यः १९:२८ |
| ११ | आ | ६ | १५।५१ | ११:४५ | ह | २५।२२ | १५:३३ | शि | ४।१७ | ग | ४२।४५ | मानस | ५३।१७=२:४३ | ३३।४५ | ५:२४ | १८:५५ | २६ | द्विपु. २५।२२ उ., १ कल्कीजयन्ती, | १४ रेवत्यां १ भौमः १७:३१ |
| १२ | सो | ७ | ९।३८ | ९:१६ | चि | २१।०९ | १३:५३ | सा | ४६।५८ | म | ३६।३२ | मृदार | तुला | ३३।४३ | ५:२५ | १८:५४ | २७ | भ. ९।३८ उ. ३६।३२ या., गोस्वामी तुलसीदासजयन्ती, | १६ कर्कटे बुधः ०:३३ |
| १३ | मं | ८ | ५।२९ | ७:५८ | स्वा | १७।०३ | १२:१५ | शु | ३९।२९ | बा | ३०।३० | ध्वज | ५९।१२=५:६ | ३३।४० | ५:२६ | १८:५३ | २८ | भ. ९।३८ उ. ३६।३२ या., गोस्वामी तुलसीदासजयन्ती, | १५ पू. अ. बुधः ७:५२ |
| १४ | बु | १० | ५।२९ | २:१८ | वि | १३।१६ | १०:४५ | शु | ३२।१९ | तै | २४।४९ | धाता | वृश्चिक | ३३।३७ | ५:२६ | १८:५३ | २९ | भौमाष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा (यलपञ्चदानं), | १६ तिथ्ये ३सूर्यः २३:३२ |
| १५ | बु | ११ | ४।२३ | ०:२४ | बनु | ९।५९ | ९:२६ | ब्र | २५।३७ | व | १९।४१ | आनन्द | वृश्चिक | ३३।३४ | ५:२७ | १८:५२ | ३० | ७ एवं टौदहनागदहमेला, नक्सालनागपोखरीमेला, १ | १७ तिथ्ये ३सूर्यः १:४० |
| १६ | शु | १२ | ४३।२४ | २२:४९ | ज्ये | ७।२४ | ८:२५ | तै | १९।३९ | व | १५।१६ | चर | ७।२४=८:२५ | ३३।३१ | ५:२७ | १८:५२ | ३१ | भ. १९।४१ उ. ४७।२३ या., पुत्रदा एकादशी व्रतं, | १७ मिथुने शुकः २:१५ |
| १७ | शु | १३ | ४०।२३ | २१:३७ | म | ५।४१ | ७:४४ | वै | १४।१० | कौ | ११।४५ | गद | घनु | ३३।२८ | ५:२८ | १८:५१ | १ | (वहिव्यः व्यय), | १९ इलेषा १सूर्यः ११:३० |
| १८ | आ | १४ | ३६।२९ | २०:५२ | त | ४।५९ | ७:२८ | वि | ९।३९ | ग | ९।१६ | शुभ | १९।५९=१३:२८ | ३३।२५ | ५:२८ | १८:५० | २ | शनिप्रदोषव्रतं, (अगस्त ८ ता ३१), | पापघातः शनि १०, राह ७ |
| १९ | सो | १५ | ३७।४८ | २०:३६ | उ | ५।२६ | ७:३९ | प्री | ६।०५ | म | ७।५८ | काण | मकर | ३३।२२ | ५:२९ | १८:५० | ३ | भ. ३६।२९ उ., श्रीशिवस्यपवित्रारोपणं, बाजुरा बडीमालिकामेला, | केतु १, ६ मं. ८, ८ सू. १, २ सू. ७ |

श्रावणे शिवपूजने विशेषः— श्रावण महिनामा शिवको पूजा-आराधना र सोमवारको व्रतको अत्यन्त महत्त्व छ । यसबाट धर्म, अर्थ, काम र मोक्ष पाइने मान्यता छ । कर्कट राशिको सूर्य भएकाबेला आ. शक्ल तृतीया र सोमवार परेमा विशेषी योग हुन्छ ।

श्रावणशुक्ल पूर्णिमा रक्षाबन्धन वा जनैपूर्णिमा हो । यस दिन विधिपूर्वक श्रावणी उपाकर्म (स्नान) गरेमा वर्षभरी अज्ञान वा विस्मृतिले गरिएका त्रुटिहरू (पापकर्म) नाश हुन्छन् भन्ने मान्यता छ । उपाकर्म स्नान पछि विधिपूर्वक बनाएको जनै शास्त्रविधिले संस्कार गरी अभिमन्त्रित गरी लगाउनुपर्छ । जनै लगाउनेमन्त्र— यज्ञोपवीत परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्च शश्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ पुरानो जनै त्याग्नेमन्त्र— एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रम्हत्वं धारितं मया । जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ॥ पुरानो जनै त्याग्ने निर्णय— सूतके मृतके चैव गते मासचतुष्टये नवयज्ञोपवीतानि धृत्वा जीर्णानि संत्यजेत् ॥ अर्थात् जनन तथा मरण दुवै आशौचमा, लगाएको चार महिना पुगेपछि पुरानो जनै त्यागी नयाँ लगाउनु, नयाँ जनै फरेपछि यथाशक्य गायत्री जप्नुपर्छ । रक्षाबन्धन (डोरो) लगाउने मन्त्र— येनबद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेनत्वां प्रतिबद्धामि रक्षे माचल माचल ॥

| | | | |
|---|------------------------|--|--|
| सोमवारे व्रतकार्य श्रावणे वै यथाविधिः । शक्तेनोपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनम् ॥ | | अपुनो लभते पुन निधनो धनवान् भवेत् । अविद्यो लभते विद्यामिति धर्मविदो विदुः ॥ | |
| १६ श्रावण १२ सोम ४३।२८ | १७ श्रावण १९ सोम ४३।१९ | | |
| सु. ३९।०२६।५७ | सु. ३९।०२६।५७ | | |
| मं. ११।१५।५६।४९ | मं. ११।१५।५६।४९ | | |
| बु. २२।६।४३।४५ | बु. २२।६।४३।४५ | | |
| व. ८।२८।३१।४९ | व. ८।२८।३१।४९ | | |
| शु. १।२५।२४।४८ | शु. १।२५।२४।४८ | | |
| श. ९।०।३८।४० | श. ९।०।३८।४० | | |
| रा. २।२।२०।४५ | रा. २।२।२०।४५ | | |

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. ११४० आद्रपदकृष्णपक्षः (गुलागा) पा. २३२ मृ. पुन. म (अगस्त ८ सन् २०२०) दक्षिणायन वर्षतुः प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | वृजसम्प. | न. | घ.प. | वृजसम्प. | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | घ.प. | वृजसम्प. | दिनमास | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादी) | गतेक्रम ग्रह-संख्या (वृजसम्प.) |
|----|-----|-----|------|----------|------|------|----------|------|------|----|------|---------|------------|------|----------|--------|----------|--|---|--|--------------------------------|
| २० | मं. | १ | ३८२३ | २०:५० | अ | ७०६ | ८:२० | आ | ३३० | वा | ७५५ | लुम्ब | ३८२५=२०:५१ | ३३१९ | ५:२९ | १८:४९ | ४ | गोयात्रा, गार्हपत्य (सापार), घ.प. प्रवृत्ति: ३८२५, द्विपु. ३८२३ उ. | २१ पुनः उषा १ धनुषि | | |
| २१ | बु. | २ | ४०१४ | २१:३५ | घ | १०१० | ९:३० | सौ | १५६ | तै | ९९ | मित्र | कृष्ण | ३३१६ | ५:३० | १८:४८ | ५ | रोपाईयात्रा, (वधुसायामतया), | शनिः १०:१ | | |
| २२ | बु. | ३ | ४३१५ | २२:४८ | श | ११०९ | ११:१० | शो | १२० | च | ११३६ | वज्र | कृष्ण | ३३१७ | ५:३० | १८:४७ | ६ | म. ११३६ उ. ४३१५ या. | २२ श्लेषायाः सूर्यः २३:२१ | | |
| २३ | शु. | ४ | ४७१५ | ०:२५ | प | ११९९ | १३:१४ | अ | १३६ | ब | १५०८ | ध्वाक्ष | २५६=६:४१ | ३३१८ | ५:३१ | १८:४७ | ७ | १ डोटी (शीलगाडी) मष्टजांच, विराटनगरे राधाकृष्णरथयात्रा, | २३ रेवत्या २ भौमः ०:५८ | | |
| २४ | श. | ५ | ५११८ | २:१८ | उ | १२९७ | १५:३८ | सु | २३४ | कौ | १९३२ | धूम | मीन | ३३१९ | ५:३१ | १८:४६ | ८ | डोशी कोलमतिघाटस्नानं, ल.पु. उपाकल सायां नरसिंहजात्रा, | २४ श्लेषायाः बुधः २०:४ | | |
| २५ | आ | ६ | ५७१० | ४:२० | रे | १३९३ | १८:१३ | धृ | ४०० | ग | २४२७ | प्रवद्ध | ३१४३=१८:१३ | ३३२० | ५:३२ | १८:४५ | ९ | म. ५७० उ. विश्वआदिवासीदिवसः, घ.प. निवृत्ति: ३१४३, | २५ आर्द्रायाः शुक्रः ३:५ | | |
| २६ | सौ | ७ | ६०१० | समस्त | अ | ३८१३ | २०:५० | शु | ५३८ | म | २९३० | रक्ष | मेघ | ३३२० | ५:३२ | १८:४४ | १० | म. २९३० या. | २६ श्लेषायाः सूर्यः ११:६ | | |
| २७ | मं. | ८ | ६५११ | ६:१९ | भ | ४४२९ | २३:१७ | ग | ७०८ | वा | ३४१३ | मसल | मेघ | ३३२१ | ५:३३ | १८:४३ | ११ | अष्टमीव्रतं, श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतं, मोहरात्रि, गोकपुजा, मन्वादिः, | २७ पुनः पूषायाः गुरुः ८:५१ | | |
| २८ | बु. | ९ | ६९१२ | ८:०५ | कृ | ४९४६ | १:२८ | वृ | ८१२ | तै | ३८१४ | सिद्धि | ०४६=५:५२ | ३३२२ | ५:३३ | १८:४२ | १२ | श्रीकृष्णरथयात्रा, पाल्पा (तानसेन) भगवतीयात्रा, १ | २८ पुनः पूषायाः गुरुः ८:५१ | | |
| २९ | बु. | १० | ७३१३ | ९:३१ | रो | ५४९९ | ३:१४ | धृ | ८३७ | व | ४९९६ | उत्पात | वष | ३३२३ | ५:३४ | १८:४२ | १३ | म. ४९९६ उ. ल. पु. भीमयात्रा, गुंगानवमी, २ बाघभैरवयात्रा, | २९ शिहं बुधः ५:५६ | | |
| ३० | शु. | ११ | ७७१४ | १०:३१ | म | ५९७३ | ४:३३ | व्या | ८५० | ब | ५४०८ | मानस | २५५८=१५:५७ | ३३२४ | ५:३४ | १८:४१ | १४ | म. १२२९ या. १ जुगः यें पञ्चदानं, जुगः चढेपूजा, कीर्तिपुरे ३ | १ म. १ सिंहसूर्यः १०:१२ | | |
| ३१ | श. | १२ | ८११५ | ११:०९ | आ | ६४९८ | ५:२२ | ह | ९४७ | कौ | ६३४५ | मुद्गर | मिथुन | ३३२५ | ५:३५ | १८:४० | १५ | अजा एकादशी व्रतम्, विपुकरः ११२८ उ. | पाषाणः श. १० राहुः ७-केतुः १ | | |
| ३२ | आ | १३ | ८५१६ | ११:०९ | प | ६०१० | समस्त | व | ४२३ | ग | ६३०६ | ध्वज | ४५९=२३:३९ | ३३२६ | ५:३५ | १८:३९ | १६ | प्रदोषव्रतं, विपुकरः १३३४ या. १ मोतीरामजयन्ती, | २१ शनिः ९. २२ सूर्यः १०. २३ म. १० | | |
| ३३ | सौ | १४ | ८९१७ | १२:१८ | प | ६५११ | ६:३२ | सि | ९५३ | म | ६९९३ | धूम | कंकट | ३३२७ | ५:३६ | १८:३८ | १७ | म. १२९८ उ. ४९१९ या. सिंहः ११:३१, भाद्रसंक्रान्तिः, वल्केपर्व, १ | २६ सूर्यः ११. २९ सूर्यः १२. १ सूर्यः १३ | | |
| ३४ | मं. | १५ | ९३१८ | १३:३३ | श्ले | ७०१२ | ७:४८ | व | १०६४ | च | ७५१४ | आनन्द | ५८२३=७:४८ | ३३२८ | ५:३६ | १८:३७ | १८ | दर्शभाद्र, निशीबानं, २ गोकर्णस्नानं, मन्वादिः, बाबुको मुख हनें १ | राशिप्रवेशः १ सु. २, २१ श. ९, ३२ बु. ५, | | |
| ३५ | बु. | १६ | ९७१९ | १४:०९ | म | ७५१३ | ८:०९ | प | १११५ | कि | ८०१५ | चर | सिंह | ३३२९ | ५:३७ | १८:३६ | १९ | स्तनदानादौ अमावास्या, हलौबानं, कुशग्रहणं (कुशेजोशी), २ | वक्रमागौदयास्तः मं. मा. उ. | | |

चार विशेष रात्रिहरूको परिचय :- भाद्रकृष्ण अष्टमी (मध्यरात्रियापिनी)लाई मोहरात्रि भनिन्छ। यो भगवान् श्रीकृष्णको जन्मतिथी हो, भगवानको जन्महन्त्रा व शका कारागारा (जन्म) रहेको पालेरुक् भगवानको नाथले मोहित भई बेहोरा मएका व वसुदेवले श्रीकृष्णलाई सङ्कलन गोकुल नन्दयशोदाको वरमा पुगाएको आख्या छ, यसकारण यस रात्रिको नाम मोहरात्रि भएको हो। आश्विन शुक्ल अष्टमी (मध्यरात्रियापिनी)लाई कालरात्रि भनिन्छ, यो रात्रि देवी आराधना व विशेष अनुष्ठानका लागि प्रसिद्ध छ। कार्तिक कृष्णअमावास्या (सायंकान्तियापिनी), सुबरात्रिका नामले प्रसिद्ध छ, यसरात्रि दीपावली पनि भनिन्छ, यो पर्व सुख श्रेयसं आदिकी अधिष्ठात्री भगवती कृष्णको आराधनाका लागि प्रसिद्ध छ। फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी (मध्यरात्रियापिनी) शिवरात्रि हो, यो पर्व भगवान् शिवको आराधनाका लागि प्रसिद्ध छ। उक्त रात्रिकालिक पर्वहरू उदयकालिक तिथिमा आधारित नभई कालत्यापी हुन्छन् साथै यी पर्वहरूमा गरिने पूजा रात्रिमे हुन्छ र रात्रिमा जागरण पनि गरिन्छ। जस्तै भा. क. सप्तमी उदय भए मध्यरात्रिमा अष्टमी प्रात हुन्छ र भोलिपल उदय व्यापी अष्टमी भए तापनि मध्यरात्रि भेट्दैन भने अर्धरात्रि दिन (सप्तमी उदयका दिन) मोहरात्रि हुन्छ। यद्यपि श्रीकृष्णजन्माष्टमी ब्रह्मा भने आ-आपना स्थान, आन्तार्य परम्पराअनुसार केही विशेष नियम पनि छन्। आश्विन शुक्ल सप्तमी उदयातिथि भई मध्यरात्रिकालमा अष्टमी आउँछ र भोलिपल उदय अष्टमीले मध्यरात्रि भेट्दैन भने सोही दिन कालरात्रि हुन्छ। (आपनी परम्पराअनुसार कतै कसैको नाथले अष्टमीमा पनि कालरात्रि पूजा गर्ने चलन छ।)

१८ श्रावण २६ सोम ४३१०
सु. ३३३३७५९९ ५७१९२
म. १११००५२३४३ २०५७
बु. ३३२०२३४६४ १०७१०
वृ. ८१६४१९१३ ६१८
श. २०२३१९३ ५८५९
श. ८१२३३६४ ४३०
रा. २३३३६२५ ३९१

चार विशेष रात्रिहरूको परिचय - भाद्रकृष्ण अष्टमी (मध्यरात्रि व्यापिनी) लाई मोहरात्रि भनिन्छ, यो भगवान् श्रीकृष्णको जन्मतिथि हो, भगवान्को जन्महुँदा वंशका कारागारमा (जेलमा) रहेका पालेहरू भगवान्का मायाले मोहित भई बेहोश भएका र वसुदेवले श्रीकृष्णलाई सकुशल गोकुल नन्दयशोदाका वरमा पुगाएको आख्यान छ, यसकारण यस रात्रिको नाम मोहरात्रि भएको हो। आश्विन शुक्ल अष्टमी (मध्यरात्रि व्यापिनी) लाई कालरात्रि भनिन्छ, यो रात्रि देवी आराधना र विशेष अनुष्ठानका लागि प्रसिद्ध छ। कार्तिक कृष्ण अमावास्या (सायंकाल व्यापिनी) सुखरात्रिका नामले प्रसिद्ध छ, यसलाई दीपावली पनि भनिन्छ, यो पर्व सुख ऐश्वर्य आदिको अधिष्ठात्री भगवती लक्ष्मीको आराधनाका लागि प्रसिद्ध छ। फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी (मध्यरात्रि व्यापिनी) शिवरात्रि हो, यो पर्व भगवान् शिवको आराधनाका लागि प्रसिद्ध छ। उक्त रात्रिकालिक पर्वहरू उदयकालिक तिथिमा आधारित नभई कालव्यापी हुन्छन् साथै यी पर्वहरूमा गरिने पूजा रात्रिभै हुन्छन् र रात्रिमा जागरण पनि गरिन्छ। जस्तै भा. क. सप्तमी उदय भएर मध्यरात्रिमा अष्टमी प्राप्त हुन्छ र भोलिपल्ट उदय व्यापी अष्टमी भए तापनि मध्यरात्रि भेटदैन भने अधिल्लै दिन (सप्तमी उदयका दिन) मोहरात्रि हुन्छ। यद्यपि श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतमा भने आ-आफ्ना स्थान, आम्नाय परम्पराअनुसार केही विशेष नियम पनि छन्। आश्विन शुक्ल सप्तमी उदयातिथि भई मध्यरात्रिकालमा अष्टमी आउँछ र भोलिपल्ट उदय अष्टमीले मध्यरात्रि भेटदैन भने सोही दिन कालरात्रि हुन्छ। (आफ्नो परम्पराअनुसार कसै कसैको उदय अष्टमीमा पनि कालरात्रि पूजा गर्ने चलन छ।)

हिमाल ३४ पञ्चाङ्ग



| १९ | भाद्र १ सोम ४३१० |
|-----|------------------|
| सु. | ४०३३०१३ ५७३२ |
| मं. | ११२२३६४५ १७३४ |
| बु. | ४३६९११ १०९३३ |
| वृ. | ८२६६३० ५१७ |
| शु. | २१५३०५४ ६१३२ |
| श. | ८२९८१४ ४२ |
| रा. | २११४१० ३११ |

| क्र. सं. | व. | श. | घ.प. | वृत्तसं. | यौ. | घ.प. | क. | घ.प. | योगः | वृत्त | घ.प. | वृत्तसं. | दिनसं. | सूर्यदिव | सूर्यसं. | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादौ) | गतेक्रम प्रह-संख्या (वर्ज्या) |
|----------|-----|----|------|----------|------|------|------|------|------|-------|------|----------|---------|----------|----------|------|---|-------------------------------|
| ४ | व. | १ | १५५ | १५५ | प | १५५ | १५५ | शि | ३८५९ | वा | १५५२ | गद | सिह | ३८५५ | १५५३ | १५५३ | २० चन्द्रोदय, गुलाधर्मसमाहितः, तीजका दरखान १ चण्डां चोनामपर्व | ४ मध्याह्नः १५५३ |
| ५ | श. | २ | १५५६ | १५५६ | उ | १५५६ | १५५६ | सि | ३९५२ | तै | १५५६ | शुभ | ७२५६ | १५५६ | १५५३ | १५५३ | २१ हरितालिकाव्रतं (तीज, मन्दादि, १ गौरामजमी, महालक्ष्मीप्रारम्भः २) | ४ रेवत्या २ अमः १५५४ |
| ६ | श. | ३ | १५५६ | १५५६ | ह | १५५६ | १५५६ | वा | ४०५४ | व | १५५७ | मृत्यु | कन्या | ३९५७ | १५५६ | १५५३ | २२ म.प.प.प.प. ४५५६या, गणेशव्रतं, चन्द्रदर्शनदोषः, चथा २ | ६ पुनर्वसु शुक्रः १५५२ |
| ७ | आ. | ४ | १५५६ | १५५६ | चि | १५५७ | १५५७ | शु | ४१५३ | न | १५५७ | पय | १५५७ | १५५७ | १५५३ | १५५३ | २३ कृष्णपञ्चमीव्रतं, सप्तर्षिपूजा, (बख्खजविद्ये), विष्णुपञ्चमी, | ८ मध्याह्नः १५५३ |
| ८ | तो. | ५ | १५५७ | १५५७ | स्वा | १५५७ | १५५७ | शु | ४२५० | कौ | १५५७ | छत्र | तुला | ३९५७ | १५५३ | १५५३ | २४ सूर्यपञ्चमी, २ सामवेदिनामुपाकर्मः, धर्मसमाधिवसः २ | ९ पुष्या १५५३ |
| ९ | मं. | ६ | १५५७ | १५५७ | वि | १५५७ | १५५७ | ब | ४३५० | म | १५५७ | श्रीवत्स | १५५७ | १५५७ | १५५३ | १५५३ | २५ म.प.प.प. ४५५७या, म.प. मङ्गलकुण्डमेला, अमुक्ताभरण ३ व्रत १ | ११ मध्याह्नः १५५३ |
| १० | बु. | ७ | १५५७ | १५५७ | ज्ये | १५५७ | १५५७ | वै | ४४५० | वा | १५५७ | सौम्य | वृश्चिक | ३९५७ | १५५३ | १५५३ | २६ अष्टमीव्रतं, द्वापद्वितीया, गौरामपर्वः, गोकापु कागेश्वरी, कायज ३ | १४ उषाया १५५३ |
| ११ | व. | ८ | १५५७ | १५५७ | ज्ये | १५५७ | १५५७ | वि | ४५५३ | तै | १५५७ | काल | २६५७ | १५५७ | १५५३ | १५५३ | २७ अद्वैतवमी, २ स्नानः, कागेश्वरीमेला, ल.पु. दशमहाविद्या १ | १५ पुष्यामृतः १५५३ |
| १२ | शु. | ९ | १५५७ | १५५७ | मू | १५५७ | १५५७ | श्री | ४६५३ | व | १५५७ | स्थिर | धनु | ३९५७ | १५५३ | १५५३ | २८ म.प.प.प. ४५५७या, हरिपरिवर्तिनी एकावशीव्रतं, कामनद्वाधरी, दधिदानं १ | १६ कर्कट शुक्र १५५३ |
| १३ | श. | १० | १५५७ | १५५७ | पू | १५५७ | १५५७ | आ | ४७५३ | व | १५५७ | मातङ्ग | ३६५३ | १५५३ | १५५३ | १५५३ | २९ म.प.प.प. ४५५७या, हरिपरिवर्तिनी एकावशीव्रतं, कामनद्वाधरी, दधिदानं १ | १७ कन्याया १५५३ |
| १४ | श. | ११ | १५५७ | १५५७ | पू | १५५७ | १५५७ | आ | ४८५३ | व | १५५७ | मकर | ३६५३ | १५५३ | १५५३ | १५५३ | ३० प्रदोषव्रतं इन्द्रधनुस्त्यान, मत्तछेयः, विपु १५५३ | १८ पुष्या १५५३ |
| १५ | श. | १२ | १५५७ | १५५७ | पू | १५५७ | १५५७ | शो | ४९५३ | ग | १५५७ | सिंह | ३६५३ | १५५३ | १५५३ | १५५३ | ३१ हृङ्गाया, ध.प. प्रवृत्तिः ३६५३, २) त्रिपु १५५३ | १९ पुष्या १५५३ |
| १६ | मं. | १३ | १५५७ | १५५७ | पू | १५५७ | १५५७ | अ | ५०५३ | म | १५५७ | उत्पात | कृष्ण | ३६५३ | १५५३ | १५५३ | ३२ अ.प.प.प. ४५५७या, अनन्तचतुर्वशीव्रत, पूर्णिमाव्रतं, २ | १९ पुष्या १५५३ |
| १७ | बु. | १४ | १५५७ | १५५७ | श | १५५७ | १५५७ | सु | ५१५३ | वा | १५५७ | मानस | कृष्ण | ३६५३ | १५५३ | १५५३ | ३३ इन्द्रवहस्नानं, ययापुनि, बौद्धशशाङ्कारम्भः प्रतिपच्छादः, १ | १९ पुष्या १५५३ |

अथ पाण्डिकव्रत विचारः भद्रशुक्ल तृतीया हरितालिका-चतुर्थी सहितायात सा तृतीयाफलप्रदाः अवैधव्यकरा स्त्रीणां पुत्रपौत्र प्रवर्धनी । चतुर्थीसहितको हरितालिका तृतीया व्रत गर्नाले अखण्ड सौभाग्य र घन पुत्रकलत्रादिको वृद्धि हन्छ । भद्रशुक्ल चतुर्थी गणेश चतुर्थी हो, चतुर्थीबाट अन्नत्त चतुर्दशीसम्म दश दिनको गणेशोत्सव मनाउने विधान छ । यसमा गणेश आराधनाको अत्यन्त महत्त्व बताइएको छ । चतुर्थीमा चन्द्रमाको दर्शन निषेध छ भएमा अनाथक भट्टो लाज्छन लाग्दछ, चन्द्रमा देखिएमा यो मन्त्र पढनुपर्दछ । **चन्द्रदर्शन दोषशान्ति मन्त्र** सिंहप्रसेनमन्धीत सिंहो जाम्बवताहतः सुकुमारकमाग्रेदी तव ह्येष शम्पतका पञ्चमीमा दितिन गृहण मन्त्रः आयुर्वल यशोवर्च प्रजापश्वसूनि च । बह्व प्रजां च मेधां च त्वयो देवी वनस्पते । दैतौ माझने मन्त्रः मखदगन्धनाशाय दन्तानाञ्च विध्वये । धीवनया च गात्राणां कुर्वेह दन्तधावनम् ॥ **पञ्चमीमा** विधिपूर्वक स्नान गरी सर्पार्थको पूजन र व्रत गर्नाले रजस्वलामा अज्ञानतावश भएका छुवाछुतादि दोष नाश हुन्छन् । **द्वादशीमा** विष्णुपरिवर्तनोत्सव मनाइन्छ यसदिन रात्रिकलमा पाण्डशोषचारले भगवान् विष्णुको पूजा गरेर प्रार्थना गर्नु-वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तये द्वादशी तव । पाश्वेन परिवर्तेस्व सुखं स्वपीहि माधव । **द्वादशीमा** वामन भगवान्को पूजा गर्ने विधान छ ।

पापांशः शनि९, राहुः७-केतु१,४सू २, ५म११, ८सू३,११सू४, ,
१५सू२, ①पूजा, शकाली कालापूर्व,

राशिप्रवेशः १५ शु ४,
१६ बु ६,

| | |
|----------------------|-----|
| २० भाद्र ८ सोम ४रा२३ | ७ |
| सू ४७१३४० | ४ |
| म ११२३४४४४ | ३रा |
| बु ४म५५२१९ | २ |
| व ८म२३१२९ | १ |
| श ३र२३१०११ | ११ |
| रा ८र८४३४१ | १२ |

| | |
|-----------------------|-----|
| २१ भाद्र १५ सोम ४रा४४ | ४ |
| सू ४१३४८५६ | ३रा |
| म ११२४१५१६ | २ |
| बु ४र८२४४० | १ |
| व ८३४५१७ | ११ |
| श ३०२२३० | १२ |
| रा २०२२३३ | १३ |

* पित्रोः श्राद्धं प्रकुर्वीत नैकादश्यां द्विजेभ्यः । द्वादश्यां तत्प्रकुर्वीत नौपवासादिर्न क्वचित् ॥ (बृहदारण्यक ११-३३)

श्री संवत् २०७७ श्री शके १९४२ ने सं १९४० शुद्ध आश्विन कृष्ण पितृपक्षः (जन्मागा) पा रं अ मृति उफा (सित ९ सन् २०२० । वक्षिणायन वर्षतः शरदृतुः, प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | बा. | ति. | घ.प. | वैशाख | न. | घ.प. | वैशाख | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | श.प.प.प.वैशाख | विनाश | कृत्य | सूर्यस्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादौ) | गतेक्रम ग्रह-संयार (बजेमा) |
|----|-----|-----|-------|-------|-----|-------|-------|------|--------|------|-------|--------|---------------|-------|-------|----------|-----|--|-----------------------------|
| १८ | वृ. | १ | १२/४९ | १०:५१ | पू. | ३६:२७ | २०:३९ | घ | २१/५५ | नै | ४४/४४ | मुद्गर | २०/३७=१३:५९ | ३१/३९ | ५:४४ | १८:२० | ३ | द्वितीयाश्राद्धं, तृज्वलीभूजा | १८ तिथि शुक्र. १५:४४ |
| १९ | शु. | २ | १६/४९ | १२:२९ | उ | ४२/४६ | २२:५१ | शु | २२/०१ | व | ४९/१० | ध्वज | २०/३७=१३:५९ | ३१/३९ | ५:४४ | १८:२९ | ४ | म ४९/१० उ, तृतीयाश्राद्धं, अग्न्योदय २६/२५ १६:३९ वजे | १८ पू का याःसूर्यः १७:२५ |
| २० | शु. | ३ | २१/३७ | १४:२३ | रे | ४९/०८ | १२:४ | ग | २३/१९ | व | ५४/०९ | धाता | ४९/०८=१:२४ | ३१/३९ | ५:४५ | १८:३८ | ५ | म ५४/०९, गालिला, ध प निवृत्ति ६९ द. | २१ पू का याःसूर्यः ३:५९ |
| २१ | आ. | ४ | २६/४४ | १६:२७ | अ | ५५/१० | ४:०१ | वृ | २४/२३ | कौ | ५९/१७ | आनन्द | मेघ | ३१/३९ | ५:४५ | १८:४७ | ६ | चतुर्थीश्राद्धं, इन्द्रध्वजपालन नामोच्चाया. | २२ हस्तश्री वृध १६:५३ |
| २२ | सो. | ५ | ३१/४५ | १८:२८ | भ | ६०/१० | समस्त | शु | २६/२२ | ग | ६०/०० | चर | मेघ | ३१/३९ | ५:४६ | १८:५६ | ७ | पञ्चमीश्राद्धं निजामतिसेवादिवसः, १ नूलायादृश्याकं ३५/६ | २५ पू का याःसूर्यः १४:२३ |
| २३ | मं. | ६ | ३६/१६ | २०:५७ | भ | १/४४ | ६:३२ | व्या | २७/२९ | ग | ४/०५ | मसल | १८/२३=१३:७ | ३१/३९ | ५:४६ | १८:५५ | ८ | म ३६/१६ उ, षष्ठीश्राद्धं, शिक्षादिवसः त्रिपु ३५/१६ उ. | २५ मृग २७ वर्ष राहु ज्ये |
| २४ | बु. | ७ | ३९/५७ | २१/४५ | क | ७/३७ | ८:४७ | ह | २८/०० | भ | ८/१३ | सिद्धि | वृष | ३१/३७ | ५:४७ | १८:५३ | ९ | म ८/१३, सप्तमीश्राद्ध, महासप्तमीव्रतसमाप्तिः | २६ उ का याःसूर्यः ०:३७ |
| २५ | वृ. | ८ | ४२/३३ | २२:४८ | रो | १२/११ | १०:३९ | व | २७/४२ | वा | ११/२३ | उत्पात | ४४/१६=२३:२६ | ३१/३७ | ५:४७ | १८:५२ | १० | अष्टमीव्रतश्राद्धञ्च गो.का पूजा, जीवस्वास्विकारत, जिनियापर्व, ६ | २८ पन २८ वया २ भौम ० ३९ |
| २६ | शु. | ९ | ४३/३६ | २३:२२ | सु | १५/४३ | १२:०५ | सि | २८/२८ | तै | १३/२४ | मानस | मिथुन | ३०/५९ | ५:४७ | १८:५१ | ११ | नवमीश्राद्ध, मातृनवमी, ७ वैशाखाना कृष्ण अष्टमी | २९ मार्गि राहु ८० |
| २७ | शु. | १० | ४४/०९ | २३:२५ | आ | १८/०१ | १३:०० | व्य | २९/१४ | व | १४/०८ | मद्गर | मिथुन | ३०/५५ | ५:४८ | १८:५० | १२ | म १४/०८ उ ४४/२५, दशमीश्राद्धं, | ३० चित्रश्री वृध ५:३७ |
| २८ | आ | ११ | ४४/१२ | २२:५७ | पु | १९/०५ | १३:२६ | व | २९/०० | च | १३/२६ | ध्वज | ३५/६=७:२३ | ३०/५९ | ५:४८ | १८:५० | १३ | इन्दिरा एकादशीव्रत एकादशीश्राद्धं, फर्पिङ्गहस्तिकारयात्रा, | ३० श्लेषाया शुक्र १४:६ |
| २९ | सो. | १२ | ४०/३३ | २२:०२ | ति | १८/४७ | १३:२४ | घ | १६/४८ | क्रौ | ११/४० | धाता | कर्कट | ३०/४७ | ५:४९ | १८:०८ | १४ | द्वादशीश्राद्धं बालदिवसः ८ कलियुगादि. | १ उका २ कन्यायासूर्यः १०:४० |
| ३० | मं. | १३ | ३७/१० | २०:४९ | रले | १७/४४ | १२:५५ | शि | ११/४२ | ग | ८/२८ | आनन्द | १७/४४=१२:५५ | ३०/४३ | ५:४९ | १८:०७ | १५ | म ३७/१० उ, भौमप्रदोषव्रत, त्रयोदशीश्राद्धं, मद्याश्राद्धं, ९ | वक्रमागदिवान्त. म व उ |
| ३१ | वृ. | १४ | ३२/१३ | १८:५९ | म | १५/३४ | १२:०३ | मि | ५/१५ | भ | ५/०७ | चर | मिह | ३०/३९ | ५:५० | १८:०५ | १६ | म ५/१५, चतुर्दशीश्राद्धं, शस्त्रादिभिर्हत्ताना चतुर्दशीश्राद्धं, ६ | वृ मा उ.प. वृ ३१ |
| १ | वृ. | ३० | २७/४२ | १६:५९ | पू | १२/३७ | १०:५३ | शु | ५/२/१५ | च | ५/१५ | गद | २६/४६=१६:२३ | ३०/३९ | ५:५० | १८:०४ | १७ | दशश्राद्धं, निशी/हलोवानं पितृविसर्जनं, कन्यायामक १२/४, ७ | मा उ शु मा उ पू. |

अथ महालयश्राद्धनिर्णयः कन्याश्रिमा सूर्य मरका पक्षमा पितृका निमित्त श्राद्धपूर्वक तर्पण श्राद्धसिद्धिदान गर्तु नगरे धन, पुत्रनाश हन्तु या आप्ता दिवगत पितृहस्तप्रतिको सम्मान र कृतज्ञता पनि हो । श्राद्ध काल निर्णयः प्रातःकालमा नान्दी श्राद्ध, पूर्वान्धकालमा दैविक नित्यश्राद्ध, अपरान्ध कालमा पार्वण महालयः र एकापार्वण पितृपक्षमा नै पने तिथि) श्राद्ध, मध्याह्नकालमा एकादिष्ट तिथि) श्राद्ध गर्तुपदंछ । तीर्थस्थलमा पुगर गरिने तीर्थ श्राद्धमा समयको बन्धन नहुने वचन छ । श्राद्ध विघ्न निर्णयः- श्राद्धविघ्ने समुत्पन्ने अवज्ञाने मृते इति एकादश्यात् कन्या कृष्णपक्ष विशेषतः ॥ *
अज्ञानवशा तिथि यात्रा नभएर आदि कने कारणले श्राद्ध गर्न छुटेकोमा एकादशीमा गर्तु । जुठो, मृतकले रोकिएको श्राद्ध चोखिएपछि गर्तु । एकादिष्ट श्राद्ध अर्पणिक, पत्नी रजस्वला, गर्भीणी भए पनि गर्तुहुन्छ भने महालयासोह)श्राद्ध सपत्निक नै गर्तुपर्छ, पत्नी रजस्वला भए चोखिएपछि गर्तु, गर्भीणी भए सिद्धिदान मात्र गर पनि हुन्छ । श्राद्धग्रहचपूषाणि अगस्त्य भृङ्ग-राजञ्च तुलसी शतपत्रिका । चम्पक निल पुष्पञ्च पडने पितृवल्लभा ॥ श्राद्धे निषिद्ध पुषाणि. केतकी करवीरञ्च वकुल कुन्दकं तथा पाटली चैव जाती च श्राद्धे यत्नेन वर्जयेत्॥

१ नलाशनेचहेपूजा जुलाखलङ्गा चन्दननाथलिङ्गस्थानम्
२ आश्विनसकान्तिः, विश्वकर्मापूजा, वास्तुदिवस, राशिप्रवेशः १ सु ६, २५ रा २ कं द
पापरा. शनि ९, राहु ७-केतु १, १८ सु ६, २९ सु ७, २४ सु ८, २४ राहु ६-केतु १२, २८ सु ९, २८ म १०, १ सु १०.
२२ भाद्र २९ सोम ४२/३७
गु ४/२०/४५/३९ ५८/१२
म ११/२४/३३/३० ५१/२८
बु ५/१०/२४/३३ ९९/४४
वृ ८/२४/४८/३६ १/२४
शु ३/८/४४ ६६/४९
श ८/२८/६४/२ २/९
रा २/०/१२/४ ३/११
२३ भाद्र २९ सोम ४२/२९
सु ४/२७/३४/४ ५८/२७
म ११/३३/१०/४४ १/२९
बु ५/२१/२७/४ ८९/२९
वृ ८/२४/४९/३६ ०/१
शु ३/१५/४६/३९ ६/७/२२
श ८/२७/४५/३० १/२४
रा १/२२/४५/२ ३/११

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. स. १९४० अधिक आश्विन शुक्ल पक्ष (अनलाश्व) मा उफा म उपा उभा (सित ९ अक्ट १० सन् २०२०) दक्षिणायन शरदृत. प्रमादीनामकः सवत्सरः

| ग. | बा. | ति. | घ.प. | बजेसम | न. | घ.प. | बजेसम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. घ.प. बजेसम | सिन्धुमान | सूर्यय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादौ) | गतेक्रम ग्रह-संख्या (बजेमा) |
|----|-----|-----|-------|-------|------|-------|-------|------|-------|----|-------|-----------|------------------|-----------|--------|-----------|-----|---|------------------------------------|
| १ | शु | १ | २२।१८ | १४.४६ | उ | १।०३ | ९.२८ | शु | ४४।४७ | वा | ४९।२३ | शुभ | कल्या | ३०।३१ | ५.५१ | १८.०३ | १८ | चन्द्रादयः अधिकमासापूषदानमन्यनारायणमेलारम्भश्च. | ४ उ फा या २०.३२ |
| २ | शु | २ | १६।२२ | १२.२४ | ह | ५।०५ | ७.५३ | ब्र | ३७।०६ | तै | ४३।२० | मृत्यु | ३३।१९=१९.४ | ३०।२७ | ५.५१ | १८.०२ | १९ | द्विपु. ५।५८. १६।२२ या, संविधानविवसः | ४ तुला वध ४.११ |
| ३ | आ | ३ | १०।१६ | ९.५८ | चि | ०।५५ | ५.३३ | ऐ | २९।१९ | व | ३७।१४ | पद्म | तुला | ३०।२३ | ५.५२ | १८.०१ | २० | म ३७।१४ उ | ८ उ फा या ६.१५ |
| ४ | सो | ४ | ५।१४ | ५.३३ | वि | ५.२४ | २.५९ | वै | २९।३९ | व | ३९।१६ | मित्र | ३६।४५=२९.२२ | ३०।१९ | ५.५२ | १८.०० | २१ | म ४।१३ या, विश्वशान्तिदिवसः. | १० मागी शान्तिः १६.२९ |
| ५ | मं | ५ | ५.३० | ३.०६ | अनु | ४९।१६ | १.३५ | वि | ५४।१३ | कौ | २५।४० | वज्र | वृश्चिक | ३०।१५ | ५.५२ | १७.५८ | २२ | तुलायादश्याकं ८९।३८=१७.४३ (बज), | ११ व्याख्या वध ८.४२ |
| ६ | बु | ७ | ४८।२० | १.१३ | ज्ये | ४६।२० | ०.२५ | प्री | ७।१२ | ग | २०।३६ | ध्वाक्ष | ४६।२०=०.२५ | ३०।१९ | ५.५३ | १७.५७ | २३ | म ६८ २० उ., | १० चित्रशक्र १.५४ |
| ७ | बु | ८ | ४४।२४ | २३.३९ | मू | ४४।२२ | २३.३४ | आ | ५.४६ | म | १६।१४ | शुभ | धन | ३०।०६ | ५.५३ | १७.५६ | २४ | म १६।१४ या, अष्टमीव्रत, गो का पूजा | १० गृह शक्र. ५.० |
| ८ | शु | ९ | ४९।२६ | २२.२८ | प | ४३।०१ | २३.०६ | गो | ४९।५६ | बा | १२।४६ | प्रवर्द्ध | ५७।५३=५.३ | ३०।०२ | ५.५४ | १७.५५ | २५ | | ११ हस्तमेषस्य १५.४६ |
| ९ | शु | १० | ३९।३५ | २१.४४ | उ | ४२।५५ | २३.०५ | अ | ४५।४९ | तै | १०।२१ | रक्ष | मकर | २९।५८ | ५.५४ | १७.५४ | २६ | | १२ हस्तमेषस्य १७.४३ |
| १० | आ | ११ | ३८।५६ | २१.२९ | श्र | ४४।०२ | २३.३२ | सु | ४२।४० | व | ९।०५ | गद | मकर | २९।५४ | ५.५५ | १७.५३ | २७ | म ९।५३ उ ३८।५६ या, पद्मिनी एकादशी व्रतम् द्विपु. ६४।२३ | वक्रमागदियस्त. म व उ, |
| ११ | सो | १२ | ३९।३५ | २१.४५ | घ | ४६।२३ | ०.२८ | घृ | ४०।३९ | व | ९।०६ | शभ | १५।२९=११.५६ | २९।५० | ५.५५ | १७.५१ | २८ | धर्पत्र १५।२, विश्ववर्षयर्तनदिवसः. | वृ मा उ प, वृ मा उ |
| १२ | मं | १३ | ४१।१९ | २२.३२ | श | ४९।५८ | १.५५ | शु | ३९।२९ | कौ | १०।२३ | मृत्यु | कुम्भ | २९।४६ | ५.५६ | १७.५० | २९ | भौमप्रदोषव्रतम्, | श मा उ प ग १० मा उ |
| १३ | बु | १४ | ४४।३८ | २३.४७ | पू | ५४।४० | ३.४८ | ग | ३९।०६ | ग | १२।५५ | पद्म | ३८।२३=२९.१८ | २९।४२ | ५.५६ | १७.४९ | ३० | म ४४।३८ उ., | पाषाण शान्ति, गृह-कन १- ६५ ११.८५२. |
| १४ | व | १५ | ४८।५५ | १.२७ | उ | ६०।०० | समस्त | वृ | ३९।३८ | म | १६।३४ | छत्र | मीन | २९।३८ | ५.५७ | १७.४८ | ३१ | म १६।३४ या, पूर्णिमाव्रतं, (अनलापन्ति, अक्टूबर १० ना ३९.) | ११ सूर्य १२ म ९.१४ मूर |

सर्वे स्तरका पाठ्यपुस्तक, विभिन्न स्टेशनरी सामग्री, पात्रों धार्मिक तथा ज्योतिषका पुस्तकहरूका लागि सम्पन्नहोस्

राधा स्टेशनरी इलेक्ट्रोडा तनहुँ, सम्पर्क:- ९८५६०३३३८४

अधिकमासकर्तव्य :- यसवर्ष आश्विन २ गतेदेखि ३० गतेसम्म अधिकमास (पुरुषोत्तममास) परेको छ यस मासमा अन्य शुभकार्यहरू वर्जित हुन्छन् । यस मासमा पुरुषोत्तम भगवानको पूजन माहात्म्य श्रवण यथाशक्ति अपूप मालपूवा) दानको सहिमा छ । अपूपदान गर्दा पुरुषोत्तम भगवानका निम्नलिखित ३३ नामले ३३ वटा मालपूवा कांशको थालीमा राख्ने अनि अर्को थालीले छोप्ने र दुवैलाई पहेंलो कपडाले छोप्ने त्यसमाथि कांशको कचौरामा घ्यू कालो तिल र स्वर्णप्रतिमा राखी भगवानका ३३ नामले पूजन गरी दान गर्ने **उक्त नामहरू-** १ ओं विष्णवेनमः, २ ओं जिष्णवेनमः, ३ ओं महाविष्णवेनमः, ४ ओं हरयेनमः, ५ ओं कृष्णायनमः, ६ ओं अधाक्षजायनमः, ७ ओं केशवायनमः, ८ ओं माधवायनमः, ९ ओं रमायनमः, १० ओं अच्युतायनमः, ११ ओं पुरुषोत्तमायनमः, १२ ओं गोविन्दायनमः, १३ ओं वामनायनमः, १४ ओं श्रीशायनमः, १५ ओं श्रीकण्ठायनमः, १६ ओं विश्वमाक्षिणेनमः, १७ ओं नागयणायनमः, १८ ओं मधुरिपवेनमः, १९ ओं अनिरुद्धायनमः, २० ओं त्रिविक्रमायनमः, २१ ओं वामदेवायनमः, २२ ओं जगद्वायनमः, २३ ओं अन्तायनमः, २४ ओं शेषशायिनेनमः, २५ ओं संकर्षणायनमः, २६ ओं प्रद्युम्नायनमः, २७ ओं वैद्यारयेनमः, २८ ओं विश्वनोमूखायनमः, २९ ओं जनार्दनायनमः, ३० ओं धरावासायनमः, ३१ ओं ब्रह्मणेनमः, ३२ ओं भास्करायनमः, ३३ ओं श्रीपतयेनमः ॥ यी नाममंत्रले देशकाल अनुसारको संकल्प गरी योग्य ब्राह्मणलाई दान गर्नु र विष्णुरूप ब्राह्मण देवताको निम्न सन्ताने प्रार्थना गरी

भोजनविले प्रसन्न तुल्याउनु। प्रार्थनामंत्रः - विष्णुर्हृषिसहस्राक्षः सवपाप प्रणाशनः । अपूपान्नं प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु । नारायण जगद्दिन भास्करप्रतिरूपकः । दानेनानेन पुत्रपञ्च संपदश्च विवर्धय । यस्य हस्तेगदाचक्रं गरुडो यस्य वाहनम् । शर्बकरतले यस्य समे विष्णुः प्रसीदतु ॥

२४ आश्विन ५ सोम ४ रा २९

सु ५।४२।१५ ५.८४३

म ११।२१।४३७ १।४९

बु ६।०५।७४ ७.२२५

व ८।२४।४१५ १।२५

श ३।२३।५४७ ६.८५३

श ८।२७।४९३ ०।३८

रा १।२९।२५४ ३।११

२५ आश्विन १ सोम ६ रा १२

सु ५।११।६१५ ५.८५९

म ११।१९।३४४ ३।५४

बु ६।०५।८२९ ४।५२

व ८।२४।८५३ ३।४७

श ४।२१।३३ ६.९४५

श ८।२७।४९३ ०।३८

रा १।२९।२५४ ३।११

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने सं ११४० अधिक आश्विनकृष्णपक्षः (अनलागा) पा उभा.रे.म.ति.ह.चि (अक्टू.१० सन् २०२०) दक्षिणायन शरदृतः, प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | बा. | ति. | घ.प. | वर्जसम | न. | घ.प. | वर्जसम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगाः च.रा.घ.प.=वर्जसम | विनामन | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादौ) | गतेकृष्ण ग्रह-सञ्चार (वर्जमा) |
|----|-----|-----|------|--------|------|------|--------|------|------|----|------|------------------------|------------|----------|-----------|-------|---|-------------------------------|
| १६ | शु. | १ | ५३३६ | ३२४ | उ | ०१७ | ६०४ | धु | ४०४४ | वा | २१०५ | ध्वज | मीन | २९३३ | ५.५७ | १७.४७ | २ विश्व आहिंसा दिवसः, | १८ हस्तमे ३मूयः १०.१८ |
| १७ | श. | २ | ५८४८ | ५.२९ | रे | ६३३ | ८३५ | व्या | ४२१० | तै | २६१० | धाता | धनि३=८.३५ | २९.३० | ५.५८ | १७.४६ | ३ ध प निवृत्ति. ६.३३ | २० वकी वृध. २३.३३ |
| १८ | आ | ३ | ६०१० | समस्त | अ | १३०५ | ११.१२ | ह | ४३३८ | व | ३१२४ | आनन्द | मेघ | २९.२६ | ५.५८ | १७.४५ | ४ भ. ३१.२४ उ. | २१ वस्तुमे ४मूयः १९.१८ |
| १९ | सो | ४ | ६३४५ | ७.३३ | भा | १९१६ | १३.४५ | व | ४४१४ | व | ३६१९ | चर | ३५५७=२०.२२ | २९.२९ | ५.५९ | १७.४३ | ५ भ. ३५.५५ | २२ पूकायांशकः १४.२७ |
| २० | मं | ५ | ६८३२ | ९.२४ | कृ | २५१३ | १६.०५ | सि | ४५१२ | कौ | ४०३३ | गद | वृष | २९.१७ | ५.५९ | १७.४२ | ६ मंगलचतुर्थी व्रतम्, | २४ चित्रमे १मूयः ४.७ |
| २१ | बु. | ६ | ७२१९ | १०.५५ | रो | ३०१० | १८.०३ | व्य | ४५१४ | ग | ४३४९ | शुभ | वृष | २९.१३ | ६.०० | १७.४१ | ७ | २४ पुन उमा इभोम २३.३५ |
| २२ | बु. | ७ | ७५१० | १२.०१ | म | ३३१६ | १९.३३ | व | ४४१० | भ | ४५५५ | मृत्यु | २१०=६.५२ | २९.१०९ | ६.०० | १७.४० | ८ भ १५.० उ ४५.५५ या. | २७ प य वृध २१.१५ |
| २३ | शु. | ८ | ७८११ | १२.३६ | आ | ३६३१ | २०.३७ | प | ४२१० | वा | ४६४४ | पद्म | मिथुन | २९.१०५ | ६.०१ | १७.३९ | ९ अष्टमीव्रतम्, | २८ चित्रमे २मूयः १२.४७ |
| २४ | श. | ९ | ८११२ | १२.४९ | पुन | ३७३२ | २१.१० | शि | ३९१० | तै | ४६१७ | छत्र | २२३८=१५.५ | २९.१०१ | ६.०२ | १७.३८ | १० गो का पूजा, | ३० पुन चित्रमे वृधः २०.२३ |
| २५ | आ | १० | ८४१३ | १२.९६ | ति | ३७५९ | २१.१४ | सि | ३५१० | व | ४४३६ | श्रीवत्स | कर्कट | २८.५७ | ६.०२ | १७.३७ | ११ भ. ४४.३६ उ. | पापाशा शनिः ९, राहु ६- |
| २६ | सो | ११ | ८९१४ | १२.२२ | शुके | ३७१० | २०.५१ | सा | ३०१० | व | ४५४८ | सौम्य | ३७१०=२०.५१ | २८.५३ | ६.०३ | १७.३६ | १२ भ १३.२० या, | केतू १२.१८ मू ३, २५ मू ६ |
| २७ | मं | १२ | ९०१५ | १०.०४ | म | ३५१० | २०.०४ | श | २४१२ | कौ | ३८१० | काल | सिंह | २८.४९ | ६.०३ | १७.३५ | १३ परमा एकादशी व्रतम्, | २६ मू ५.२४ म ८.२८ मू ६ |
| २८ | बु. | १३ | ९११६ | ८.२३ | पू | ३२१५ | १८.५८ | श | १७१५ | ग | ३३१५ | स्थिर | ४६१७=०.३८ | २८.४५ | ६.०४ | १७.३४ | १४ प्रदोषव्रतम्, ① निशी तथा हलो वार्ने, | बु २० व २७ अ.प. |
| २९ | बु. | १४ | ९२१७ | ६.२५ | उ | २८१५ | १७.३६ | ब्र | १०१५ | भ | २८१० | मातङ्ग | कन्या | २८.४१ | ६.०४ | १७.३३ | १५ भ ०५.१ उ २८.१० या, (अनलाचः द्वेपूजा). | वृ. मा उ., श. मा. उ. पू. |
| ३० | शु. | १५ | ९३१८ | ४.२३ | ह | २४१५ | १६.०३ | ऐ | ५४१८ | च | २२१७ | अमृत | ५२५२=३.१४ | २८.३७ | ६.०५ | १७.३२ | १६ दश्यादं अधिकमासापुपदानमत्यनारायणमेलासमाप्तिः ① | श मा उ. |

अध्याधमास-विशेषक सौरवर्षको मान ३६५ दिन, १५ घटी, ३१ पल, तथा ३० विपल हुन्छ भने चान्द्रवर्षको मान ३५४ दिन, २२ घटी, १ पल, २३ विपल हुन्छ यस प्रकार चान्द्रवर्ष सौर वर्षभन्दा १० दिन, ५ घटी ३० पल, ७ विपल कम हुन्छ। यसको पूर्ति र दुवै मासमा सामञ्जस्यका निमित्त लगभग प्रत्येक तेस्रो वर्षमा अधिक चान्द्रमास पर्दछ भने एक पल्ट १४१ वर्षपछि र अर्कोपल्ट १९ वर्षपछि अथवा चान्द्रमासको व्यवस्था गरिएको हो। जून चान्द्र महिनामा सूर्य सकान्ति पडैन त्यो अधिकमास हो भने एकै चान्द्रमासमा दुई सूर्यसकान्ति परेमा अथवा मास हुन्छ। व्यवहारमा अथ र अधिक दुवै मासलाई मलमास भनिन्छ। असकान्तिमासोधिमास-स्फुट स्याद् द्विसकान्तिमासः अथाध्यः कदाचित्- सिद्धान्तशिरोमणि। अथमास केवल कार्तिक मार्गशीर्ष तथा पौष मासमा मात्र हुन्छ। अथमास परेको वर्षमा अधिकमास पनि अवश्य पर्दछ। यस वर्ष संवत् २०७७-मा अधिकमास परेको छ भने अथमास संवत् २१८१ तिर पर्ने छ।

योगिनी दशाक्षर वानका सन्वत्समा विभिन्न भौगोलिक स्थान अनुसार विभिन्न-विभिन्न महादशाहरूको फलाफल प्राप्त हुने तथ्य अनुभव सिद्ध र शास्त्रोपलब्ध पनि देखिन्छ। यथा विन्ध्यपर्वतदेखि दक्षिणमा अष्टोत्तरी, विन्ध्यउत्तरको मैदानी भागमा विशोत्तरी र पहाडी भागमा त्रिभागी दशाको फलाफल विशेष विचार्य ह्य वर्तमान समयमा योगिनीमहादशाको फलाफल त्वनि र पत्यक्ष अनुभवसिद्ध देखिन्छ।

योगिनीमहादशाको अनिष्ट शान्तिक न्निमित्त धनका अ-आफ्ना तान्त्रिकमन्त्रको जप र आफ्ना श्वामीग्रहका अनुसारका वस्तुहरूको दान गर्नुपर्छ। योगिनीका श्वामी यसपकार छन् -मङ्गलाको चन्द्र, पिङ्गलाको सूर्य, धान्याको वृहस्पति, भामरीको मङ्गल, माद्रिकाको बुध, उल्काको शनि, सिद्धाको शुक्र, संकटाको राहु, विकटाको केतु। (संकटाको दशमान ८ वर्षलाई ४ वर्षमा बाडेर सक्दा विकटा हुन्छन्)।

| सं. | आश्विन १९ सोम ४ रा ३ | सं. | आश्विन २६ सोम ४ रा ५ |
|-----|----------------------|--------|----------------------|
| सु. | ५.१८.१०.६ | ५.१९.५ | |
| मं. | ११.१७.१५.७.२३ | ४.२९ | |
| बु. | ६.११.११.२५ | ४.२५ | |
| वृ. | ८.२५.१२.३४ | ४.६ | |
| श. | ४.१०.१२.३५ | ७.०.३१ | |
| श. | ८.१७.१५.२.२८ | ०.५.६ | |
| रा. | १.२८.१६.२३ | ३.११ | |

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने सं ११४० शुद्ध आश्विन शुक्ल दुर्गापक्ष (कौलाष्टव) पा नि ज्ये उषा शत उभा (अक्टूबर १० सन् २०२०) दक्षिणापन्न, शरदृतः, प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | बा. | ति. | घ.प. | वजेसम् | न. | घ.प. | वजेसम् | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | व.रा. घ.प. = वजेसम् | दिनमन | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादौ) | मतेकम ग्रह-संख्या (वजेमा) |
|----|-----|-----|------|--------|------|-------|--------|------|-------|-----|-------|----------|---------------------|-------|----------|-----------|-----|--|---------------------------|
| १ | श | १ | ४३२८ | २३.२९ | चि | २०४६ | १४.२४ | वि | ४७१५ | किं | १६.२९ | काण | नूला | २८.३३ | ६.०६ | १७.३१ | १७ | मातामहश्राद्ध, घटस्थापना, नवग्रहाम्भ, नलायम्भ, नूलायामकः ३५.७७ | १. ३३ नूलायामकः २१.१६ |
| २ | आ | २ | ३७२८ | २५.०५ | स्वा | १६.३३ | १२.४३ | मी | ४०११ | बा | १०.२६ | लम्ब | ५८.३२ = ५.३१ | २८.३९ | ६.०६ | १७.३० | १८ | चन्द्रोदयः, विष्णु १६.३३ उ ३.३२ दया, ⑥ कार्तिकसंक्रान्तिः, | ३. ३३ नूलायामकः १९.४३ |
| ३ | तो | ३ | ३१४४ | १८.४८ | वि | १२.३२ | ११.०७ | आ | ३२.३७ | ते | ५.३३ | मित्र | वृश्चिक | २८.३९ | ६.०७ | १७.२९ | १९ | म १९.३२ उ, ② (असंचालः), विष्णु १५.३३ उ, | ४. ३३ नूलायामकः १४.२७ |
| ४ | म | ४ | २६२७ | १६.४२ | अन | ८.४२ | ९.४० | सौ | २५.२४ | ब | ५.४० | वज्र | वृश्चिक | २८.३९ | ६.०७ | १७.२८ | २० | म २६.२७ दया, मंगलचतुर्थी व्रतम् ① सप्तमराष्ट्रसंघदिवसः, | ५. ३३ नूलायामकः १४.२९ |
| ५ | बु | ५ | २१४७ | १४.५१ | ज्ये | ५.४७ | ८.२७ | शो | १८.४२ | कौ | ४.१४ | ध्वाक्ष | ५.४७ = ८.२७ | २८.३९ | ६.०८ | १७.२७ | २१ | उषाश्रालालताव्रत, पंचमीभैरवयात्रा • घ प निवर्तिः २३.३२, | ६. ३३ नूलायामकः १३.४५ |
| ६ | वृ | ६ | १७१५ | १३.१९ | मृ | ३.२७ | ७.३९ | अ | १२.३७ | ग | ४.६२ | धूम्र | घन | २८.३९ | ६.०९ | १७.२६ | २२ | विवर्तिमन्त्रण सरस्वत्यावाहनम्, ① शमीदशन, खड्गयात्रा-चाल, | ७. ३३ नूलायामकः १२.४३ |
| ७ | शु | ७ | १५१० | १२.११ | पू | २.०९ | ६.५८ | मृ | ७.१९ | भ | ४.४० | प्रवद्ध | १६.४० = १२.५३ | २८.३९ | ६.०९ | १७.२५ | २३ | म १२.४७ उ ४.४३ दया, नवपत्रिकाप्रवेश, फलपाति कालरात्रि, ① | ८. ३३ नूलायामकः १२.४५ |
| ८ | श | ८ | १३१८ | ११.२९ | उ | १.३९ | ६.५० | गं | ५.६३ | तै | ४.३० | गद | ३३.२१ = १९.३१ | २८.३९ | ६.०९ | १७.२४ | २४ | अष्टमीमहाष्टमीव्रतञ्च, गोरखकालीपूजा, कुलछिन्त्यय, ① | ९. ३३ नूलायामकः १२.४५ |
| ९ | आ | ९ | १२१६ | ११.१७ | श्र | २.२८ | ७.१० | गं | ५.६३ | तै | ४.३० | गद | ३३.२१ = १९.३१ | २८.३९ | ६.०९ | १७.२३ | २५ | महानवमी, मन्वादिः बौद्धावतारः, म्याक्वटयाक्व, ४ प प्र३३२९, | १०. ३३ नूलायामकः १२.४५ |
| १० | तो | १० | ११३९ | ११.३६ | घ | ४.३२ | ८.०० | वृ | ५.४२ | ब | ४.४२ | शम | कम्भ | २७.४८ | ६.११ | १७.२३ | २६ | म. ४.४२ उ, देवीविसर्जन, विजयादशमी, दशैटीका, ① | ११. ३३ नूलायामकः १२.४५ |
| ११ | म | ११ | १०३७ | १२.२५ | श | ७.४९ | ९.२० | घृ | ५.४४ | ब | ४.४० | मृत्यु | ५.६५ = ४.३८ | २७.४८ | ६.१२ | १७.२२ | २७ | म. १.४३ उ, पापाहुशा एकादशी व्रत, अन्नपूर्णयात्रा ② | १२. ३३ नूलायामकः १२.४५ |
| १२ | बु | १२ | १०४७ | १३.४३ | पू | १२.१७ | ११.०७ | व्या | ५.४० | कौ | ५.०४ | पय | मीन | २७.४९ | ६.१३ | १७.२१ | २८ | प्रदोषव्रतं, ⑦ दानारम्भः, कति पुष्टि, योग्यमतविवरणम् | १३. ३३ नूलायामकः १२.४५ |
| १३ | वृ | १३ | १०१९ | १४.२५ | उभा | ११.४३ | १३.१८ | ह | ५.४५ | ग | ५.४२ | छत्र | मीन | २७.४७ | ६.१३ | १७.२० | २९ | अर्घाखांचीमा सरायपर्व, ⑧ वृश्चिकदश्याकः ८.४८ (९.४४ बजे), | १४. ३३ नूलायामकः १२.४५ |
| १४ | शु | १४ | १०१८ | १७.२५ | रे | २३.४२ | १५.४७ | व | ५.७१ | घ | ६.०० | श्रीवत्स | २३.४२ = १५.४७ | २७.४८ | ६.१४ | १७.१९ | ३० | म २७.४८ उ, क्रोडाग्रतपूर्णमाव्रत, अखिलवलीपुर्ति, सिधया, • | १५. ३३ नूलायामकः १२.४५ |
| १५ | श | १५ | १०१६ | १९.३३ | अ | ३०.२२ | १८.२३ | मि | ५.८३ | म | ०.३५ | सौम्य | मेघ | २७.४० | ६.१५ | १७.१९ | ३१ | म. ०.३५ दया, पूर्णिमाव्रतं, कार्तिकसन्तानारम्भः, आकाशदीप ③ | १६. ३३ नूलायामकः १२.४५ |

विजया दशमीमा टीकाका लागि राम्रा वार-बेलाहरू- विहानको ६:११ देखि ७:३५ वजेसम्म अमृतबेला, ८:५९ देखि १०:०३ वजेसम्म शुभवेला, अभिजित मूर्हत् ११:२४ वाट १२:९ सम्म रहने छ यो अत्यन्त शुभ समय हो । चन्द्रमा पश्चिम दिशामा छन अतः पश्चिममुख गरी टीका थाप्नु शुभ छ ।

अथ दुर्गास्तुष्टानम्- प्रतिपदामा घटस्थापना गरी नवमीसम्म दुर्गापूजा एकीचरवद्धिले कुमारीपूजा, महाकाली महालक्ष्मी, महासरस्वतीपूजा, सप्तशतीपाठ नक्तभोजन दशमीमा विमर्जन गरी प्रसाद (टीका) लगाउनाले वर्षभर सुखशान्ति भिल्लछ । जगन्माता भगवती जीववलीले मात्र खुशी हुने होइनन्, श्रद्धाभक्तिले मात्र पनि प्रसन्न हुनुहुन्छ । स्मार्तबलिदानम्- कुम्भाण्डलारीकेलज्ज श्री फलज्वेसुमेव च । तस्मै वैष्णवे वैष्णवैः कृत्वा छेदयेच्छुभिकामिदिः । एष स्मार्त बलिं प्रोक्तः धर्मज्ञास्त्रानुगामिभिः । यस्य यत्राधिक्यभक्तिस्तेन पुष्यन्ति देवताः ।

औषधिसेवनमन्त्रः

अच्युतानन्दगोविन्द नामोच्चारणभेषजान् । नश्यन्ति सकलारोगाः सत्यसत्यवदाम्यहम् ॥ शन्यन्तिर्विकोदायः काशीगजश्च वीर्यवान् । नकुलः सहदेवश्च पञ्चैते व्याधिघातकाः ॥ शरीरञ्च नवच्छिद्रं व्याधिग्रस्तं कलेवरम् । औषधं जान्मवीतीय वैद्यो नारायणो हरिः ॥ अच्युतानन्द गोविन्द विष्णो धन्वन्तरि हरे । वासुदेवाखिलानस्य रोगान् नाशय नाशय ॥

पाषाणाः शनि ९, राह ६-केतु १२, म ८, १५ उ, ४ म ८, ८ स ९.११ स १०.१४ स ११,

राशिपक्षे १ स ७, ६ शु ६, १० बु ६,

| | | | | |
|--------------------------|--|--|--|--|
| २८ कार्तिक ३३ सोमे ४१.४४ | | | | |
|--------------------------|--|--|--|--|

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. ११४० कार्तिककृष्णपक्ष (कौलागा)पा मति ह वि (नव ११ सन् २०२०) दक्षिणायन, शरदृतुः प्रमादीनामकः सवन्तरः

| ग. | जा. | ति. | घ.प. | वृजसम | न. | घ.प. | वृजसम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | घ.प. | वृजसम | विनमान | सूर्यव्य | सूर्यस्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादी) | गतेक्रम ग्रह-सञ्चार (वृजसम) |
|----|-----|-----|-------|-------|------|-------|-------|------|-------|-----|-------|-----------|-------------|-------|--------|----------|----------|--|--|-----------------------------|
| १६ | आ. | १ | ३८२९ | २१:३९ | भ | ३६:४७ | २०:५८ | व्य | ५९:४८ | वा | ५५:४४ | काल | ५३:२०=३:३५ | २७:३६ | ६:१५ | १७:१८ | १ | त्रिपु २८:२९ उ., नव ११ ता.३० | १९ मार्गि भौम १०:५३ | |
| १७ | सो. | २ | ४३१० | २३:३२ | क | ४२:४३ | २३:२१ | व | ६०:०० | तै | १०:५४ | स्थिर | वृष | २७:३३ | ६:१६ | १७:१७ | २ | | १६ तुलायां बुधः २:२ | |
| १८ | मं. | ३ | ४७१० | १:०५ | रो | ४७:५० | १:२५ | व | ०:२८ | व | १५:११ | मानङ्ग | वृष | २७:२९ | ६:१७ | १७:१६ | ३ | भ.१५:११ उ. ४:७० या, | १८ स्वात्या ४ सूर्यः १३:१८ | |
| १९ | बु. | ४ | ४९:४४ | २:११ | म् | ५१:५४ | ३:०३ | प | १:३५ | व | १८:३० | अमृत | २०:०=१४:१७ | २७:२६ | ६:१७ | १७:१६ | ४ | ७ काकवलि, धनत्रयोदशी, (धन्वन्तरीजयन्ती), (स्वन्तिचहै पूजा), | २१ विशाखायां सूर्यः २०:५२ | |
| २० | वृ. | ५ | ५१:५४ | २:४८ | आ | ५४:४७ | ४:१३ | सि | ५७:४८ | कौ | २०:३८ | काण | मिथुन | २७:२२ | ६:१८ | १७:१५ | ५ | | २४ विशाखायां सूर्यः ४:१७ | |
| २१ | शु. | ६ | ५१:२७ | २:५४ | पु | ५६:२४ | ४:५२ | मा | ५४:५८ | ग | २१:२९ | लुम्ब | ४१:६=२२:४५ | २७:१९ | ६:१९ | १७:१४ | ६ | भ ५१:२७ उ | २५ चित्रशेखरः २०:५१ | |
| २२ | श. | ७ | ५०:२४ | २:२९ | ति | ५६:४७ | ५:०३ | शु | ५१:०९ | भ | २१:०४ | मित्र | कर्कट | २७:१५ | ६:२० | १७:१४ | ७ | भ २१:४५ या, | २६ स्वात्या बुधः ६:४७ | |
| २३ | आ. | ८ | ४८:१० | १:३६ | श्ले | ५६:०३ | ५:४५ | शु | ४६:२४ | वा | १९:२४ | वज्र | ५६:३=४:४५ | २७:१२ | ६:२० | १७:१३ | ८ | अष्टमीव्रतं, राधाष्टमी, गोरखकालीपूजा, | २८ विशाखायां सूर्यः ११:३४ | |
| २४ | सो. | ९ | ४४:५२ | ०:१८ | म | ५४:१७ | ४:०४ | ब्र | ४०:४९ | ते | १६:३७ | धर्वा | सिंह | २७:०९ | ६:२१ | १७:१३ | ९ | ७ श्रीमालिका, सुखराशि, निशीबाने, विश्वमधुमेहदिवसः, | २८ मकरे गुरु ११:४३ | |
| २५ | मं. | १० | ४०:४१ | २२:३८ | पू | ५१:३९ | ३:०२ | ऐ | ३४:३० | व | १२:५२ | धूम | सिंह | २७:०५ | ६:२२ | १७:१२ | १० | भ १२:५२ उ. ४:०४ या, फाल्गुनन्दजयन्ती, | २८ मकरे गुरु ११:४३ | |
| २६ | बु. | ११ | ३५:४६ | २०:४१ | उ | ४८:२० | १:४३ | वै | २७:३५ | व | ८:१७ | प्रवर्द्ध | ५६:१=८:४३ | २७:०२ | ६:२३ | १७:१२ | ११ | रमा एकादशीव्रतम्, ७ हलोबाने, म्हपूजा, ७ | ७ यस दिन मन्दा भिल्ल | |
| २७ | वृ. | १२ | ३०:१८ | १८:३१ | ह | ४४:३२ | ०:१२ | वि | २०:१३ | कौ | ५:३५ | रक्ष | कन्या | २६:५९ | ६:२३ | १७:११ | १२ | गोवत्सद्वादशी, प्रबोधव्रतं, यमदीपदानम्, | विन्ममा म्ह पूजा गर्ने परम्परा | |
| २८ | शु. | १३ | २४:२८ | १६:२२ | जि | ४०:२५ | २२:३४ | प्री | १२:३० | भ | ५१:३० | मुसल | १२:२९=११:२४ | २६:५६ | ६:२४ | १७:११ | १३ | भ २४:२८ उ. ५:१३ या, (कागतिहार), ७ | भएका समुदायले यसभन्दा | |
| २९ | श. | १४ | १८:२९ | १३:४९ | स्वा | ३६:११ | २०:५४ | आ | ५:३५ | च | ४५:३१ | मिद्धि | तुला | २६:५३ | ६:२५ | १७:१० | १४ | दर्शभाद्रपद नरक १४, प्रत्युष्यहस्मान्, (कुम्भतिहार), श्वपूजा, लक्ष्मीपूजा, ७ | भिल्ल अन्य दिनमा पनि म्ह | |
| ३० | आ. | १५ | १२:३३ | ११:२७ | वि | ३२:०६ | १९:१६ | श्री | ४९:०५ | किं | ३९:४२ | उत्पात | १८:५३=१३:४० | २६:५० | ६:२६ | १७:१० | १५ | स्नानदानावै अमावास्या, गो-वलिपूजा, (गाईमोर्खतिहार), ७ | पूजा गर्न सक्नुने छ । | |

आश्विनशुक्लपूर्णिमादेखि कार्तिक शुक्लपूर्णिमासम्म कार्तिक महिनामा व्रत, स्नान, आकाशदीप दानको विशेष महत्व छ, यसमासमा व्रतालुहरूले मासपर्यन्त वा सम्भव नभए भीष्मपञ्चक (शुक्ल एकादशीबाट पूर्णिमासम्म) द्विदल, साग, तेल आदि त्याग गरी सूर्यास्तपूर्व एकपटक मात्र भोजन गरी दुबै सन्ध्यामा आकाशबत्ती बाल्ने गर्दछन् अथ कार्तिकस्नान मन्त्रः- कार्तिकेहकरिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दनः। प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर मया सह ॥ इमं मन्त्रं समुच्चार्य मौनीस्नायाद् व्रती नरः। काकवलिदान मन्त्रः- ऐन्द्रवारुणवायव्यां याम्यां वै निष्कृतिस्तथा। वायव्यां प्रतिगृह्णन्तु मया दत्तं वलित्वियम् ॥ श्वबलिदान मन्त्रः- द्वौश्वानौ श्यामघवौ वैवश्वत कुलादभवौ। ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि रक्षतां पथि सर्वदा ॥ गाईको प्रार्थना गर्ने मन्त्रः- लक्ष्मीयां लोकपालानां धेनूरूपेण सन्ध्याता। घृतं ददाति यन्नार्थं मम पापं व्यपोहत् ॥

नरक चतुर्दशीमा दीप दानगर्ने मन्त्रः- दत्तो दीपश्चतुर्दश्या नरकप्रानये मया। चतुर्वर्त्तिसमायुक्ताः सर्वपापमनुत्तये ॥ सोही दिन मासको पातखाने मन्त्रः- नृदसर्वाणि पापानि नरकादर्शनं कुरु। प्राशनामि तव पत्राणि माषो देहि यशोबलम् ॥
बलिराजाको प्रार्थना गर्ने मन्त्रः- बलिराज नमस्तुभ्यं दैत्यदानववन्दित। इन्द्रशत्रोऽमरागते विष्णुसन्निधिकारक ॥
वक्रमार्गादयास्तः सं १६मा उ., बु.मा.उ.पू., वृ.मा.उ., शु.मा.उ.पू., श.मा.उ.

पाषाणाः शनिः ९, राहुः ६-केतुः १२, मंद, १८, सुपू २, २१ सू १, २४ सू २, २६ राहुः ५-केतुः ११, २८ सू ३, राशिपक्षेः १६ बु ७, २८ वृ १०,

३९ कार्तिक २४ सोमे ४१:८
सु ६:२३ ६:१२ ६:०३
म ११:१४ १२:२५ ९:४
वृ ६:५१ ११:१९ ५:४५
वृ ६:२९ १२:१८ ९:२६
श ५:२९ १२:४४ ७:३५
रा १:२६ ४:७८ ३:११

श्री सवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. ११४१ कार्तिकशुक्लपक्षः (कछलाश्व) पाज्ये. उषा रे २ (नव. ११ सन् २०२०) दक्षिणायन हेमन्तर्तः, प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | बा. | ति. | घ.प. | वजेसम | न. | घ.प. | वजेसम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | व.स. | घ.प. | वजेसम | विनमान | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादी) | गतेक्रम ग्रह-सञ्चार (वजेमा) |
|----|-----|-----|-------|-------|------|-------|-------|------|-------|----|-------|----------|-------------|-------|-------|--------|----------|--|-------------------------|--|-----------------------------|
| १ | सो. | १ | ६।५३ | १.१२ | अनु | २८।२० | १७.४६ | अ | ४१।४१ | वा | ३४।१४ | मानस | वृश्चिक | २६।४७ | ६.२७ | १७.०९ | १६ | चन्द्रोदय, गोवर्द्धनपूजा, यमद्वितीया भातद्वितीया, भाट्टीक-कि मापूजा, १ | १ वि वृश्चिके क १८ ४३ | | |
| २ | मं. | २ | १७।११ | ४.१६ | ज्ये | २५।०५ | १६.२९ | सु | ३४।४५ | तै | २९।२० | मृदगर | २५।४५=१६.२९ | २६।४४ | ६.२७ | १७.०९ | १७ | हेटौडाकुष्माण्डसरोवरमेला, ७ ने.सं.११४१ प्रारम्भः, ८ | १ उषा २ मकरशानि १७.२ | | |
| ३ | बु. | ४ | ५३।२४ | ३.५० | मू | २२।३३ | १५.२९ | धृ | २८।२४ | व | २५।०९ | ध्वज | धनु | २६।४१ | ६.२८ | १७.०८ | १८ | म २५।१७ ५.३२ ४या, ८ वृश्चिके क ३०।४२ मार्गशीर्षसक्रान्तिः | १ तुलायाशुक्र ७.३५ | | |
| ४ | बु. | ५ | ५०।३९ | २.४४ | पू | २०।५४ | १४.५० | शू | २२।४७ | व | २१।५३ | धाता | ३१।३९=२०.४४ | २६।३८ | ६.२९ | १७.०८ | १९ | ९ भीष्मपञ्चकारम्भः, वराहक्षेत्रे धार्मिकमेलाः १ | ४ अनुश्रायासूर्य १.४५ | | |
| ५ | शु. | ६ | ४९।०१ | २.०६ | उ | २०।१६ | १४.३६ | गं | १८।०० | कौ | १९।४० | आनन्द | मकर | २६।३५ | ६.३० | १७.०८ | २० | ६ डालाषट्पूजा, ६ दर्शनं, गिडीक्षेत्रे हृषीकेशाययात्रा, व पति ४१।८ | ६ विशालाया वृध १४.३५ | | |
| ६ | श. | ७ | ४८।३७ | १.५७ | श्र | २०।४८ | १४.५० | वृ | १४।०९ | ग | १८।३८ | स्थिर | ५१।३३=३८ | २६।३३ | ६.३१ | १७.०८ | २१ | म ४८।३७ उ, ध पं प्रवृत्तिः २१।३३ द्विपू २०।४८ उ ४८।३७या, ६ | ६ खान्या शुक्र १७.४७ | | |
| ७ | आ. | ८ | ४९।३१ | २.२० | घ | २२।३४ | १५.३३ | धृ | ११।१६ | म | १८।५३ | मातङ्ग | कुम्भ | २६।३० | ६.३१ | १७.०७ | २२ | म १८।३३या अष्टमीव्रतं, मुख अष्टमी-गोपाष्टमी, गोकापू, | ८ रवत्या १ सोम ८.१९ | | |
| ८ | सो. | ९ | ५१।०१ | ३.१३ | श | २५।३४ | १६.४६ | व्या | ९।२२ | वा | २०।२६ | अमृत | कुम्भ | २६।२७ | ६.३२ | १७.०७ | २३ | कुष्माण्डनवमी मन्थयुगादिः (सम्बन्धगुणने), १ | ८ अनुश्रायासूर्य ८.४० | | |
| ९ | मं. | १० | ५५।०३ | ४.३४ | पू | २९।४६ | १८.२७ | ह | ८।२७ | तै | २३।१३ | काण | १३।३६=११.५९ | २६।२५ | ६.३३ | १७.०७ | २४ | म २७.७८ ५.१२ २५या, स्मार्तानां हरिबोधिनी एकादशीव्रतम् | ११ अनुश्रायासूर्य १५.२९ | | |
| १० | बु. | ११ | ५९।२५ | ६.२० | उ | ३३।०० | २०.३४ | व | ८।२३ | व | २७।०७ | लम्ब | मीन | २६।२३ | ६.३४ | १७.०७ | २५ | वैष्णवाणां हरिबोधिनी एकादशीव्रतं, तुल्सीविवाह, मन्वादिः १ | १२ वृश्चिके वृध २.३६ | | |
| ११ | बु. | १२ | ६०।० | समस्त | रे | ४१।०० | २२.५८ | मि | १०।०१ | व | ३१।५२ | मित्र | ४१।०=२२.५८ | २६।२० | ६.३५ | १७.०७ | २६ | प्रदोषव्रत, १ खाटाङ्गे वराहपोखरीमेला, चागनागयण अखण्डदीप १ | १३ पु उ वृध १०.५२ | | |
| १२ | शु. | १३ | ४।२७ | ८.२२ | अ | ४७।२७ | १३.४ | व्य | १०।०८ | कौ | ३७।०८ | वज्र | मेघ | २६।१८ | ६.३५ | १७.०६ | २७ | म १५।२७ ४.५३ ३३या, शिववैकुण्ठचतुर्दशीव्रतं पूर्णिमाव्रत, १ | १४ अनुश्रा वृध ३.४२ | | |
| १३ | श. | १४ | ९।५० | १०.३२ | म | ५३।५६ | ४.१० | व | ११।२८ | ग | ४२।३१ | ध्वज | मेघ | २६।१६ | ६.३६ | १७.०६ | २८ | विष्णुवैकुण्ठ१४व्रतं, पाल्पा, दर्लमः महाकाली सगवतीयात्रा १ | म ८.१५ ४.१०, ४.५५ | | |
| १४ | आ. | १५ | १५।०५ | १२.३९ | कृ | ५९।५९ | ६.३७ | प | १२।४१ | म | ४७।३३ | धूम | १०।२९=१०.४८ | २६।१४ | ६.३७ | १७.०६ | २९ | म १५।२७ ४.५३ ३३या, शिववैकुण्ठचतुर्दशीव्रतं पूर्णिमाव्रत, १ | ८ म ८.५५, ८.५६ | | |
| १५ | सो. | १६ | १९।४८ | १४.३३ | रो | ६०।० | समस्त | शि | १३।३१ | बा | ५१।५२ | प्रवृद्ध | वृष | २६।१२ | ६.३८ | १७.०६ | ३० | चातुर्मास्यव्रत-कानिकरानञ्चसमाप्ति शिलगढी १ | ११ सु १.४ सु ८.५८ | | |

कार्तिकशुक्ल द्वितीया तिथिमा भाइटीकाका लागि राम्रा वार बेलाहरू बिहानको ९-८ देखि १०-२ बजेसम्म शुभबेला अर्भजित मुहूर्त ११-१२ वाट १२-१० सम्म रहने छु यो अत्यन्त शुभ समय हो । यस दिन चन्द्रमा उत्तर दिशामा हुन्छन् अतः उत्तर वा पश्चिममुख गरी टीका थाप्नु शुभ छ ।

प्रतिपक्षमा गोवर्द्धन पूजा गर्ने मन्त्रः गोवर्द्धन धराधारं गोकुलत्राणकारकं । कृष्णबाहुकृच्छ्राय गवा कौटिप्रदो भव । यमराजलालाई प्रार्थन गर्ने मन्त्रः धर्मगण नमस्तस्य नमस्तु यमुनागज । पाहि मा यर्वदा देव सूर्यपुत्र नमोस्तुती । श्रीधर्मपतामहलाई अर्घ्य दिने मन्त्रः वसुनामवनागय शक्तनो गन्तजाय च । अर्घ्य दर्शाम् दीपमाय हचावालब्रह्मचारिणे । शक्तपक्षमा चन्द्रोदयति चन्द्रशङ्ख मन्त्रः प्रियकरं कनाधारं गङ्गाधर शिवमणं । मुक्ताहारनिभभास बालचन्द्र नमोऽस्तुते । श्वय तिथिनिर्णय या तिथि समन्प्राप्य उदय यातिभास्कर । सा तिथिमफलत्रायेया दाताध्ययनकर्मपू । अथ उषाकाल ज्ञानम्-पञ्चपञ्च उषः काल षड्पञ्चाङ्गप्रादय ।

सप्त पञ्च भवेत्यातः शेषसूर्यादय स्मृताः॥

वक्रमार्गावस्थालः म.मा.उ., वू.मा.१२अ.पू., वू.मा.उ., शू.मा.उ.पू., शू.मा.उ.

मार्ग १ सोमे ४।०।५४

सू. ७।०।१०।२० ६।०।४३

सू. ११।१।०।४।५४ १।१।३२

वू. ६।१।३।२।२७ ७।१।४१

वू. १।०।३।५।१३ १।०।१४

वा. ६।०।४।०।४१ ७।३।३६

शा. ६।०।४।१।३१ ४।५।८

रा. १।२।४।४।३३ ३।५।१

मार्ग १ सोमे ४।०।५४

सू. ७।०।५।४।० ६।०।५४

सू. ११।१।०।४।१९ १।१।३२

वू. ६।१।३।२।२७ ७।१।४१

वू. १।०।३।५।१३ १।०।१४

वा. ६।०।४।०।४१ ७।३।३६

शा. ६।०।४।१।३१ ४।५।८

रा. १।२।४।४।३३ ३।५।१

मार्ग १ सोमे ४।०।५४

सू. ७।०।५।४।० ६।०।५४

सू. ११।१।०।४।१९ १।१।३२

वू. ६।१।३।२।२७ ७।१।४१

वू. १।०।३।५।१३ १।०।१४

वा. ६।०।४।०।४१ ७।३।३६

शा. ६।०।४।१।३१ ४।५।८

रा. १।२।४।४।३३ ३।५।१

१. १

कार्तिकशुक्ल द्वितीया तिथिमा भाट्टीकाका लागि रामा वार बेलाहरू बिहानको ९.८ देखि १०.२८ बजेसम्म शुभवेला अभिजित मुहूर्त ११.२७ वाट १२.१० सम्म रहने छ यो अत्यन्त शुभ समय हो। यस दिन चन्द्रमा उत्तर दिशामा हुन्छन अतः उत्तर वा पश्चिममुख गरी टीका थान्नु शुभ छ।

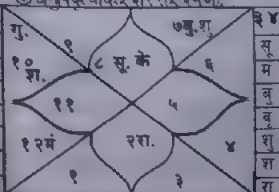
प्रतिपदामा गोवर्द्धन पूजा गर्ने मन्त्रः गोवर्द्धन धराधार गोकुलराणकारक । कृष्णवाहुकृतच्छाय गवा कोटिप्रदो भव । यमराजलाई प्रार्थना गर्ने मन्त्रः धर्मगज नमस्तुभ्य नमस्ते यमुनागज । पाटि मा सर्वदा देव सूर्यपुत्र नमोस्तुते। श्रीधर्मपतामहलाई अर्घ्य दिने मन्त्रः वसुन्तामवतागय शन्तनो गन्मजाय च । अर्घ्य ददामि श्रीध्याय हृद्याबालब्रह्मचारिणे ॥ शुक्लपक्षमा चन्द्रोदयपछि चन्द्रदर्शन मन्त्रः निष्कलङ्क कलाधार गङ्गाधर शिरोमणे । मन्त्राहारनिभाभास बालचन्द्र नमोस्तुते। अथ तिथिनिर्णय या तिथि समनुप्राप्य उदय यातिभास्कर। सा तिथिसफलाज्ञेया दानाध्ययनकर्मणु ॥ अथ उषाकाल ज्ञानम्- पञ्चपञ्च उषः काल षड्पञ्चादरुणादय । सप्त पञ्च भवेत्प्रातः शेषसूर्यादय स्मृताः॥

वक्रमागोदयस्तः म. मा. उ., व. मा. १.२ अ. पू., व. मा. उ., श. मा. उ. पू., श. मा. उ.

१ डोटी केदारमेला, १ डोटी दीपायलत्रात, केदारपूजा, भागेस्वरमेला, धादि किराञ्चोक कालिका भगवती यात्रा, १ गैलेस्वरमेला, स्थानकोट बाणस्थली विष्णोस्नान, वराहक्षेत्रे धार्मिकमेलासमाप्ति, निम्बकचार्थ एव गुरुनामक त्रयन्ती त्रिपुरोत्थव सकिमतापुनि मन्वादिः ६ धनुषिद्वयाकेर २२.२६ रेवजे।

राशिपक्व १ सू ८.१२ वृ ८, १ शु ७, १ श १०, मार्ग १५ सोमे ४०।२७

हिमाल ४४ पञ्चाङ्ग



श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. ११४१ जांशरीषकृष्णपक्षाः (कछलागा) पा मू नि उफा ज्ये (दिसं. १२ सन् २०२०) वक्षिणायन, हेमन्तर्तुः, प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजैसम | न. | घ.प. | बजैसम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा | व.रा. घ.प.=बजैसम | मिनमान | सूर्यसम | तुल्यता | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादी) | गतेक्रम ग्रह-संज्ञार (बजेमा) |
|----|-----|-----|-------|-------|------|-------|-------|------|-------|----|-------|---------|------------------|--------|---------|---------|-----|---|---|
| १६ | म. | १ | २३३८ | १६:०६ | रो | ५१८ | ८:४६ | सि | १३१४२ | तै | ५५१० | मातङ्ग | ३७३७=२१:४१ | २६१० | ६:३८ | १७०६ | १ | त्रिजटाध्यदान, स्थानकाटे महालक्ष्मीयात्रा द्विपू २३:३८ उ. | १७ विशाखाया शुक्र १२:४८ |
| १७ | बु. | २ | २६१२२ | १७:१२ | म | ९३८ | १०:३० | सा | १३१०४ | व | ५७१७ | अमृत | मियुन | २६१०८ | ६:३९ | १७०६ | २ | भ. ५७१७ उ. | १७ ज्येष्ठाया १७:१२ |
| १८ | व. | ३ | २७१५० | १७:४८ | आ | १२१४७ | ११:४७ | शु | १११३० | व | ५८१०६ | काण | ५९१२१=६:२४ | २६१०६ | ६:४० | १७०६ | ३ | भ. २७१५० या, विश्वअपाङ्गतादिवसः | १९ रेवत्या २१:१५ |
| १९ | शु. | ४ | २८१०१ | १७:५३ | पु | १४१४१ | १२:३३ | शु | ८११६ | कौ | ५७१३९ | लम्ब | ककट | २६१०४ | ६:४१ | १७०६ | ४ | | २१ ज्येष्ठाया २१:१५ |
| २० | श. | ५ | २९१५६ | १७:२८ | ति | १५१२१ | १२:५० | ज | ५१२३ | ग | ५५१५८ | मित्र | ककट | २६१०३ | ६:४१ | १७०६ | ५ | | २२ ज्येष्ठर्षे वृष १३ |
| २१ | आ. | ६ | २९१४१ | १६:३४ | इले | १४१५२ | १२:३९ | ऐ | ५११६ | भ | ५३११० | वज्र | १४१५२=१२:३९ | २६१०१ | ६:४२ | १७०६ | ६ | भ. २९१४१ उ ५३११० या, | २४ ज्येष्ठाया २४:१८ |
| २२ | सो. | ७ | २९१२२ | १५:१६ | म | १३११९ | १२:०३ | वि | ४९१२५ | वा | ४९१२३ | ध्वाक्ष | सिंह | २६१०० | ६:४३ | १७०६ | ७ | अष्टमीव्रतं, साय भैरवोत्पत्ति, | २५ वृश्चिके शुक्र १३:५९ |
| २३ | म. | ८ | १७११० | १३:३६ | पु | १०१५३ | ११:०५ | प्री | ४२१३९ | तै | ४४१४८ | धूम | २५१९=१६:४७ | २४१५८ | ६:४४ | १७०६ | ८ | भैरवाष्टमी, गोरखकालीपूजा, | २७ अनुराधे शुक्र ६:१२ |
| २४ | बु. | ९ | १२११५ | ११:३८ | उ | ७१४२ | ९:४९ | आ | ३३१२२ | व | ३९१३६ | प्रचद | कन्या | २५१५७ | ६:४४ | १७०६ | ९ | भ. ३१:३६ उ. | २९ रेवत्या ३१:०५ |
| २५ | व. | १० | ६१४८ | ९:२८ | ह | ५९१५८ | ६:४४ | सौ | २७१४३ | व | ३३१५७ | रक्ष | ३२११=१९:३३ | २५१५६ | ६:४५ | १७०६ | १० | भ. ६१४८ या, विश्वमानवाधिकारदिवसः, श्री गृह्येश्वरीयात्रा, | पाषाणः शनि १०, राह-केतु ११ १७सू १९ म १० |
| २६ | शु. | ११ | ११११५ | ७:१७ | स्वा | ५५१५५ | ५:०४ | शो | १९१५१ | कौ | २८१०३ | गद | तुला | २५१५४ | ६:४६ | १७०६ | ११ | उत्पत्तिका एकावशीव्रतम्, | २१ सू १०, २४सू ११ |
| २७ | श. | १२ | ४९११३ | २:२८ | वि | ५११३७ | ३:२५ | अ | १११५६ | ग | २२१०७ | शुभ | ३७३७=२१:४९ | २५१५४ | ६:४६ | १७०६ | १२ | भ. ४९११३ उ., शनिप्रदोषव्रत, खोटाङ्गे-हलेसीमहादेवमेला, ॥ | २७सू १२, २९ म ११ |
| २८ | आ. | १३ | ४३३८ | ०:१४ | बन | ४७१५३ | १:३३ | सु | ५६१५६ | भ | १६१२२ | मृत्यु | वृश्चिक | २५१५३ | ६:४७ | १७०६ | १३ | भ. १६१२२ या, बालाचतुर्दशी, शतबीजरोपण, बालाचङ्गेपूजा, | |
| २९ | सो. | ३० | ३८१५१ | २२:१२ | ज्ये | ४४१२३ | ०:३३ | शु | ४९१२८ | च | १०१५९ | पय | ४४१२३=०:३३ | २५१५२ | ६:४८ | १७०६ | १४ | दशभ्रातृ, सोममवती अमावास्या, तिथी तथा हलोवार्ते, | |

बक्रमागोदयास्त-
म मा. उ. बु मा अ पू
व मा उ. शु मा उ. पू
श मा उ.

यस पक्षको चतुर्दशीमा पाशुपत क्षेत्रमा शतबीज छर्ने विधान छ । विशेषतः मृगस्यलीको परिक्रमा पशुपतिनाथ, गृह्येश्वरी तथा वासुकिनाथको दर्शनको सहिमा हेमाद्रीमा पनि वर्णित छ ।

चोडपसंस्कारः- मानवलाई मर्त्यो र व्यवस्थित बनाउन पूर्वचार्यहरूले मानवजीवनमा सोढ प्रकारका संस्कारहरूको विधान गरेका छन्-१. गर्भाधान, २. पुसवन, ३. सीमन्तोन्नयन, ४. जातकर्म ५. नामकरण, ६. निष्क्रमण, ७. अन्नप्राशन, ८. चुडाकरण, ९. कर्णवेध १०. यज्ञोपवित्त ११. वेदारम्भ, १२. केशान्त, गोदान, १३. समापवर्तन १४. विवाह, १५. विवाहाग्निसंस्कार, १६. त्रेताग्निसंस्कार (अत्यष्टि) ।
गर्भाधानं पुंसवर्नं सीमन्तो जातकर्म च । नामक्रिया निष्क्रमणोऽन्नप्राशनं वपनक्रियाः ॥
कर्णवेधो व्रतादेष्टो वेदारम्भक्रियाविधिः । केशान्तः स्नानमुद्राहो विवाहाग्निसंस्कारः ॥
केशान्तः स्नानमुद्राहो विवाहाग्निसंस्कारः । त्रेताग्निसंस्कारोऽत्यष्टिः । (व्यासस्मृति)
अथ गर्भिणी प्रश्नः प्रश्न समयको निर्वाचनप्रश्नको संख्यामा गर्भिणीनामाक्षर संख्या जोड्नु त्यसमा ७ जोडी ३ले गुणी ७ ले भागदा विषम अंक शेष रहे छोरो तथा सम अंक शेष रहे छोरी जन्म हुन्छ । वायुफलम् पूर्ववायुधनात्कर्णं वन्तो वायुधनक्षयम् । दक्षिणे पशुनाशं च नैकृत्ये धान्यं हातकृत् ॥ पश्चिमे मेघवृद्धिश्चवायव्ये स्थितमादिदेशा उत्तरे धान्यलाभस्तु रुद्रेवायुधनप्रदः ॥

विजटालाई अर्घ्य दिने मन्त्रः-
रामाय वरदे देवि सीतायै प्रियवांशिन । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं त्रिजटायै नमो नमः ।

| | | | | | | |
|-----|-------------------|-------|-----|-----------|-------------------|------|
| ३५ | मार्ग २२ सोम ४०१३ | १ | ७२. | ३६ | मार्ग २९ सोम ४०१९ | |
| सु. | ७१२१३०१२३ | ६११२ | | सु. | ७१२३३३३३ | ६११८ |
| म. | १११२०१७३७ | २११४ | म. | १११२३३३३३ | २३१८ | |
| बु. | ७११६३३३० | १०११८ | बु. | ७१२३३३३३ | १०६१२ | |
| व. | ९१३३३३३० | १२३७ | व. | ९१२३३३३३ | १२३३ | |
| श. | ६१२३३३३२ | ७४३३ | श. | ७१२३३३३३ | ७४३३ | |
| श. | ९११३३३३२ | ६११८ | श. | ९१२३३३३३ | ६११८ | |
| रा. | ११२३३३३३ | ३११९ | रा. | ११२३३३३३ | ३११९ | |

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. ११४१ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष (थिन्लाश्व) पा. मू. उषा रे. मू. आ (दिस. १२ सन् २०२०) दक्षिणायन हेमन्तर्तु. प्रमादीनामक संवत्सरः

| ग. | बा. | ति. | घ.प. | वजेत्यम | न. | घ.प. | वजेत्यम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा | च.रा. | घ.प. वजेत्यम | दिनमान | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादी) | गणेशपुर्णिमा-सञ्चार (वजेत्या) |
|----|-----|-----|-------|---------|-----|-------|---------|------|-------|----|-------|-----------|-------------|--------------|--------|----------|-----------|-----|---|--|
| 30 | म. | १ | ३४३ | २०:२६ | मू. | ४१/४१ | २३:२९ | ग | ४२/४३ | कि | ६११ | छत्र | धनु | २५/४२ | ६:४८ | १७:०९ | 15 | | धनुष्यर्क ५९/१३, | ३० म १४ नूतनार्क ६३० |
| १ | बु. | २ | ३०१२६ | १८:५९ | पू. | ३९/४९ | २२:४४ | व | ३६/५९ | बा | ३५१ | श्रीवत्स | ५४/३०=४:३७ | २५/४१ | ६:४९ | १७:०९ | 16 | | चन्द्रोदयः पौषसंकान्तिः, १ ध प. निवृत्ति ५८/१५, | ३० म १ धनुष्य वृष १६:४९ |
| ३ | बु. | ३ | २७/४९ | १७:५७ | उ | ३८/५७ | २२:२४ | ध | ३९/५३ | व | ५६/५६ | सौम्य | मकर | २५/५० | ६:५० | १७:१० | 17 | | म ५६/५६ उ, १ आबालकृष्णचारीषडानन्दजयन्ती, ध प प्रवृत्ति ९/४७, | २ अर्धजित्तियुः २०:८८ |
| ३ | शु. | ४ | २६/२० | १७:२२ | अ | ३९/५३ | २२:३१ | व्या | २७/४१ | व | ५६/५४ | धूम | मकर | २५/५० | ६:५० | १७:१० | 18 | | म २६/२० या, ३ कुटीप्रान्तलक्ष्मीपूजा, नुवाकोट दुष्प्रेषवमेला, | ५ मूलमेरुसूर्य १२:४६ |
| ४ | श. | ५ | २६/६ | १७:१७ | घ | ४०/४२ | २३:०७ | ह | २४/२६ | को | ५६/२८ | प्रवर्द्ध | ९/४७=१०:४६ | २५/५० | ६:५१ | १७:११ | 19 | | विवाहपञ्चमी जनकपुरं श्री सीतारामविवाहमेला, १ | ५ उषाया ३ शानि १३:१७ |
| ५ | आ. | ६ | २७/९ | १७:४३ | श | ४३/२६ | ०:१४ | व | २२/१९ | ग | ५८/१० | रक्ष | कुम्भ | २५/५० | ६:५१ | १७:११ | 20 | | त्रिपु. ४३/२६ उ., | ७ रेवत्या ४ मीम १५:५२ |
| ६ | सो. | ७ | २९/२९ | १८:४० | पू | ४७/२२ | १:४९ | सि | २०/५५ | भ | ६०/०० | मूसल | ३१/१६=१९:२२ | २५/५० | ६:५२ | १७:१२ | 21 | | म. २९/२९ उ., मकरदुष्याक २९/४६/१५.३४ वजेतासायनमकरसंकान्तिः | ८ ज्येष्ठार्क शुक. २२:१५ |
| ७ | मं. | ८ | ३३/० | २०:०४ | उ | ५२/२३ | ३:५० | व्य | २०/३३ | भ | १०/६ | सिद्धि | मीन | २५/५० | ६:५२ | १७:१२ | 22 | | म. १/६ या., भीमाष्टमीव्रत, बखुमदा, गोरखकालीपूजा, | ८ पूषाया बुध ९:२३ |
| ८ | बु. | ९ | ३७/३० | २१:५३ | रे | ५८/१५ | ६:११ | व | २०/५७ | बा | ५८/०८ | उत्पात | ५८/१५=६:११ | २५/५० | ६:५३ | १७:१३ | 23 | | पाङ्गा श्रीवैष्णवीदेवीयात्रा, धनगढी दुर्गाजात, डाटी पोखरीजात, १ | १० मूलमेरुसूर्यः १:१० |
| ९ | बु. | १० | ४२/३९ | २३:५७ | अ | ६०/०० | समस्त | प | २१/५५ | तै | १०/०० | मानस | मेघ | २५/५० | ६:५३ | १७:१३ | 24 | | कीर्तिपुरे श्रीद्वन्द्वापीयात्रा, | १३ प उ बुध. १७:५४ |
| १० | शु. | ११ | ४८/७ | २०:०८ | अ | ४८/८ | ८:४५ | शि | २३/११ | व | १५/२२ | वज्र | मेघ | २५/५० | ६:५४ | १७:१४ | 25 | | म १५/२२ उ ४ दाण्या, मोअदा एकादशीव्रत, श्रीगीताजयन्ती, ७ | १४ पूषाया १ सूर्य ७:१९ |
| ११ | श. | १२ | ५३/२३ | ४:१६ | अ | ११/१० | ११:२२ | सि | २४/२८ | व | २०/४७ | छांवा | २७/४६=१८:१ | २५/५१ | ६:५४ | १७:१४ | 26 | | त्रिपु ११/१० उ ५ अरव्या, ७ किसमस डे, | १४ अश्विन १ ममे मीम ४:११ |
| १२ | आ | १३ | ५८/५ | ६:०९ | क | १७/२३ | १३:५२ | सा | २५/२६ | को | २५/४० | धूम | वृष | २५/५१ | ६:५५ | १७:१५ | 27 | | प्रदोषव्रतम्, ३ कुटीप्रान्तलक्ष्मीपूजा, नुवाकोट दुष्प्रेषवमेला, | बकमार्गादिवास्तः म मा उ, बु मा १३ उ प, व मा उ., शु मा उ. पू, श. मा उ |
| १३ | सो. | १४ | ६०/० | समस्त | रो | २२/५५ | १६:०५ | शु | २५/४१ | ग | ३०/०७ | प्रवर्द्ध | ५५/२९=५:४ | २५/५२ | ६:५५ | १७:१६ | 28 | | काशीस्थपिशाचमोचनतीर्थश्राद्धम्, | |
| १४ | मं. | १५ | १/५२ | ७:४० | म | २७/३१ | १७:५६ | शु | २५/३० | भ | ३३/२२ | रक्ष | मिथुन | २५/५२ | ६:५५ | १७:१६ | 29 | | म १/५२ उ ३ अरव्या, पूर्णिमाव्रत, दत्तात्रेय जयन्ती, १ | |
| १५ | बु. | १६ | ४/३२ | ८:४५ | आ | ३०/५८ | १९:१९ | ब्र | २४/१५ | वा | ३५/२५ | मूसल | मिथुन | २५/५३ | ६:५६ | १७:१७ | 30 | | धान्यपूर्णिमा, धान्यपर्वतदान, धनेश्वरमेला, उद्यौलीपूजा, १ | |

काकस्पर्श फलः

कागले शीरमा छोयो भने दारिद्र्य-मरण कुनै होला । कटिमा छोए ठूलो भय अरिष्ट होला । स्त्रीको शीरमा छोयो भने पति वा पुत्रको मरण वा अरिष्ट होला । रुखमनि, खाने चीजको संयोगले छोए दोष हुँदैन। काक मैथुन देखियो भने ६ महिना भित्र अनिष्ट हुन्छ । काक शान्ति गर्नुपर्छ ।

स्थानविशेषेण ग्रहाणा विफलत्वमाह-
समान्तरिन्दु शशिजश्चतुर्थे गुरुः सुतेभूमिसुत-
कुटुम्बे । भृगुः सपत्ने रविजकलने विलग्न सस्ते
विफला भवन्ति ॥

दशावतारसमयः-

अन्तर्मध्ये वामनो रामरामौ मत्स्यः
क्रौञ्चश्चापराह्णे विभागे । कर्मौ सिंहो
वौद्धकल्कीश्च साय कृष्णो रात्रौ कालसाम्ये
च पूर्वे ॥

पापशाः शनि १०, राह ५-
केतु ११, ३०सू १, ४सू २,
५श. ११, ७म १२-सू ३,
१०सू ४, १४सू ५,
१४म १,

रशिप्रवेशः ३०सू ९,
१४म १, ३०बु ९,

१ (थिलापुन्नि-योमरीपुन्नि), गैदुपूजा, भूपरानीकोट बाघभैरवपर्व-अनन्तसिद्धेश्वरमेला, १

१ तमुल्होछार, कविशिरोमणि लेखनायजयन्ती,

| | | | | | | | |
|-----|------------------|----------|-----|-------------|--------|-----|-------------------|
| ३७ | पौष ६ सोमे ३९/५९ | गु.श. १० | ११ | १ बु.सू. | ७ | ३८ | पौष १३ सोमे ३९/४३ |
| सू. | ८५/४८/२४ | ६१/२३ | सं. | ११/२४/२४/३६ | २५/१४ | सं. | ८५/२४/८५/२२ |
| बु. | ८५/०५/१३५ | १०४/२८ | बु. | ८५/०५/१३५ | १०४/२८ | बु. | ८५/०५/१३५ |
| श. | ९/७/३४/४८ | १२/५९ | श. | ९/७/३४/४८ | १२/५९ | श. | ९/७/३४/४८ |
| रा. | ९/३२/९/२४ | ६/५४ | रा. | ९/३२/९/२४ | ६/५४ | रा. | ९/३२/९/२४ |
| रा. | १२/४/३३/३८ | ३/५१ | रा. | १२/४/३३/३८ | ३/५१ | रा. | १२/४/३३/३८ |

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. ११४१ पौषकृष्णपक्षः (थिल्लागा) पाति. पूफा ज्ये. उषा. अमि. (दिस. १२ सन् २०२०-जन. १ सन् २०२१) दक्षि. हेमन्तर्तुः, प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | वज्रसंज्ञा | न. | घ.प. | वज्रसंज्ञा | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. घ.प. = वज्रसंज्ञा | विनायक | सूर्यसंज्ञा | सूर्यसंज्ञा | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादी) | गतेष्वग्रह-संज्ञार (वज्रसंज्ञा) |
|---|-----|-----|------|------------|------|-------|------------|------|-------|----|-------|--------|-------------------------|--------|-------------|-------------|-----|---|--|
| १६ | बु. | १ | ५.५७ | ९.१९ | पुन | ३३.१० | २०.१२ | तु | २२.०२ | तै | ३६.१० | सिद्धि | १७.४४=१४.२ | २५.५४ | ६.५६ | १७.१८ | ३१ | कोकाकौशीकीसगमे मेला, १ राष्ट्रिय पोशाकदिवस, | १६ उषाया वृष ९.१९ |
| १७ | शु. | २ | ६.३ | ९.२२ | ति | ३४.०९ | २०.३६ | वे | १८.४९ | व | ३५.३८ | उत्पात | कवट | २५.५४ | ६.५६ | १७.१८ | १ | म ३५.३८, जनवरी १ ता ३१, सन् २०२१ प्रारम्भः, १ | १७ श्रवणे गुरु १९.४५ |
| १८ | शु. | ३ | ४.५४ | ८.५४ | म | ३३.५६ | २०.३१ | वि | १४.३८ | ब | ३३.५३ | मानस | ३३.५६=२०.३१ | २५.५६ | ६.५७ | १७.१९ | २ | म ४.५४, ४या, | १७ पूषा यासूर्य १३.२८ |
| १९ | आ. | ४ | ३.५५ | ८.३२ | म | ३२.३८ | २०.०० | श्री | १३.४ | को | ३१.०२ | सुदगर | मिह | २५.५७ | ६.५७ | १७.२० | ३ | | १८ मकरे बुधः ११.३८ |
| २० | सो. | ५ | ५.५० | ४.५७ | पु | ३०.२४ | १९.०७ | आ | १३.५१ | ग | २७.१३ | ध्वज | ४.५४=०.५० | २५.५९ | ६.५७ | १७.२१ | ४ | म ५.५०, ३ | १९ धनुषिष्कः १३.१३ |
| २१ | म. | ७ | ५.०१ | २.५९ | उ | २७.२५ | १७.५५ | शो | ५.०१ | म | २२.१६ | धाता | कन्या | २६.१० | ६.५७ | १७.२१ | ५ | म २२.३६या, त्रिपुष्कर २७.२५या, गुरु गोविन्दसिंहजयन्ती, | २० पूषा यासूर्य १९.३६ |
| २२ | बु. | ८ | ४.५३ | ०.४८ | ह | २३.५० | १६.२९ | अ | ४.२३ | वा | १७.२३ | आनन्द | ५.१५=३.४३ | २६.१० | ६.५७ | १७.२२ | ६ | बुधाष्टमीव्रतं, गोकापूजा, | २१ अश्वि २ श्रमः ६.२४ |
| २३ | बु. | ९ | ३.८५ | २२.२९ | वि | १९.५९ | १४.५४ | सु | ३.४१ | तै | ११.४५ | चर | तला | २६.१० | ६.५८ | १७.२३ | ७ | २ नेपालज्योतिषपरिषदस्थापनादिवस, | २१ प अ शनिः १.१३ |
| २४ | शु. | १० | ३.२५ | २०.०८ | स्वा | १५.४९ | १३.९४ | धु | २.६४ | व | ५.१५ | गद | ५.७३=५.५९ | २६.१० | ६.५८ | १७.२४ | ८ | म. ५.१५ र उ ३.२५ र या... (दिसिपूजा), २ | २२ अभिजित बुध २१.२ |
| २५ | शु. | ११ | २.७६ | १७.४८ | वि | १९.५२ | ११.३५ | शु | १.८५ | कौ | ५.४५ | शभ | वृश्चिक | २६.१० | ६.५८ | १७.२४ | ९ | सफला एकादशी व्रतं, | २३ पूषा यासूर्य १.४५ |
| २६ | आ. | १२ | २.१३ | १५.३६ | बनु | ७.३७ | १०.०९ | ग | १.१८ | ग | ४.९० | मृत्यु | वृश्चिक | २६.१० | ६.५८ | १७.२५ | १० | प्रदोषव्रतम्, | २४ श्रवणे बुध २.१६ |
| २७ | सो. | १३ | १.६३ | १३.३५ | ज्ये | ४.०९ | ८.३७ | बु | ४.०९ | भ | ४.४५ | पवा | ४.९८=८.३७ | २६.१० | ६.५८ | १७.२६ | ११ | म १.६३ र उ ४.४५ र या, पृथ्वीजयन्ती तथा रा. एकतादिवसः, १ | २५ अभित्यागगुरु २०.४८ |
| २८ | म. | १४ | १.२१ | ११.५९ | म | ३.५५ | ६.३० | व्या | ५.१० | च | ४.०२ | छत्र | धनु | २६.१२ | ६.५८ | १७.२७ | १२ | दशआर्द्रा, निशीवाने, १ (दिशीचन्द्र पूजा), २ | २६ अश्वि ३ श्रमः ०.५२ |
| २९ | बु. | १५ | ०.४२ | १०.२७ | उ | ५.८५ | ६.१४ | ह | ४.५४ | कि | ३.७९ | वज्र | १.३५=१.२३ | २६.१४ | ६.५८ | १७.२८ | १३ | स्नानदानादौ मौनी अमावास्या, हलोबार्ने, पौषे औसी, १ | २९ पूषायांशकः ३.२३ |
| शेष पर्वहरूलाई १, २ आदि चिन्हहरूले जोडी पुष्टमा अन्यत्र राखिएको हुन्छ, सोहीअनुसार पढनुहुन अनुरोध गरिन्छ। | | | | | | | | | | | | | | | | | | | ३ गयाविष्णुपादका-गोकर्ण-वेनावती-वराहादिक्षेत्रे स्नानम्, |
| अथ स्वप्नविचारः स्वप्नमा धेरै विचार छ, अस्वस्थतामा तर्कवितर्क धेरै चिन्ता अपशोभ परेको अवस्थामा देखिएको स्वप्न प्राय निष्फल हुन्छ। रात्रिको पूर्वभागमा देखिएको पराक्रमफल परभागमा देखिएको प्रत्यक्ष फल मिल्दछ। शभशुभमा- शुभफल दिने यथा- नदी नाला या समुन्द्र पार गर्नु, आकाशमा उड्नु, ग्रह नक्षत्र तारा सूर्य चन्द्रमण्डल देख्नु, घरमहल दरवारमा प्रवेश गर्नु, मदिरापान, वसा मासभक्षण, विष्टालेपन, रक्तलेपन गर्नु, दहीभात खानु, श्वेतवस्तु आभरणाले खुशी हुनु, देवता ब्राह्मण राजाबाट कनै मंगलवस्तु पाउनु, दही स्वरूप अरुल स्वीजानी देख्नु, बयल हात्ती, पर्वत, बुध आउने वृक्षमाथि चढ्नु, दर्पण आम्बिष वस्तु पाउनु, सेतो फूलमाला कपडा लगाउनु, यस्तो स्वप्न देखेको भने धन ऐश्वर्य लाभभई रोगनाश हुन्छ भन्ने मान्यता रहेको छ। स्वप्नशान्तिः- नराम्रो स्वप्न देखेको भने मरसक निदाउने, उठेर जलाशयमा गएर स्नान गर्नु विद्वान् सज्जनलाई सुनाई आशीर्वाद लिने पिपलको गौको दर्शन यथाशक्य सुवर्ण, गाई, द्रव्य आदि दान स्वप्नाध्याय श्रवण वा पाठ गर्नुपर्दछ। तिथि विचार-स्थानिक स्पष्ट सूर्य र स्पष्ट चन्द्रको स्थितिका आधारमा तिथिहरू व्यवस्थित हुन्छन् यथा सूर्य र चन्द्रमा ० अंशको अन्तरमा हुँदा अमावास्या तिथि समाप्त हुन्छ त्यस्तै १२ अंशको अन्तरमा हुँदा शुक्ल प्रतिपदा र १८० अंशको अन्तरमा हुँदा पूर्णिमा तिथि समाप्त हुन्छ त्यस्तै १९२ अंशको अन्तरमा हुँदा कृष्ण प्रतिपदा तिथि समाप्त हुन्छ। एव रीतिरे ३६० वा ० अंशको अन्तरमा पुन अमान्त भई चक्रपूर्ण हुन्छ। | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| राशिप्रेषा १८ बु १०, १९ शु ९, वक्रमापौदयास्तः मं. मा उ, बु. मा. उ. प, व. मा उ, श. मा उ. प, श. मा. २१ अ प | | | | | | | | | | | | | | | | | | | पापांशाः शनि-११, राहु-५-केतु-११, १७ सू ६, २० सू ७, २१ म २, २३ सू ८, २७ सू ९, २८ म ३, २९ राहु-४-केतु-१० |
| ३९ पौष २० सोमे ३९.३८ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | ११ गु. १० श. ८ के. ४० |
| सु. ८.२०.८.१३, ६.१.२६, ०.१.४.२.६, २.८.२.४, १.३.४.८.१०, ९.१.२.५, ९.१.०.४.२.५.५, १.३.३.४, ८.१.४.५.५, ७.५.२.९, ९.१.४.५.५, ७.५.२.९, १.२.३.४.५, ७.५.२.९, १.२.३.४.५, ७.५.२.९ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | ४० पौष २७ सोमे ३९.३६ |
| सु. ८.२०.८.१३, ६.१.२६, ०.१.४.२.६, २.८.२.४, १.३.४.८.१०, ९.१.२.५, ९.१.०.४.२.५.५, १.३.३.४, ८.१.४.५.५, ७.५.२.९, ९.१.४.५.५, ७.५.२.९, १.२.३.४.५, ७.५.२.९, १.२.३.४.५, ७.५.२.९ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | सु. ८.२०.८.१३, ६.१.२६, ०.१.४.२.६, २.८.२.४, १.३.४.८.१०, ९.१.२.५, ९.१.०.४.२.५.५, १.३.३.४, ८.१.४.५.५, ७.५.२.९, ९.१.४.५.५, ७.५.२.९, १.२.३.४.५, ७.५.२.९, १.२.३.४.५, ७.५.२.९ |

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. स ११४१ पौषशुक्लपक्ष (पोहिनाश्व) पा श्रीम अश्वि नै मृ नि (जनवरी १ सन् २०२१) उत्तरायण शिशिरर्तु, प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | वजेसम्य | न. | घ.प. | वजेसम्य | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगः | च.रा. | घ.प. | वजेसम्य | विमान | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घटघाटी) | पतेक्रम ग्रह-संज्ञार (हलेमा) | |
|----|-----|-----|-------|---------|-----|-------|---------|------|-------|----|-------|--------|-------------|-------------|---------|-------|----------|---|--|---------------------------------------|------------------------------|---------------------|
| १ | वृ. | १ | ६/१२ | १-२७ | अ | ५/११ | ६-१४ | व | ४/१० | बा | ३५/२३ | श्राव | मकर | २६/१६ | ६/२८ | १७/२८ | १४ | चन्द्रादयः मकरेऽर्कः १५ अ. ४, माघसक्रान्ति, माघीपर्व, उत्तरायण | १७/२८ | १४ | १ उ २ मकरेऽर्कः १५ अ. ४ | |
| २ | शु. | २ | ४/१२ | ८/४४ | घ | ५/१२ | ६/४४ | सि | ३७/४३ | तै | ३४/३९ | धाना | रक्षा | २८/३९=१८/२५ | २६/१९ | ६/२८ | १७/२९ | १५ | ध प प्रवृत्ति. रक्षा ३९, भूकम्प सुरक्षादिवस. | १७/२९ | १५ | ४ उषाया ३ मयं २० २२ |
| ३ | श | ३ | ४/४६ | ८/४२ | सा | ६/०१० | समस्त | व्य | ३५/०९ | व | ३५/१३ | आनन्द | कुम्भ | २६/२१ | ६/२८ | १७/३० | १६ | भ ३५/१३ उ. | १७/३० | १६ | ४ पश्चिमास्तो गुरु ११/२८ | |
| ४ | आ | ४ | ५/१९ | ९/२९ | श | ५/१३ | ७/४३ | व | ३३/३५ | व | ३७/०४ | रक्षा | ४९/३३=२/४७ | २६/२३ | ६/२८ | १७/३१ | १७ | भ ५९/२९ या, पश्चिमास्तो गुरुः १२/२९ | १७/३१ | १७ | ४ उषाया ३ मयं २० २२ | |
| ५ | सो. | ५ | ८/२८ | १०/२० | वृ | ५/१३ | ९/१२ | प | ३२/५७ | कौ | ४०/०८ | मसल | मीन | २६/२६ | ६/२८ | १७/३२ | १८ | ॥ ल प शङ्खमूलस्नान, ध्योचाकसल्लु, वेदधुमगोखुरीमला, तेलनोसार, कुम्भेदश्याकः १०/३५ (२३/२९ वजे). | १७/३२ | १८ | ४ उषाया ३ मयं २० २२ | |
| ६ | मं | ६ | १२/०६ | ११/४८ | उषा | १०/२४ | ११/०७ | शि | ३३/०८ | ग | ४४/१७ | सिद्धि | मीन | २६/२८ | ६/२८ | १७/३३ | १९ | भ १६/४१ उ ४९/१९ अया., घ.प. निवृत्ति १६/८. | १७/३३ | १९ | ४ घनिष्ठाय वृष ९/२९ | |
| ७ | बु | ७ | १६/४१ | १३/३७ | रे | १६/०८ | १३/२४ | सि | ३३/५८ | म | ४९/१४ | उत्पान | १६/८=१३/२४ | २६/३१ | ६/२८ | १७/३४ | २० | अष्टमीव्रतं श्रीश्वेतमत्स्येन्द्रनाथस्नान, जमवाहचक्रव, गो का पूजा, ११ उषायागुरु १७/११ | १७/३४ | २० | ४ घनिष्ठाय वृष ९/२९ | |
| ८ | वृ | ८ | २१/४५ | १५/४३ | अ | २२/२८ | १५/५६ | सा | ३५/१२ | बा | ५४/३८ | मानस | मेष | २६/३४ | ६/२८ | १७/३५ | २१ | ॥ रम्प, देवघाट मकरस्नानागम्प, मरुतिडी क्षेत्रे त्रिदिवसीयमेला, १२ भरण्या १ गोम २९/३६ | १७/३५ | २१ | ४ घनिष्ठाय वृष ९/२९ | |
| ९ | शु. | ९ | २५/२३ | १७/४४ | म | २९/०२ | १८/३३ | शु | ३६/३४ | तै | ६०/०० | मृदगर | ४५/३९=१/१२ | २६/३६ | ६/२८ | १७/३६ | २२ | ॥ मिनापुन्ति, योगनागयणहेगु, भ पु हनुमतीर्थत्रिवेणीमेला, १४ मकर गुरु ८/३७ | १७/३६ | २२ | ४ घनिष्ठाय वृष ९/२९ | |
| १० | श | १० | ३२/३८ | २०/०० | क | ३५/२३ | २१/०६ | श | ३७/४२ | तै | ००/४ | ध्वज | वृष | २६/३९ | ६/२८ | १७/३७ | २३ | म ५४/३ उ ३७/१७ अया., पुत्रदा एका. व्रतं, मन्वादि: द्विपु. ४१/१० उ. | १७/३७ | २३ | ४ घनिष्ठाय वृष ९/२९ | |
| ११ | आ | ११ | ३७/१७ | २१/४९ | रो | ४१/०९ | २३/२३ | व | ३८/२३ | व | ५०/४ | घाना | वृष | २६/४२ | ६/२८ | १७/३८ | २४ | मुस्याडुली, | १७/३८ | २४ | ४ घनिष्ठाय वृष ९/२९ | |
| १२ | सो. | १२ | ४०/१९ | २३/९९ | मृ | ४६/०० | १/२० | रे | ३८/२१ | व | ९/१६ | आनन्द | १३/४३=१२/२५ | २६/४५ | ६/२८ | १७/३९ | २५ | भौमप्रदोषव्रतम्, | १७/३९ | २५ | ४ घनिष्ठाय वृष ९/२९ | |
| १३ | मं | १३ | ४३/३३ | ०/२९ | आ | ४९/४५ | २/४९ | वै | ३७/२९ | कौ | १२/२६ | चर | मिथुन | २६/४८ | ६/२८ | १७/४० | २६ | म ५४/३ उ ३७/१७ अया., पुत्रदा एका. व्रतं, मन्वादि: द्विपु. ४१/१० उ. | १७/४० | २६ | ४ घनिष्ठाय वृष ९/२९ | |
| १४ | बु | १४ | ४४/४९ | ०/५९ | पु | ५२/१७ | ३/५० | वि | ३५/३९ | ग | १४/२२ | गद | ३६/४७=२१/३८ | २६/५१ | ६/२८ | १७/४१ | २७ | पात्रो, भित्तिपात्रो, अन्य धार्मिक पुस्तक शोक मूल्यमा | १७/४१ | २७ | ४ घनिष्ठाय वृष ९/२९ | |
| १५ | वृ | १५ | ४४/५९ | ०/५९ | ति | ५३/३४ | ४/२० | प्री | ३२/४९ | भ | १५/०९ | शभ | ककट | २६/५४ | ६/२८ | १७/४० | २८ | चाहिणमा - | १७/४० | २८ | ४ घनिष्ठाय वृष ९/२९ | |

केही उपयोगी जानकारी

पञ्चामृत दुध, दही, घृत, मह, शर्करा/चीनी, पञ्चरत्न - सुन, चाँदी, निलक, मोती, मृगा, यसमा अरु विकल्प-विधान पनि छन्। पञ्चगव्य - गोमूत्र, गोबर, दुध, दही, घृत, गाईको। पञ्चपल्लव- आप, वर, पिपल, डुम्री, प्लक्ष (पाखी)-का पात। पञ्चोपचार- गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य। पञ्चमहायज्ञ- अध्ययन-अध्यापन ब्रम्हयज्ञ, तर्पण पितृयज्ञ, होम देवयज्ञ, बलि अन्नादि चढाउनु। भूतयज्ञ, अतिथि मत्कार न्युज। पञ्चपर्व - कृष्ण अष्टमी चतुर्दशी अमावास्या, पूर्णिमा तथा सूर्य संक्रान्तिको तिथि पर्व सजक हन्छन्, मागलिक कार्यमा यथासम्भव वर्ज्य छन्। पञ्चधेनु - पापान्धेनु, कृष्णधेनु, मोक्षधेनु, उत्क्रान्तिधेनु, वैतरणीधेनु। सप्तधान्य जौ, तिल, धान, गहुँ, कागुन, साँवा, चना। सप्तमृत्तिका - घोडाको तबेलाको, हात्तीसारको, धमिराको गोलाको, नदी संगमको, ढढाकुवा, तलाउको, राजद्वार/चौबाटोको, गाईको गोठको यी सात स्थानको माटो। सवौषधी - मुरा, जटामाषी, बोजो, कूट, शैलेय, शटी, चम्पक, मुस्ता मोथे। दशमहादान - गाई, भूमि, तिल, सुन, घृत, वस्त्र, धान, गुंडा(शक्कर), चाँदी तथा नुन। त्रिमधु(मधुपर्क)- वही, घृत, मह।

हिमाल ४५ पञ्चाङ्ग

| | |
|---|--|
| पात्रो, भित्तिपात्रो, अन्य धार्मिक पुस्तक शोक मूल्यमा चाहिणमा - | पात्रो: शनि ११, गुरु ४-केतु १०, १ सु १०, ४ सु ११, ४ शनि १२, ६ मं ४, ४ सु १२ ११ सु १, १२ मं ५, १४ मं २, |
| चन्द्र राना, पोखरा-२६, बुढीबजार, कास्की, ९८४६०३५१७५ | ११ सु १, १२ मं ५, १४ मं २, |
| ४१ माघ ५ सोम ३९/३७ | ४२ माघ १२ सोम ३९/४२ |
| सु. ९/४२७/३२ ६१/२० | सु. ९/११/३६/२२ ६१/१४ |
| म. ०९/४०५/८ ३०/४६ | म. ०९/३२/१३/७ ३०/४३ |
| बु. ९/२९/२९/१३ ५३/१६ | बु. ९/२५/३९/१६ ५३/१८ |
| वृ. ९/१३/८/१० ५३/१४ | वृ. ९/१५/३६/१६ ५३/१८ |
| शु. ८/१९/२३/४७ ७५/३२ | शु. ८/२८/१३/३३ ७५/३३ |
| श. ९/६/४६/४८ ७२/२५ | श. ९/७/३९ ७२/२५ |
| रा. १२/३४/३६ ३१/१ | रा. १२/२४/२२/२० ३१/१ |

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. स १९४१ माघकृष्णपक्षः (पोहेलागा) पा १०, म १७ ज्ये उषा अभि घ (जन १-फर २ सन् २०२१) उत्तरायणं शिशिरर्तुः प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | बा. | ति. | घ.प. | वजेसम | न. | घ.प. | वजेसम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. घ.प. वजेसम | दिनसम | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (छठ्यादी) | गतेक्रम ग्रह-संज्ञादि (बजेमा) |
|----|-----|-----|------|-------|------|-------|-------|------|-------|----|-------|----------|------------------|-------|----------|-----------|-----|--|-------------------------------|
| १६ | शु | १ | ४३३३ | ०:२० | इले | ५३३९ | ४:२२ | आ | २९:०० | बा | १४:२३ | मृत्यु | ५३३९=४:२२ | २६:५७ | ६:५४ | १७:४१ | २९ | शहीददिवसः, | १७ श्रवणःसूर्य २१:५७ |
| १७ | श. | २ | ४१११ | २३:२२ | म | ५२:३७ | ३:५६ | सौ | २४:१७ | ते | १२:३२ | पद्म | सिंह | २७:०० | ६:५४ | १७:४२ | ३० | | १७ प अशुभः ८:१५ |
| १८ | आ | ३ | ३७४४ | २१:५९ | पू | ५०:३७ | ३:०८ | शो | १८:४३ | व | ९:३५ | हस्त | सिंह | २७:०३ | ६:५३ | १७:४२ | ३१ | म १३३५ उ ३७४४या, | १८ भरण्या २ भौम २:४ |
| १९ | सो. | ४ | ३३२९ | २०:१५ | उ | ४७:४९ | २:०० | अ | १२:२५ | व | ५:४२ | श्रीवत्स | ५०=८:५३ | २७:०७ | ६:५३ | १७:४३ | १ | काशीस्थबडागणेशोत्सव. (फरबरी २ ता. २८), | १९ अभिजित्तुक्रः १५:३२ |
| २० | मं. | ५ | २८२७ | १८:१५ | ह | ४४:२३ | ०:३७ | सु | ५:३३ | कौ | १:४३ | सौम्य | कन्या | २७:१० | ६:५२ | १७:४४ | २ | | २० श्रवणःसूर्य ४:३२ |
| २१ | बु. | ६ | २२५८ | १६:०३ | चि | ४०:३१ | २३:०४ | शू | ५:०२ | म | ५:०५ | काल | १२:३०=११:५२ | २७:१३ | ६:५२ | १७:४५ | ३ | म. २२:५८ उ. ५:०५या, | २२ श्रवणः शुक्रः ७:० |
| २२ | ब. | ७ | १७१० | १३:४३ | स्वा | ३६:२४ | २१:२४ | गं | ४:२३ | वा | ४:४२ | स्थिर | तुला | २७:१७ | ६:५१ | १७:४६ | ४ | अष्टमीव्रत गोरखकालीपूजा, | २२ पुनः श्रवणं बृध ३:४२ |
| २३ | शु. | ८ | १११५ | ११:२० | वि | ३२:५५ | १९:४४ | व | ३:४४ | तै | ३:८९ | मातङ्ग | १८:१७=१४:९ | २७:२० | ६:५० | १७:४६ | ५ | परासीक्षेत्रे विवेकीमेला ध प प्रवृत्तिः ४:८२०, | २२ अभि त्यागशुक्रः २:३५ |
| २४ | श. | ९ | ५४३७ | ८:३८ | मृ | २८:१८ | १८:०९ | दु | २:७० | व | ३:२९ | अमृत | वृश्चिक | २७:२४ | ६:५० | १७:४७ | ६ | म. ३२:३९ उ. ५:१५ ज्या, | २४ धनिष्ठायासूर्य ११:१३ |
| २५ | आ. | १० | ५४५८ | ४:४८ | ज्ये | २४:४४ | १६:४३ | व्या | १:१४ | व | २:७२ | काण | २४:४४=१६:४३ | २७:२७ | ६:४९ | १७:४८ | ७ | स्मार्त्तानां षट्तिला एकादशी व्रतम्, | २४ भरण्या ३ भौम ३:३७ |
| २६ | सो. | ११ | ४०४० | ३:०५ | मू | २१:४५ | १५:३० | ह | १:२५ | कौ | २:२४ | लम्ब | धनु | २७:३१ | ६:४८ | १७:४९ | ८ | वैष्णवानां षट्तिला एकादशी व्रतम्, | २६ पू उ शनिः १०:५३ |
| २७ | म. | १२ | ४७१५ | १:४२ | पू | १९:३२ | १४:३९ | व | ६:३५ | ग | १:८५ | मित्र | ३४:६=२०:२६ | २७:३५ | ६:४८ | १७:५० | ९ | म ४७:१५ उ., भौमप्रदोषव्रतम्, | २७ धनिष्ठाया रम्यः १७:५९ |
| २८ | बु. | १३ | ४४५८ | ०:४३ | उ | १८:१४ | १४:०५ | सि | ५:१० | म | १:५५ | वज्र | मकर | २७:३८ | ६:४७ | १७:५० | १० | म १४:५५ या., लैच हेपूजा, | पापाशाः शनिः १२, राहु ४ |
| २९ | ब. | १४ | ४३३५ | ०:१२ | श्र | १८:०१ | १३:५९ | व | ५:२५ | च | १:४० | ध्वज | ४८:२०=२:६ | २७:४२ | ६:४६ | १७:५१ | ११ | दर्शभाट, निशी-हलवाने, आर्यघाटक्षेत्रे माघवनारायणमेला | केतु १०, १७ सू ३, |

नोटः रात्रि १ वजेवाट दिनको १२ वजेसम्मलाई १, २, १२ वजे, दिन १ बाट रात्रि ११ वजेसम्मलाई १२, १३, २३ वजे र रात्रि १२ वजेलाई ० वजेले सकेत गरिएको छ ।

सबै स्तरका पाठ्यपुस्तक, विभिन्न स्टेसनरी सामग्री, पात्रो, धार्मिक पुस्तकहरूका लागि सम्बन्धित जय दुर्गा स्टेसनरी, कुम्मा पर्वत, सम्पर्क - ९८५७६३०५६५

यस पछाडिका प्राप्ति स्थानहरू
हिमाल किराना स्टोर, इटहरी
बबल बुक्स एण्ड स्टेसनरी, इटहरी
पूजा इन्टरप्राइजेज, शनिश्चरे भापा,
सत्यनारायण शर्मा
सत्यनारायण मन्दिर विगतनगर,
दुर्गा पुस्तक तथा पूजा सामग्री
केन्द्र, पर्वलाइन, इटहरी
वैभवलक्ष्मी पूजा सामग्री
अण्डार,
वित्तामोड, भापा,

विद्या कुटिर उलावरी, मोरङ
श्रेष्ठ बुक्स एण्ड न्यूज ४मक,
वैदिक संस्कार तथा सामग्री
पतिष्ठान
वित्तामोड, भापा,
पवन पुस्तक अण्डार, धनगढी,
दुर्गा पुस्तक अण्डार, महेन्द्रनगर
गालयनाथ पुस्तक अण्डार,
माक्यूज्वर, शम्भुना
माछापुछ्रे बुक्स एण्ड
स्टेशनरी, नेपालगञ्ज,

पर्वत पुस्तक अण्डार,
नेपालगञ्ज,
प्रभात पुस्तक अण्डार,
नेपालगञ्ज,
एमरेष्ट बुक्स, नेपालगञ्ज,
अरी न्यूज, नेपालगञ्ज,
उज्ज्वल स्टेशनरी,
नेपालगञ्ज,
सुखम् स्टेशनरी,
नेपालगञ्ज
बुक पुस्तक विक्रेता,
भोटाहिटी काठमाण्डौ,

हिनसिस्वर बुक्स, न्यू रोड, काठमाण्डौ
टेस्टिटेज पब्लिसिस्, भोटाहिटी, काठमाण्डौ
दुर्गा पुस्तक अण्डार, पशुपतिक्षेत्र काठमाण्डौ
यस पछाडिका वितरक
श्री दुर्गा साहित्य
अण्डार,
नेपाटी खपडा,
वाराणसी,
भारत, ००६९
९८४९०८०९४९

पुष्पाञ्जली पुस्तक पसल,
गोर्खा,
सरजू पसाद गुप्ता, घोराही
झाङ

बक्रभागाव्याप्तः म मा उ, बु. व १७ अ प,
बृ मा अ, शु मा उ पू, श. मा. २६ उ

| सु | मं | बु | व | श. | श | स |
|----|----|----|----|----|----|-----|
| १९ | ०१ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
| १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ |
| ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ |
| ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ |
| ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ |
| ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ |
| ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ |
| ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ |
| ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ |
| ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ |
| ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |

हिमाल ४६ पञ्चाङ्ग

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. ११४१ माघशुक्लापक्षः (शिलाश्व) पा. प्र. भ. कृ. रो. ति. १० (फरवरी २ सं. २०२१) उत्तरायणं शिशिरर्तुः, प्रमादीनामकः संवत्सर.

| क्र. | वा. | ति. | घ.प. | वज्रसंयम | न. | घ.प. | वज्रसंयम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा | वरा. घ.प.=वज्रसंयम | दिनांक | सूक्त | सूक्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादी) | गतेषु ग्रह-संज्ञायाः (वज्रसंयम) |
|------|-----|-----|-------|----------|-------|-------|----------|------|-------|----|-------|-----------|--------------------|--------|-------|-------|-----|--|---------------------------------|
| 30 | शु. | १ | ४३३५ | ०:१२ | घ | १८५९ | १४:३१ | प | ४९:३५ | कि | १३:२६ | धाता | कृष्ण | २७/४६ | ६:४६ | १७५२ | 12 | सोनम तथा तामा इन्द्रोद्योत, श्रीवल्लभजयन्ती, कुम्भे के ४५/१५, ३० | ३० ध ३३कुम्भे के ०:११ |
| १ | श. | २ | ४४४३ | ०:४२ | श | २१/१२ | १५:१४ | शि | ४७/४५ | वा | १४/०५ | आनन्द | कृष्ण | २७/४६ | ६:४५ | १७५३ | 13 | चन्द्रोदयः, कालगुप्तसंक्रान्तिः, त्रिपु. २९/१२२० ४४/१५३५, ३० | ३० पूर्वास्तः शुक्रः ०:४१ |
| २ | आ. | ३ | ४७/२६ | १:४२ | पू | २४/३९ | १६:३६ | सि | ४६/३३ | तै | १६/०१ | चर | ६/११=०:१३ | २७/४६ | ६:४४ | १७५३ | 14 | पूर्वोदितो गुरु. १/४५५, ३० | ३० मरण्या ४ मीमः २:४४ |
| ३ | सो. | ४ | ५१/०८ | ३:१० | उ | २९/१५ | १८:२५ | सा | ४६/३३ | व | १९/१० | गद | मीन | २७/४७ | ६:४३ | १७५४ | 15 | म १९/१०२० ५१/१८५, तिलकन्दचतुर्थी, २ | २ पूर्वोदितो गुरु. १२:४२ |
| ४ | मं. | ५ | ५५/४५ | ५:०० | रे | ३४/४९ | २०:३८ | शु | ४७/३५ | ब | २३/२१ | शुभ | ३४/४९=२०:३८ | २८/०१ | ६:४२ | १७५५ | 16 | श्री पञ्चमी, वसन्तश्रवणं, सरस्वतीपूजा, रतिकामपूजा, १ | २ श्रवणे १ शनि. २३:४० |
| ५ | बु. | ६ | ६०/१० | समस्त | अ | ४१/०४ | २३:०७ | शु | ४८/४७ | कौ | २८/२० | मृत्यु | मेघ | २८/०५ | ६:४२ | १७५५ | 17 | स्कन्दपष्टी, १ मन्वादिः, राष्ट्रियप्रजातन्त्रदिवसः, २ | २ धनिष्ठायाशुक्रः २:२२ |
| ६ | बु. | ६ | ११ | ७:०५ | म | ४७/३९ | १:४४ | ब्र | ५०/१३ | ग | ३३/४३ | पद्म | मेघ | २८/०८ | ६:४१ | १७५६ | 18 | मीनेदृश्याकः ११/११/११ ९ बजे, ३ | ३ पू उ बुध. ३:३४ |
| ७ | शु. | ७ | ६१/२७ | ९:१५ | क | ५४/०७ | ४:१९ | ऐ | ५१/३२ | म | ३९/०५ | छत्र | ४/१९=८:२४ | २८/१२ | ६:४० | १७५७ | 19 | ६. ६१/२७ ३९/१२५, अचला-नथसप्तमी, लगलाचयके, १ | ६ कुति १ मीमः २३:५१ |
| ८ | श | ८ | ११/३८ | ११/१८ | रो | ६०/०० | समस्त | वै | ५२/२८ | वा | ४३/४९ | श्रिकृष्ण | वृष | २८/१६ | ६:३९ | १७५८ | 20 | अष्टमीव्रत, मीषाष्टमी, गोरखकालीपूजा, २ | २ शतभिषायाशुक्रः १९:५७ |
| ९ | आ. | ९ | १६/१० | १३:०६ | रो | ०/०६ | ६:४१ | वि | ५२/४६ | तै | ४८/०५ | धाता | ३३/४६=१९:४४ | २८/२० | ६:३८ | १७५८ | 21 | द्रोणजयन्ती, ३ देवघाटमकरस्थानसमाप्ति, पूर्वास्तः शुक्रः ०/४१, ३ | ३ कुम्भे शुक्रः ४:११ |
| १० | सो. | १० | ११/४६ | १६:३२ | मु | ५/१३ | ८:४२ | प्री | ५२/१५ | व | ५१/०७ | आनन्द | मिथुन | २८/२४ | ६:३७ | १७५९ | 22 | ४. ५१/१७ उ, शन्यदशमी, ४ | ४ मार्गि वृधः ३:३४ |
| ११ | मं. | ११ | २२/१२ | १५:२२ | आ | १/१५ | ०:१८ | आ | ५२/१६ | ब | ५२/१६ | चर | ५६/२८=५:१२ | २८/२८ | ६:३६ | १८०० | 23 | म २२/१२ उ, श्रीमा एकदशी व्रतम्, त्रिपु. २२/१२२, ५ | ५ शतभिषायाशुक्रः २२:२२ |
| १२ | बु. | १२ | २३/२२ | १५:५६ | पू | १२/०६ | ११:२६ | सौ | ४८/२३ | कौ | ५३/२६ | गद | कर्कट | २८/३२ | ६:३५ | १८०० | 24 | प्रदोषव्रत, भीमद्वारशी, वटुमाघयात्रा, मर्यादुली १० | १० शतभिषायाशुक्रः २२:२२ |
| १३ | बु. | १३ | २३/२४ | १५:५२ | ति | १३/४१ | १२:०३ | शो | ४४/५७ | ग | ५२/४० | शुभ | कर्कट | २८/३६ | ६:३४ | १८०१ | 25 | मौभाग्यशुपदानम्, १ भापा किकचबधमेला, ११ | ११ शतभिषायाशुक्रः ५:३३ |
| १४ | शु. | १४ | २४/११ | १५:१८ | रत्ने | १४/०३ | १२:११ | अ | ४०/३५ | म | ५०/४२ | मृत्यु | १४/३८=१२:११ | २८/४० | ६:३३ | १८०२ | 26 | म. २४/१५ उ. २०/४२ या, पूर्णिमाव्रत, श्री पशुपतेच्छयादार्शनं, १२ | १२ शतभिषायाशुक्रः ११:२० |
| १५ | श. | १५ | १९/१० | १४:१६ | म | १३/१८ | ११:५२ | सु | ३५/२० | वा | ४७/३९ | पद्म | सिंह | २८/४४ | ६:३२ | १८०२ | 27 | श्रीस्कन्धानीव्रतसमाप्ति, माघरत्नानसमाप्ति, माघयात्रा(सिपुन्नि). १ | १५ धनिष्ठाया शुक्र १९:० |

यस पक्षको पञ्चमीलाई **श्रीपञ्चमी** पनि भनिन्छ, यसमा सारस्वतीपूजा, वसन्तश्रवण र वसन्तोत्सव गर्ने र्गिष्ठान छ, विशाको अधिष्ठात्री देवी सारस्वती तथा सिद्धिविनायकको पूजा गरी श्रापमा साना बालबालिको अक्षरारम्भ गराउने पनि चलन छ, यस दिन अक्षरारम्भ गर्ने साइत जुगाउनु पर्दैन साथै यस दिन कृषिकार्यको सम्मान र हिउँद समयमा भई बर्षा (खेती)पाउने गर्ने मुख्य समय।पारम्भ हुने प्रतीकस्वरूप हलको पूजा गरी हलसारी पनि गरिन्छ। सप्तमीलाई रघुपतमी भनिन्छ यसमा गंगास्नानको अत्यन्त महत्त्व छ।

उक्तञ्च-सूर्यग्रहणं तुत्यास्तु शुक्ला माघस्य सप्तमी । अरुणोदयवेलायां तस्या स्नानं महाफलम् ॥

माघे मासित्तैपक्षे सप्तमी कोटिभाष्करा । कर्पास्तनाय्यं दानाभ्यामायुरारण्यं संपदः ॥
 माघमासे नियमा- भूमिशायी प्रातः प्रयोगं वा गगानदी तालात्र अन्यतमं पुण्यतीर्थं प्रयागस्मरणेन स्नानम् तन्मन्त्रः-
 ह्रस्वद्विच्युताज्ञाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च । प्रातः स्नानं करोम्यहं माघे पापविनाशनम् ।

सर्पाध्यदानस- सवित्रे प्रसवित्रे च परं धामजले मम । स्वतेजसा परिभ्रष्टं पापयातुं सहस्रधा ॥

माघे- तिलस्तन तिलतर्पण तिलजलपान तिलहोम तिलदान तिलभक्षण भूमिशापी ब्रम्हच

वा इन्धन, कम्बल, उपानह वस्त्राणि तैलकपास, सुवर्ण अन्नञ्चदानान्महाफलोमिति ॥

हिमाल ४८

वक्रमार्गद्वयास्तः

ਸ.ਸਾ.ਭ.,

बु ७ मा

੩੭੫.

व मा रेनु

श.मा ३०३

श मा.उ

7

9 पञ्चाङ्ग

पापांशाः शनिः१२, गह्वः४-केतुः१०, ३० सू ५, ३० मं द, रशनि१.

४सू८, ६म९, ७सू९, १०सू१०, १२म१०, १३सू११.

| | | | | |
|--------------------|------|---------------|-----|---------------------|
| फाल्गुन ३ सोम ४०१२ | १२ | बु.शु.गु.१०श. | ४ | फाल्गुन १० सोम ४०१२ |
| १०राश ७७ | १मं. | ११ सु. | सु. | १०मं ०१३३ |
| ०१राश ६९ | | | मं | ०१मं ७५९९ |
| ११राश २८ | | | बु | ११राश ७५९९ |
| ११राश ३३ | २रा. | के. ८ | व | ११राश २१३३ |
| ११राश ४ | | | शु | १०राश २१३३ |
| ११राश ७१ | | | ग | ११राश ३३३ |
| ११राश ७० | | | श | ११राश ३३३ |
| ११राश ३३ | ३ | ६ | | |

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. १९४१ फाल्गुनकृष्णपक्षः (शिल्पागा) पा. स्वा. १६ ज्ये. अभि. श्री पूभा. (फर. २/ मार्च ३ सन् २०२१) उत्तरायणं शिशिरर्तुः, प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | वर्जस्य | न. | घ.प. | वर्जस्य | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगः | घ.प. घ.प. वर्जस्य | विनमान | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादी) | वर्तमान ग्रह-संज्ञा (बजेमा) |
|----|-----|-----|------|---------|------|------|---------|-----|-------|----|------|-----------|-------------------|--------|----------|-----------|-----|---|-----------------------------|
| १६ | आ. | १ | १५४८ | १२५१ | पू | ११३२ | ११०८ | धू | २९१२० | तै | ४३४१ | छत्र | २५४६=१६:५४ | २८४८ | ६:३२ | १८:०३ | २८ | त्रिपु. १५४८८८, | १७ शतमे ४सूके १३:४ |
| १७ | सो. | २ | ११२५ | ११०४ | उ | ८४५ | १००५ | शू | २९४१ | व | ३६४६ | श्रीवत्स | कन्या | २८४२ | ६:३१ | १८:०३ | १ | म. ३६४६८८, (मार्च ३ ता ३१), | १८ कृति ३ भोमः १३:१५ |
| १८ | मं. | ३ | ६१९ | १०२ | ह | ५३६ | ८४५ | ग | १५३२ | व | ३३३६ | सौम्य | ३३४६=२०:० | २८४६ | ६:३० | १८:०४ | २ | म. ६१९५५५, माभी लदीपूजा, | २० पू. भा. यापसूर्यः २०:४२ |
| १९ | बु. | ४ | ०४८ | १:४६ | चि | १४२ | ०४८ | व | ८१०१ | कौ | २७५३ | काल | तला | २९१०० | ६:२८ | १८:०५ | ३ | म. ४८५८८८, | २१ वनिष्ठायां बुधः १९:५० |
| २० | वृ. | ५ | ४८४८ | २०३ | वि | ५३३७ | ३५४ | घू | ०४७ | ग | २१४८ | प्रवर्द्ध | ३९३९=२२:१९ | २९१०५ | ६:२७ | १८:०५ | ४ | म. ४८५८८८, | २२ पू. भायां शुकः २:२२ |
| २१ | शु. | ६ | ४३०९ | २३:४२ | अनु | ४९३७ | २९७ | ह | ४४४५ | म | १६०३ | रक्ष | वृश्चिक | २९१०९ | ६:२६ | १८:०६ | ५ | म. १६३३५५, | २३ पू. भा. यापसूर्यः ४:३० |
| २२ | श. | ७ | ३७३९ | २९:२९ | ज्ये | ४५४८ | ०:४८ | व | ३७२९ | बा | १०२२ | मूल | ४५४८=०:४८ | २९११३ | ६:२५ | १८:०६ | ६ | अष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, | २४ कृत्ति ४ भोमः ६:१ |
| २३ | आ. | ८ | ३२४० | १९:२८ | मू | ४२४९ | २३:३३ | सि | ३०२९ | तै | ५१०६ | सिद्धि | घन | २९११७ | ६:२४ | १८:०७ | ७ | १) पाशुपतादिसमस्तशिवभेदे मेला, सिलाचःपूजा, घ.प. प्र. ८४३, | २५ कृत्ति ४ भोमः १२:२७ |
| २४ | सो. | ९ | २८२३ | १७:४४ | पूषा | ४०२७ | २२:३४ | व्य | २३५५ | व | ०४७ | उत्पात | ५४४८=४:२३ | २९१२१ | ६:२३ | १८:०८ | ८ | म. ०२४७८८, २८२३५५, नारीदिवसः, | २६ कृत्ति ४ भोमः १२:२७ |
| २५ | मं. | १० | २४४८ | १६:२१ | उषा | ३६४७ | २१:५७ | व | १८१० | कौ | ५३३६ | मानस | मकर | २९१२५ | ६:२२ | १८:०८ | ९ | विजया एकादशीव्रतं, त्रिपु. २४५८८८, ३८५५५५, | २७ पू. भा. यापसूर्यः १२:२७ |
| २६ | बु. | ११ | २२३४ | १५:२३ | श्र | ३६२९ | २१:४५ | प | १३१३ | ग | ५१४६ | छत्र | मकर | २९१२९ | ६:२१ | १८:०९ | १० | प्रदोषव्रतम्, | २८ पू. भा. यापसूर्यः १२:२७ |
| २७ | वृ. | १२ | २१२० | १४:५२ | घ | ३९१२ | २२:०१ | शि | ९१११ | म | ५१०९ | श्रीवत्स | ८४३९=४:४९ | २९१३३ | ६:२० | १८:०९ | ११ | म. २१२०८८, ५११९५५, महाशिवरात्रि १४ व्रतं, काशी- १) | २९ राहिण्यां भोमः २९:४४ |
| २८ | शु. | १३ | २१२९ | १४:५१ | श्रत | ४१०८ | २२:४६ | सि | ६१०६ | च | ५१४९ | सौम्य | कुम्भ | २९१३८ | ६:१९ | १८:१० | १२ | द्वापरयुगादि, | ३० पू. भा. यापसूर्यः १२:२७ |
| २९ | श. | १४ | २२३९ | १५:२१ | पूषा | ४४१९ | ०:०२ | सा | ४१०२ | कि | ५३४५ | काल | २८४५=१७:४० | २९१४२ | ६:१८ | १८:११ | १३ | वसंभ्रातृ, निशी तथा हलोवार्ते, | ३१ राहिण्यां भोमः २९:४४ |

ज्योतिष विषयको प्रारम्भिक ज्ञानका निम्ति पं. प्राणनाथ त्रिपाठीद्वारा संकलित पंचांग परिचय पुस्तक अवश्य पठनुहोस् ।

अथशिवरात्रि व्रतमहात्म्यम्-
 परात्पतरं नास्ति शिवरात्रिः परात्पतरम् ।
 ये नाचयन्ति भक्तोऽं रुद्रं त्रिभुवनेश्वरम् ॥
 वन्तु मन्मसाहोषु भ्रमन्ते नात्र संशयः ।
 वर्षे वर्षे महादेवी नरोनारी पतिव्रता ॥
 शिवरात्रौ महादेवं नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत् ।
 अर्णवो यदि वा भुज्येत् क्षीयते हिमवानपि ॥
 चलत्यन्ते कदाचिद्भ्रान्तिचलन्ति शिवव्रतम् ।
 शिव भक्तस्तु यो देवि शिव रात्रिसुषोषकः ॥
 गणतन्मक्षयदिव्यं लभते शिवशासनात् ।
 सर्वान्भुक्त्वामहाभोगान् ततो मोक्षमवाप्नुयात् ॥

नारायणगदमा यस पञ्चाङ्गका प्रमुस प्राप्ति स्थानहन्
 अरुण पुस्तक भण्डार,
 मास्के पुस्तक भण्डार,
 दिलमाया पुस्तक भण्डार,
 पंकज पुस्तक भण्डार,
 वैदिक पुस्तक तथा पूजा सामग्री भण्डार,
 धार्मिक पुस्तक पसल,
 नारायणी पुस्तक सदन,
 दैनिक पूजा सामग्री भण्डार,
 ओम धार्मिक पुस्तक पसल,
 पुष्पाञ्जली बुक्स एण्ड स्टेशनर्स,
 पन्त स्टेशनरी सप्लायर,
 हिमाल ४८ पञ्चाङ्ग

यस पञ्चाङ्गका वितरक
 श्री दुर्गा पुस्तक तथा पूजन सामग्री भण्डार
 टाफिकचोक, बुटवल,

पञ्चाङ्गका वितरक
 ज्यो.प. कैलाश बहाल, खोटाङ, ऐसेलुबर्क,
 कुमारीगाल काठमाण्डौ, ९८४१३१९०९७

| | | | | | | | |
|-----|---------------------|------|--|-----|----------|------|--------------------|
| ४७ | कालान् १७सोमे ४०४४४ | | | | | ४८ | कालान् २४सोमे ४११२ |
| सु. | १०१७४४२९ | ६०२० | | सु. | १०२४४४४० | ६०१६ | |
| म. | १०२४४४४० | ३४४० | | म. | १०३१४४४९ | ३४४९ | |
| बु. | १०३१४४४९ | ५४४९ | | बु. | १०३८४४४८ | ७४४० | |
| वृ. | १०३८४४४८ | १३४६ | | वृ. | १०४५४४४७ | १३४७ | |
| शु. | १०४५४४४७ | ७४४७ | | शु. | १०५२४४४६ | ७४४६ | |
| श. | १०५२४४४६ | ६४४६ | | श. | १०५९४४४५ | ६४४५ | |
| रा. | १०५९४४४५ | ३४४५ | | रा. | १०६६४४४४ | ३४४४ | |

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. ११४१ फाल्गुनशुक्लपक्षः (चिल्लाथव) पा. क. रो. ति. १०. ह. (मार्च ३ सन २०२१) उत्तरायणं वसन्तर्तः, प्रमादीनामकः संवत्सरः

[illegible]

श्री संवत् २०७७ श्री शाके १९४२ ने. सं. ११४१ वैजकृष्णपक्षः (चित्वागा) पा.ह.ज्ये.उषा.अभि.श.रे. (माघ ३/अप्रैल ४ सन् २०२१) उत्तरायण, वसन्तर्तुः, प्रमादीनामकः संवत्सरः

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | वजेसम | न. | घ.प. | वजेसम | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | घ.प. | वजेसम | दिनान | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. | व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादौ) | गतेक्रम ग्रह-सञ्चार (बजेना) |
|----|-----|-----|-------|-------|------|-------|-------|------|-------|----|-------|---------|-------------|-------|-------|-------|----------|--|---|--|-----------------------------|
| १६ | सो. | १ | ४२४० | २३:०४ | ह | २७:०९ | १६:५१ | धु | ३४:४५ | वा | १५:२० | वज्र | ५५:२०=४:८ | ३०:४८ | ६:०० | १८:१९ | २९ | वसुन्तादितैलाभ्यङ्ग, चूतपुष्पप्राशनं (चक्रेयातधूलयात) ① | १६ रेवत्या शुकः १०:१२ | | |
| १७ | मं. | २ | ३७०३ | २०:४८ | चि | २३:२९ | १५:२२ | व्या | २७:२३ | तै | १५:५६ | ध्वाक्ष | तुला | ३०:४२ | ५:५९ | १८:२० | ३० | द्विपु २३:२९या., ② गणगौरपूजा प्रारम्भः तराईमा होली, | १६ कृम्मे गुरु २०:५२ | | |
| १८ | बु. | ३ | ३१०८ | १८:२५ | स्वा | १९:२८ | १३:४५ | ह | १९:४५ | व | १५:५६ | धूम | तुला | ३०:४६ | ५:५८ | १८:२० | ३१ | म ४:८उ. ३१:५५या., नालामत्स्येन्द्रनाथरथयात्रा (नालायात्रा), | १७ पू. अ. बुध ०:३३ | | |
| १९ | वृ. | ४ | २५:०७ | १६:० | वि | १५:२० | १२:०४ | व | १२:०९ | कौ | १२:०८ | प्रबद्ध | १२:२६=६:३० | ३१:०० | ५:५७ | १८:२१ | १ | (एप्रिल ४ ता. ३०), ③ नाला मत्स्येन्द्रनाथस्नानं (नालान्धर्व), ④ | १७ उभायां बुधः १:२६ | | |
| २० | शु. | ५ | १९:१५ | १३:३७ | अनु | ११:१७ | १०:२६ | सि | ११:१७ | रा | ४६:२४ | रश्मि | वृश्चिक | ३१:०४ | ५:५५ | १८:२१ | २ | ⑤ धर्पनिवृत्तिः १३:३९, विश्व ज्योतिष महासंघ स्थापनादिवसः, | १७ रोहिण्यां ४ भौम-१५:५६ | | |
| २१ | श. | ६ | १३:४२ | ११:२३ | ज्ये | ७:३२ | ८:५३ | व | ४९:४७ | म | ४१:०५ | मुसल | ७:३२=८:५५ | ३१:०८ | ५:५४ | १८:२२ | ३ | म १३:४२उ. ४१:५५या., ⑥ भक्तपुर भैरवभद्रकाली रथयात्रा, | १८ रेवत्यासूर्यः १५:३९ | | |
| २२ | आ. | ७ | ८:४० | ९:२१ | मू | ४:१७ | ७:३६ | प | ४३:१५ | वा | ३६:२२ | सिद्धि | धनु | ३१:१३ | ५:५३ | १८:२२ | ४ | रविसप्तमीअष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, (दू. दू. च्याँ च्याँ), | २१ रेवत्यासूर्यः ०:३८ | | |
| २३ | सो. | ८ | ४:१९ | ७:३६ | पू | ४:१७ | ७:३६ | शि | ३७:२९ | तै | ३२:२७ | उत्पात | १६:१०=१२:२० | ३१:१७ | ५:५२ | १८:२३ | ५ | शीतलाष्टमी, वासेरा सौरात्राक्षसनामसंवत्सरप्रवेशः १९:३९, | २२ मृगे १ भौमः ४:४२ | | |
| २४ | मं. | ९ | ४:१९ | ७:३६ | अ | ४:१७ | ७:३६ | सि | ३२:१४ | व | २९:२८ | पद्म | मकर | ३१:२१ | ५:५१ | १८:२३ | ६ | म २९:२८उ. ५:८२१या., ⑦ वारुणीयोगः ५:७१उ., | २५ रेवत्यासूर्यः ९:५५ | | |
| २५ | बु. | १० | ४:१९ | ७:३६ | ध | ४:१७ | ७:३६ | सा | २८:०० | व | २७:३५ | मित्र | २९:१९=१७:३३ | ३१:२५ | ५:५० | १८:२४ | ७ | स्मार्तनां पापमोचनीएकादशीव्रतं, ध.प. प्रवृत्तिः २९:१९, | २६ रेवत्याशुकः ३:२३ | | |
| २६ | वृ. | ११ | ४:१९ | ७:३६ | शत | ६:०० | ७:३६ | शु | २४:४३ | कौ | २६:५४ | वज्र | कुम्भ | ३१:२९ | ५:४९ | १८:२४ | ८ | वैष्णवानां पापमोचनीएकादशीव्रतं, देवपत्तने देशोद्धारपूजा, ⑧ | २८ रेवत्यासूर्यः १९:२३ | | |
| २७ | शु. | १२ | ४:१९ | ७:३६ | शत | १:२९ | ६:२० | शु | २२:२६ | ग | २७:३० | सौम्य | ४:८२=१:२९ | ३१:३३ | ५:४८ | १८:२५ | ९ | म ५:८१६उ., प्रदोषव्रतं, वारुणीयोगः १:२९या., | २८ मृगे २ भौमः १६:५७ | | |
| २८ | श. | १३ | ४:१९ | ७:३६ | पू | ४:१५ | ७:२९ | बु | २१:१० | अ | २९:१२ | काल | मीन | ३१:३७ | ५:४७ | १८:२५ | १० | म २९:२२या., पिशाच चतुर्दशीव्रतं, पाशाच द्वेपूजा, ⑨ | वक्रमागदियान्तः | | |
| २९ | आ. | १४ | ४:१९ | ७:३६ | उ | ८:२९ | ९:०६ | तु | २०:४९ | च | ३२:२६ | स्थिर | मीन | ३१:४१ | ५:४६ | १८:२६ | ११ | दर्शभाद्रं, मिशीवानं, (अथवा घोडेजात्रा, भद्रकालीपीठलिङ्गोत्थानं, | मं. मा. उ., बु. | | |
| ३० | सो. | ३० | ४:१९ | ७:३६ | रे | १३:३९ | ११:०९ | कै | २१:१८ | कि | ३६:३९ | मातङ्ग | १३:३९=११:०९ | ३१:४५ | ५:४५ | १८:२६ | १२ | स्नानदानादौ सोमवती अमावास्या, (हलोवार्ते) ⑩ | मा.पू.अ.पू., वृ. मा. उ., शु. मा. अ.पू., श. मा. उ. | | |

पञ्चाङ्ग प्राप्ति का केही स्थानहरू
 धार्मिक पुस्तक पसल, दमौली,
 जय दुर्गे स्टेसनरी, कुश्मा, पर्वत,
 सरस्वती पुस्तक पसल, कुश्मा, पर्वत,
 मनस्ते बुक्स एण्ड स्टेसनर्स, कुश्मा,
 राधा स्टेसनरी दुर्लगाँडा, तनहुँ,
 लालचन्द्र राजेशचन्द्र राजभण्डारी, बाग्लुङ,
 वैशाली पुस्तक पसल, रिडी, गुल्मी,
 रेसुङ्गा पुस्तक पसल, बुटवल,
 दिव्यज्योति पुस्तक पसल, बुटवल,
 आशिष स्टेसनर्स, बुटवल,
 पुस्तक भवन, स्याङ्जा,
 मलेपति पुस्तक पसल, बाग्लुङ,

गण्डकी पुस्तक भण्डार, दमौली,
विद्यार्थी पुस्तक पसल, दमौली,
लक्ष्मीनारायण पुजा सामाग्री,
 योगीकुटी, बुटवल,
महालक्ष्मी पुजा सामाग्री,
 बुटवल, खैरती,
गंगासागर पुजा सामाग्री,
 तम्घास,
कक्षापति बुक्स एण्ड स्टेसनर्स,
 रिडी,
जगता बुक स्टल घोराही, राउ,
अक्षितदर्शन पुजा सामाग्री भण्डार,
 बर्दघाट-७, न.प.,
पसल पुस्तक पसल, डण्डा, न.प.

प्रतीक पुस्तक भण्डार, टीकापुर,
ज्योति बुक्स एण्ड स्टेसनर्स, टीकापुर,
चौलानी पुस्तक भण्डार, धनगढी,
नेमी ट्रेड सप्लायर्स, धनगढी,
प्रभात बुक्स एण्ड स्टेसनर्स बुटवल,
दीपशिखा स्टेसनरी सप्लायर बुटवल,
ओमिनेसेन्ट बुक्स एण्ड स्टेसनर्स,
 राममन्दिर, बुटवल,
योगेश कुमार, बुटवल,
लक्ष्मी पुस्तक पसल, जेसिसचोक, बुटवल,
वर्णा ट्रेड सेन्टर, राममन्दिर, बुटवल,
हिमालय बुक हाउस, मिलनचोक, बुटवल,

पापांशाः शनि:२, राहु:३-केतु:९, १७मं ४, १८सू ९,
 २१सू १०, २२मं ५, २५सू ११, २६सू १२-मं ६,
 राशिप्रवेशः १६व ११, २६शु १,

ठाकुरदीन नन्दकिशोर
(शाङ्खवी स्टोर्स) बुटवल,
पवन किराना भण्डार,
 बुटवल,

चैत्र १६ सोमे ४२१९
 सु. ११:१४:५९:२६ ५९:१९
 मं. ११:१४:५९:२६ ३६:६
 बु. ११:१४:५९:२६ १०:८:४२
 व. १०:१०:१० १२:१०
 शु. ११:१४:५९:२६ ७:४:४७
 श. ११:१४:५९:२६ ४:५:९
 स. ११:१४:५९:२६ ३:११

श्री सवत् २०७७ श्री शाके १९४३ ने. सं. १९४९ वैजशुक्लपक्षः (चौलाश्व) पा. कृ. (अप्रैल ४ सन् २०२१) उत्तरायण, वसन्तर्तु, राक्षसनामकः संवत्सरः

| ग. | बा. | ति. | घ.प. | इजेसम् | न. | घ.प. | इजेसम् | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगः | च.रा. | घ.प. | इजेसम् | दिनमान | सूर्योदय | सूर्यास्त | ता. |
|----|-----|-----|------|--------|----|------|--------|------|-------|----|-------|------|------------|-------|--------|--------|----------|-----------|-----|
| ३१ | मं | १ | ८५३ | ९.१७ | अ | १९३० | १३.३१ | वि | २२१२४ | बा | ४११२० | अमृत | मेष | ३१/४९ | ५.४४ | १८.२७ | १३ | | |
| १ | वृ | २ | १३५७ | ११.१७ | भ | २५५९ | १६.०६ | प्रो | २३५४ | ते | ४६३४ | काण | ४२३८=२२.४६ | ३१/४२ | ५.४३ | १८.२८ | १४ | | |



श्रीशक्र सत्र २०७७ को भर्ना खुल्यो !

अखिल भारतीय ज्योतिषमहासंघ दिल्लीको नेपाल शाखा, पोखरा ज्योतिष महाविद्यालयमा प्रोफेशनल ज्योतिष डिप्लोमा तहमा भर्ना खुल्यो !

१. जन्मकुण्डली लेखक, (पूर्ण) १००, उत्तिर्णाङ्क ९९, २ ज्योतिष भविष्यवक्ता, ३. हस्तज्योतिष भविष्यवक्ता, ४ राशिफल लेखक, ५ ज्योतिष प्रशिक्षक, ६ ज्योतिष पत्रकारिता, ७ मुहूर्त ज्योतिष विज्ञान, ८ ज्योतिष वास्तु विज्ञान, ९ रेडियो ज्योतिष पत्रकारिता, १० टेलिभिजन ज्योतिष पत्रकारिता, ११. अनलाइन ज्योतिष पत्रकारिता । भर्नाका लागि न्यूनतम योग्यता: १०+२ उत्तीर्ण उत्तरमध्यमा वा सो सरह ।

प्रत्येक तहको अवधि: एक महिना । पूर्णाङ्क १००- उत्तीर्णाङ्क ६० ।

नेपाल बाहेक जुन देशमा यो ज्योतिष व्यवसाय तालिम दिइनेछ साथि तोकिएको शुल्क त्यस देशको मुद्रामा नै बुझाउनु पर्नेछ । पत्राचार अथवा दूरशिक्षा संस्थागत रुपमा ज्योतिष व्यवसायी तालिममा सहभागी हुन चाहने आवेदकले साथि तोकिएको सम्पर्क केन्द्रमा स्वयं सम्पर्क गरी फर्म अथवा वेबसाइट वा इमेल jbweekly2055@gmail.com मार्फत प्रवेश फर्म भिकाई सो माध्यमबाट नै पठाउन सकिने छ । तालिम शुल्क नगदमात्र स्वीकारिने छ र जसका लागि भिडियो कन्फरेन्स, मेसेन्जर अनलाइन माध्यमबाट पनि पाठ्यक्रम पूरा गर्न सकिने छ ।

संस्थापक अध्यक्ष/पिन्सिपल

प्रा. डा. बलराम उपाध्याय रेग्मी

मोबाइल: +९७७-९८५६०२०९१४, ९८५६०३०९१४, ०६९-५३२५३५, ०६९-५४०३४७

पोखरा ज्योतिष महाविद्यालय, पो.ब.नं. २०७, पोखरा-२, ज्योतिष मेडियाशाम, कास्की, नेपाल

पञ्चाङ्गका प्राप्ति स्थानहरू
नेपाल बुक्स एण्ड स्टेशनर्स बुटवल,
नटराज स्टेशनर्स, राममन्दिर, बुटवल,
हरेकृष्ण पूजा सामग्री अण्डार, बुटवल,
लुम्बिनी पूजा सामग्री अण्डार, बुटवल,
नेरिट स्टेशनर्स, बुटवल,
ठाकुरदीन नन्दकिशोर (सागर स्टोर्स) बुटवल,
वन्दना बुक्स एण्ड स्टेशनर्स, बुटवल,
सर्वज्ञ बुक्स एण्ड स्टेशनर्स, औरहवा,
गौरी पुस्तक पसल, सुर्खेत
हाको पुस्तक पसल, सुर्खेत
गौरी पुस्तक पसल, तुल्सीपुर, बाइ
श्रेष्ठ न्यून एजेन्सी, तानसेन, पाल्पा,
भारतमा पञ्चाङ्ग पास्तिका स्थानहरू

बाबु माधवप्रसाद शर्मा, दुधविनायक, बाराणसी,
सुब्बा टेम्पलाथ केदारनाथ, रामकटोरा, बाराणसी

मुकेश प्रकाशन, बाराणसी,
झुवाली बुक स्टल, बडाबजार, शिलाङ
हिमालय बुक स्टल, बडाबजार, शिलाङ

भारत पब्लिशर हाउस, सिलिगुडी, प.बंगाल
रेन बुक स्टोर चारहजारे, मनिपुर
अवल्ली सुवेदी, चारहजारे, मनिपुर

मित्र पुस्तक अण्डार, कालापहाड, मनिपुर
शान्ति पुस्तक पसल,
मोरेह गेट नं.२, मनिपुर

देवीप्रसाद रिजाल, गुवाहटी,
कृष्णप्रसाद शर्मा, गुवाहटी, असोम
पुष्पा न्युजिक सेन्टर
(एन वि खत्री) नई दिल्ली

हिमाल ५९ पञ्चाङ्ग

व्रतपर्व तथा भद्रादि विवरणम् (घट्यादौ)

चन्द्रोदयः वत्सरारम्भः, तैलाभ्यङ्ग, निम्बपत्रप्राशन, चोभार ९

वैशाखसंकान्तिः, तवकारम्भः, भ.पु.विश्वध्वजपातनं, (खण्डिसन्तु) ११

१ चम्पादेवीमेला, दोखासपनतीर्थ मेला,

१ आदिनाथस्नानं, (चोवाहान्धव), भद्रकालीपीठलिङ्गपातनं, वैतडी गजुरवनारसी मन्दिरे कोटीहोम मेलारम्भः, मेघेः कः ५८१४, भ.पु.विश्वध्वजोत्थानम्,

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा वासन्तिक नव- रात्र तथा चान्द्र वर्षारम्भको दिन हो, यस दिनमा चन्दनसहित निम्बपत्र (निमको पात) खानाले वर्षभर रोग लाग्दैनो निमको पात अत्यन्त राम्रो प्राकृतिक विषाणुरोधी हो । मन्त्रः सचन्दनामि पत्राणि निम्बस्य प्रपिवाभ्यहम् । संवत्सरमारोग्यं भूयान्निम्बस्य अक्षणात् ॥

धर्म-संस्कृतिसम्बन्धित निर्णय गर्न र धार्मिक जागरणको अभियान चलाउनलाई सदैव सम्झौ ।

राष्ट्रिय धर्मसभा, नेपाल

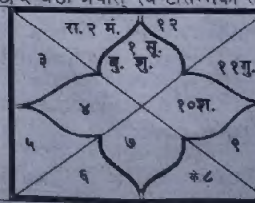
अनामनगर, काठमाण्डौ, फोन: ०१-४२९८३०९

पञ्चाङ्ग परिचय प्रकाशित छ ।

ब्रह्ममुहूर्त(उषाकाल):- सूर्योदयभन्दा ५ घडी अघात २ घण्टा पहिलाको समय अस्त्रोदयकाल:- सूर्योदयभन्दा ३ घडी अघात १ घण्टा १२ मिनेट पहिलाको समय ।

सन्ध्याकाल:- सूर्यास्तपछि ३ घडी अघात १ घण्टा १२ मिनेटसम्मको समय । प्रदोषकाल:- सूर्यास्तपछि ५ घडी अघात २ घण्टासम्मको समय ।

सबै प्रकारका धार्मिक पूजामा चाहिने सामग्रीहरू, मुर्तिहरू, पात्रो, जनै आदि सुपथमृत्युमा चाहिएमा दुर्गापुस्तक तथा पूजन सामग्री केन्द्र, इटहरी, फोन: ९८१२३७८२९९



| १ | चैत्र ३१ भौम | ५८१५४ |
|-----|--------------|-------|
| सु. | ०१/०१/० | ५८१५३ |
| मं. | १/२८/४७३९ | ३६३२ |
| बु. | ११/२९/४७३५ | १११३ |
| वृ. | १०/३१/२९ | १०४३ |
| शु. | ०६/१७/२९ | ७४२५ |
| श. | ९/१५/२८३५ | ३४२ |
| रा. | १/१८/३५९ | ३५९ |